



# युग-देवता

[ मौलिक उपन्यास ]

उप-पाठकार

यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'

राजहंस प्रकाशन

सवर बाजार, दिल्ली ६

प्रकाशक—

राजहंस प्रकाशन,  
सदर बाजार रुई मण्डी  
दिल्ली ६ ।

• • •  
सवाधिकार सुरक्षित

• • •  
मूल्य ४)

• • •

मुद्रक—

भमरचन्द्र जन  
राजहंस प्रस,  
सदर बाजार रुई मण्डी  
दिल्ली ६ ।

## मैं हटना ही कहूँगा—

यग वेदता मेरा हर्ष उपघात है ।

मेरे रचित अथ उपन्यासों का जो स्वागत हिन्दी के पाठकों ने किया उस से मुझ काफी प्रोत्साहन मिला और मेरे सन्यासी और सुन्वरी के गुजराती और मराठी अनुवाद न तथा नया इन्सान के गुजराती अनुवाद ने मुझ भविष्य में और अधिक सजग रहने की शिक्षा दी । फिर भी मैं लोकमान्य तिलक के इन शब्दों पर विश्वास करता हूँ कि मनुष्य को अपनी प्रगति से कभी सन्तोष नहीं करना चाहिए । इसलिए मैं भी भारती का शृंगार और भी यत्न से करने को कटिबद्ध हूँ ।

इस पुस्तक के प्रकाशन पर मैं बोकानेर के प्रतिष्ठित विचारक डा० दगनलाल मोहता का अत्यन्त कृतज्ञ हूँ, और आभारी हूँ—राजहंस के सम्पादक श्री विश्वमित्र शर्मा व प्रकाशक श्री सुमुद्दिनाय जन का, जिन के सद्प्रयत्नों से यह कृति प्रायः के सम्मुख तुरन्त आ गई ।

पाठक मेरे सचे आलोचक हूँ । उनकी राय की प्रतीक्षा रहेंगे ।

साल की होली,  
बोकानेर ( राजस्थान )

यादवन्द्र शर्मा 'चंद्र'

प्रकाशक—

राजहंस प्रकाशन,  
सदर बाजार रुई मण्डी  
दिल्ली ६ ।

• • •

संवाधिकार सुरक्षित

• • •

मूल्य ४)

• • •

मुद्रक—

धमरचन्द्र जैन  
राजहंस प्रेस,  
सदर बाजार, रुई मण्डी  
दिल्ली ६ ।

## मैं इतना ही कहूँगा—

यग देवता मेरा हर्षा उपमास है ।

मेरे रचित अग्य उपमासों का जो स्वागत हिन्दी के पाठकों ने किया, उस से मुझ काफी प्रोत्साहन मिला और मेरे सपनासों और सुदरी के गुजराती और मराठी अनुवाद न तथा नया इन्सान के गुजराती अनुवाद न मुझ भविष्य में और अधिक सजग रहन की गिषा बी । फिर भी मैं लाक्ष्माय तिलक के इन गदर्श पर विश्वास करता हू कि मनुष्य को अपनी प्रगति से कभी सन्तोष नहीं करना चाहिए । इसलिए मैं भी भारती का शु गार और भी यहन से करने को कटिबद्ध हूँ ।

इस पुस्तक के प्रकाशन पर मैं बीकानेर के प्रसिद्ध विचारक डा० धननखाल मोहता का आयन्त कृतज्ञ हूँ, और आभारी हूँ—राजहंस के सम्पादक श्री विन्ध्यमित्र शर्मा व प्रकाशक श्री सुबुद्धिनाथ जन का, जिन व सदप्रयत्नों से यह कृति छाप के सम्पुल कुरन्त वा गई ।

पाठक मेरे सच्चे आलोचक हूँ । उनकी राय को प्रतीसा करूँगा ।

सासे की दास्ती,  
बीकानेर ( राजस्थान )

यादवद्र शर्मा 'चन्द्र'



## प्रकाशकीय

थी घट्ट हिन्दी के उन घोड़े से तन्त्र लेखका म सं हैं जिनको इतनी छाटी प्राप्ति में प्राय भाषा भाषी भारतीयो ने भी अपनाया । 'युग वेवता' मात्र के युग के तथाकथित प्रहमय नेता पर कठोर व्यंग्य है— जो अपने को जनता का सेवक कहने का दम भरता है या दम्भ रचता है । भागा है 'युग-वेवता' को स्थापना से ऐसे लोगों की प्राण खुनगी— जो जनता के सेवक होने के बावजूद उसकी ओर से प्राण मुँदे हैं ।

विश्वमित्र शर्मा

सम्पादक

राजहंस प्रकाशन





## प्रकाशकीय

श्री चन्द्र' हिन्दी के उन शोभे से तम्रण ललका में स हैं जिनको इतनी छोटी आयु में अन्य भाषा भाषी भारतीयों ने भी अपनाया । 'युग देवता' आज के युग के उदात्तित महान्य नेता पर बटोर ध्यय है— जो अपने को जनता का सेवक कहने का दम भरता है या दम्भ रचता है । आज है 'युग-देवता' की स्थापना से ऐसे लोगों की शक्ति पुलगी— जो जनता के सेवक होने के बावजूद उसकी ओर से शक्ति मुदे हैं ।

विश्वमित्र रानी

सम्पादक

राजहंस प्रकाशन



आवरणीय श्री क्षेमचन्द्र 'सुमन'  
को सप्रेम—



‘अरविद !’

सौम्य भरा स्वर अरविद के कानों से टकराया । उसने सफरान नशों से पीछे की ओर गदन घमा कर देखा । उसका बड़ा भाई चाँद झुंझलाया हुआ उसकी ओर जल्दी जल्दी आ रहा था ।

‘अरविद यह तेरी भाभी आखिर मुझसे चाहती क्या है ?’ चाँद ने अपने अन्तराल की सारी ध्वजा अपने स्वर में उड़ल दी थी । उसकी आँखें सजल हो उठी थीं जो अन्त में धीरे धीरे भङ्ग भी गईं ।

अरविद अपने बड़े भाई को कुछ देर तक स्नेह भरी दृष्टि से देखता रहा । इस प्रकार देखना चाँद के लिए और ही असह्य हो गया । अपने स्वर को तेज करता हुआ वह बोला ‘तुम इस तरह क्यों देख रहे हो ? क्या मैं बदल गया हूँ ? बोलते क्यों नहीं ?’

‘क्या कहा ?’ चाँद पर जले वक्ष्यपान हो गया । फ़ीप से उसका सारा बदन काँपन लगा । आँखें साम्म हो उठीं । बड़ी मन्त्रित्त से अपने हृदय के आवेग को दबाकर वह बोला ‘यह असम्भव है विल्कुल असम्भव !’

असम्भव नहीं है भया । अरविद के अपरों पर मूखी स्मित की रेतार्ये होइ गई । उसने अपनी ध्वजा को दयान का बहुत यत्न किया लेकिन वह अब नहीं सकी आँखों में सजलता बन कर घमक उठी ।

तुम भी मुझ सतान लगे चाँद न तड़प कर कहा 'यदि तुम्हें सतान में मन्दा आता है तो मैं तुम्हें सतान का अधिकार भी देता हूँ। पर एक बात याद रखना तुम घर छोड़ कर नहीं जा सकते। यह विस्तृत ही असम्भव है।"

अरविंद भाई के अगाध स्नह से शब्दातिरेक हो गया। विह्वल स्वर में बोला, 'भैया तुम्हें मैं बहुत कष्ट दिये हैं जीवन भर तुम्हें तेली का बल समझ कर अपना पोषण करता रहा हूँ लेकिन अब मेरा अंत करण इसे स्वीकार नहीं कर सकता कि मैं तुम्हारे टकड़ों पर जीऊँ।"

चाँद क तन पर किसी न तपी गलावा छिपका दी हो इस तरह चिह्नक कर बोला यदि किसी के कसूर्य को तुम इतनी हेध दृष्टि से देखते हो तब मैं कहूँगा कि तुममें साधारण ज्ञान और गिह्यता भी नहीं है। यदि तुम मेरी प्रम को रोटियों को टकड़ो की सजा से पुकारते हो तब मैं समझूँगा कि तुमसे बड़ा मेरा अपमान करन वाला कवाचित्त यहाँ कोई नहीं है।"

अरविंद क्षण भर के निथ हतप्रभ हो गया। बाद में सोचन सगा कि भया मेरी साधारण बात को इतनी गभीरता से क्यों से रहे हैं? मैं न कोई अमर्यादित बात नहीं कही। दूसरों के सहारे पलन वाला समय व्यथित और क्या कह सकता है अपन दाता की रोटियों को? टकड़ ही तो फिर मैं कौन सा अपराध कर दिया? उसकी भीहें तनिज बक्र हो गई। लसाट पर सलवटें पड कर स्थिर हो गईं। फिर भी चाँद के चेहरे पर जो कदना का सागर सहरा रहा था उससे वह द्रवित हो उठा। अपने हृदयोद्गारों को रोकता हुआ वह संयत स्वर में बोला भया यदि मैंने कोई अनुचित बात कह दी हो तो क्षमा करना।

'क्षमा? क्या कहते हो अरविंद मैं तुम्हें बट की तरह पाला है न! यदि ब्याह के एक बध के भीतर मेरे भी बच्चा हो जाता तो ठीक तुम्हारी हा उम्र का होता। पर घसो जाना ला सो।

'मैं क्षाना नहीं लाऊँगा। उसन हृदता से कहा।

‘क्यों?’

‘भया मैं कह दिया न, अब मुझ जिवन्गी में कुछ करना है।  
अकम्प्यता भी कोई जीवन है? ठीक है, हम बहुत दक्षिण हैं साधनहीन  
हैं और हमें किसी सुयोग्य व्यक्ति का समर्थन भी प्राप्त नहीं है लेकिन  
इसका मतलब यह तो नहीं है कि हम कुछ करें ही नहीं। पुण्याय करना  
व्यक्ति का धर्म है। इस समस्त विश्व में सब पदाय हैं लेकिन जो कम  
हीन होता है, उसे कुछ भी नहीं मिलता।’

श्रीद को अरविद की बात से तनिक भी सतौष नहीं हुआ। वह  
विगलित स्वर में बोला तुम कदाचित अपने भया की धीरज बधा रहे  
हो। सोच रहे हो कि भया अबोध बालक है मेरे सुन्दर गद्द जाल में  
उलझ जायगा भटक जायगा कह देगा कि अकृपा अरविद जसी तुम्हारी  
मर्जी लेकिन मैं ऐसा नहीं कह सकता। श्रीद बहुत ही गभीर हो गया।  
उसकी आँखों में उसके अन्तराल की अवरितीम घेदना झलक उठी।

अरविद, भात्मा क सत्य को भ्रूटलाया नहीं जा सकता। रक्त प्रम  
रक्त-मय और रक्त-व्यथा का विस्मृति इतनी सहन धोड़ ही है? इतनी  
सहज होती तो कुछक्षत्र में पिगाल जन-समूह क मध्य अजन निबल नहीं  
होता? वह घनयबाण त्याग कर युग-नता धी कृपण को यह नहीं  
कहता कि य मेरे अपन हैं। यह यह अपनापन ही तो ‘प्रभ है। यदि प्रभ  
क हृदय को विदीण करके जाना चाहते हो तो जाओ। रही तुम्हारी  
भाभी की बात, कभी-कभी अर्थाभाव क कारण वह अपन मस्तिष्क का  
सतुलन खो देती है उस समय उसकी नारी उसकी भात्मा क प्रजाण स  
हृत्ता जाती है और बोध का अदकार बढ़ता जाता है। सब वह अधीर  
हो जाती है ऊन-अबल बक देती है। पर उसका मन बड़ा ही निमल  
है। अन्तम में पाप नहीं रखती।

अरविद निःस्तर रहा।

तभी भीतर से अरविद की भाभी साना की बकण आवाज सुनाई  
पड़ी। वह अपनी जाठ गाल की सड़की निमला को डाँट रही थी तू मर



जाती तो मुझे सब सुख मिल जाने और तेरे पिता जी को स्वर्ग ! एर  
 तो घीस रुपट्टी खाते हैं उसमें तुम्हें बचीड़ियाँ खिलाऊँ या सुख टुकड़े ।  
 तेरा धाधा तो एक पसा बमाता नहीं । दोनों धर खाने-पीने पर पाँच  
 पसार कर पड़ा रहता है ।

अरविंद के लिये आग सुनना असह्य हो उठा । वह तेज स्वर में  
 बोला मैं जाता हूँ भया मुझे मत रोको । मैं आवमी हूँ कुत्ता नहीं ।'

चाँद अरविंद के पाँवों की मिटती हुई आँसु की मुनता रहा ।  
 उसकी आँसुओं में मोतियों के सहज मधु छलछला भाव । उसे जैसे महसूस  
 हो रहा था कि उसके हृदय के टुकड़े हो रहे हैं ।

चाँद पलंग पर अपना सा पड़ गया ।

निमला रोती रोती आकर चाँद के पास बठ गई । चाँद ने उस ओर  
 सनिक भी ध्यान नहीं दिया । सिसकियाँ जो उसे सुनाने पड़ती थीं उसे  
 लगता था कि ये सिसकियाँ निम्नू की - ही अरविंद की हैं जो उसके  
 साक्ष चाहने पर भी रुक नहीं पा रही हैं ।

सोना अब भी भीतर बड़बड़ा रही थी ।

जीर्ण-शील घर । कब और किस भाग्यशास्त्री पूजक न इसका निर्माण  
 कराया था इससे भी सभी अपरिचित-सोड़दार सूर्य के उस्ताप से घचित  
 चन्द्र-ज्योत्स्ना न जिसके भीतरी भाग के दशन भी नहीं बिय हों ? एसा  
 भूतहा-सा वह घर था ।

उस घर के दो हकदार थे चाँद और अरविंद ।

चाँद साधारण बलक और अरविंद बकार प्रजुण्ट । सोना अरुद्धे  
 खाते-पीते घर की लड़की । यहाँ तपी बल कर वह अपने को मधुर नहीं  
 रख सकी । बिड़बिड़ाने उसकी हर घात में आ गया । यहाँ तक कि  
 उसके प्रेम प्रवर्णन में भी सभी को कटाक्ष मखर आता था ।

उसका बड़बड़ाना अब भी जारी था । अब चाँद से नहीं रहा गया ।  
 अधुओं को पोंछते हुए वह सोना के समीप आया । बत की तरह अचल  
 पड़ा हो गया । सोना उसकी इस मद्रा से काँप उठी । उसका रोम रोम

में भय की लहर का संचार हो गया। वह अपनी इस आधुनता की सभाल नहीं पाई थी कि चाँद घृणा से नयन तरेरत हुए बोला, अब तो तुम बूब और घी के कटोरे भर भर कर पीओगी? अरविंद सदा के लिए घना गया है। वह निक्कमा, हरामखोर, कपूत, कमीना कहते करते चीन् रो पड़ा।

सोना उसके बदन से अभिभूत हो उठी। उस सांत्वना देने के टपाल से उसके समीप आकर बोली, "आपन उन्हें रोका क्यों नहीं? मैं तो यों ही बकनी रहती हूँ, मेरा तो स्वभाव ही पड़ गया है। क्या करूँ कभी-कभी किसी अभाव की भयकरता मेरे लिए असह्य बन जाती है तब मैं आवेग में आ जाती हूँ, आवेग मुझे कट्टु बना देता है और कट्टुता में कभी कभी मैं घर ढाहने वाली बातें भी कह जाती हूँ।

चाँद ने बड़ी कठिनता से कहा, 'घर टूट गया है सोना। अपनी माँ की आँखों के दो तारों पे हम दोनों, आज एक तारा टूट गया और टूटा हुआ तारा या तो निःसंज हो जाता है अथवा प्रखर प्रकाश पुज।

'मैं जाती हूँ और अरविंद भया की मना कर ले आती हूँ सेरिन ।' वह कुछ कहती-कहती रुक गई। उसके मकन में चाँद को एक भाभी के उस विद्रुप का भास हुआ जो एक यकार देवर के प्रति प्रकट होता है। वह जल भुन गया। बोला सोना आंतरिक प्रयत्नियों के सघष में तुम पराजित हो जाओगी। तुम्हारा अन्तर तुम्हारी घाण्टी का सहयोग नहीं करेगा क्यों कि तुम यह चाहती हो नहीं कि यह यहाँ रहे।'

क्यों? वह चीक पड़ी।

"अपन पति पर सम्पूर्ण अधिकार की भावना स्नह की मिटाती जानी है। तुम नहीं चाहती कि मेरा एक पसा भी अरविंद अपन प्रयोजन में ले।

यात कइवी थी फिर भी सोना नाति बनी रही। नन ही मन सोचन लगी कि कसा है उसका पति? जो अपनी पत्नी पर कम और भाई पर अधिक प्यार उइसना है। जिसकी बच्चा स्कूल में दा भान नहीं लब कर

सकती लेकिन जिसका भाई धावारागदों में एक रुपया लूच कर सकता है।  
 ऐसा क्यों? खून का रिश्ता जो ठहरा। तो क्या निम्न की रचना भेरे  
 रक्त स नहीं हुई है? फिर मैं क्यों अपनी बटी की इच्छामों का अनुचित  
 बमन देख? एक अपनपन की चरम सीमा से उत्पन्न डाह में वह खन  
 उठी। उसके मन में सघर्ष की उग्र भावना न सुरंग जन्म लिया लेकिन  
 तनिक अपन पति की भावना का ख्याल करके वह उस पल गाँत रही।  
 उसे गाँत देखकर घाँव भीतर की ओर जाता हुआ बड़बड़ान लगा, यह  
 घर एक दिन इमसान हो जायगा भूत प्रतों का क्रीड़ास्थल।

पति के एकांगी पक्ष से सोना क्षणिक चिंतित हुई सत्यचात् आहत  
 साँपिन की तरह फूत्कारती हुई बोली, जो इमसान होगा वह किसी के  
 घके नहीं रहेगा पर इमसान होने के बाद आपका कनेजा तो ठग हो  
 जायगा। मैं अपने पीहर से कितन बच और पसे मगाऊँगी?

मनष्य कितना निबल और निस्सहाय क्यों न हो लेकिन कुछ बातें  
 ऐसी होती हैं जो सीमा के बाहर की होती हैं। जिन्हें पुरुष का स्या  
 भिमान सुन कर तड़प उठता है गज उठता है। सोना सीमाहीन होती  
 जा रही थी। वह उत्पन्न स्वर में साल आँसू करके बोली मैंने तो  
 आपको तीन हजार रुपय साकर दे दिये आपको सूट बनवा दिया आपका  
 लिय।

खामोश मैं तुम लोगों के लिये क्या नहीं किया? रात दिन का  
 भद न समझ कर बचल धनोपार्जन करता आ रहा हूँ। कठोर धम के  
 घाव पाय भर दूष भी नसीब नहीं होता इससे बढ़ कर एक व्यक्ति के  
 लिये क्या दुःख हो सकता है?"

'दूष नसीब कैसे हो कम जो आपन अच्छ नहीं किया है। अरविद  
 अरविद क्या किया अरविद न आपके लिये? जब दो कौड़ी कमान  
 का वक्त माया तो घर से चलता बना। सोचा होगा कि कहीं नौकरी कर  
 के एक बहोंगा। निम्नू क पित्तजी आप बड़ भोने हैं। बुनियादारी जरा  
 भी नहीं जानते। प्यार और स्वाय के अंतर को नहीं पहचानते। आप

कबस जानते हैं भाई पर सबस्य उत्सव कर देना प्राण तक भी । और भाई आपको ठग कर चला गया ।'

चाँद ने लम्बे स्वर में उत्तर दिया, 'यह क्रोध से प्रस्फुटित विद्वय के उदगार हैं सोना । इसमें विवेक का बड़ा अभाव है । अवीरता में चाणी भी सत्य का आँचल छोड़ देती है ! मुझे स्वाध न अधा कर दिया है लेकिन जीतता वही है जो ठगता है खोता है देता है ।

"तुम महात्मा बन सकते हो पर मैं नहीं बन सकती । मुझ तो अपना और अपनी बच्ची का सुख चाहिये, सुख" कहती-कहती सोना हवा की तरह वहाँ से हट गई ।

\*

\*

\*

२

प्रायः ऐसा होता था कि सोना अनगल प्रलाप कर दिया करती थी और चाँद एक कान से सुनता था और दूसरे कान से निकाल देता था । लेकिन कभी-कभी वही प्रलाप प्रतिकूल वातावरण पाकर सघष का रूप धारण कर लेता था । यहाँ बात आज हो गई थी । चाँद पूरी दोपहर सोना से एक शब्द भी नहीं बोला, हालाँकि उसने कई बार बिनती की । वह समझ नहीं सरी, आखिर आज उसने ऐसी कौन सी विषय तथा जघन्य बात कह बी जिससे वे रुठ गए और अरविद बाबू घर छोड़ कर चले गए । वह तो यवा-बदा ऐसा कहती ही आई है ।

सहसा सोना के मस्तिष्क में एक विचार विजली की तरह लक्ष्य कर चला गया । वह आन्तरिक घृणा और अपमान से जल उठी । अपने आपको डाँट कर कहने लगी कि वह खुद भावान और भोली है यर्ना इस घर में एसा कौन अकड़ वाला है जो अभिमान से उसके सम्मुख मस्तक ऊधा कर सके । सभी उसका पित धन पर आनन्द करने वाले

हैं। आज जब उसने अपना पिता से छपय मगाने का वचन कर दिया तब सभी उस पर रग जमान लग उससे उलझी-उलझी बातें करने लग, यहाँ तक कि निम्मू के पिताजी भी। वह विशोभ के कमरे में उष हो उठी। वह विद्रोह की भावना लिए उठी जहाँ चाँद ध्या से भाराकाँता होकर सत्रित भवस्या में सोया हुआ था वहाँ उसने खड़ी होकर एक हुकार भरी और अपने सोन के कमरे में आकर खड़ी रानी की भाँति आगुतावस्था में भी नम्र बह करके सो गई।

सध्या के अँचल में घघा गुलाल क्षितिज का स्पण कर समुति पर बिलर पड़ा। प्रकृति की इस अनुपम छटा का यह दृश्य बड़ा ही मनोरम प्रतीत हो रहा था। अरुणिमा ही अरुणिमा स्वणिम निभर सौन्दय का स्रोत एक अलौकिक आभा।

निम्मू छत पर बठी बठी इस आभा का रस ले रही थी। उसकी स्थिति बड़ी विचित्र थी। चाचा घर छोड़ कर चले गए पिताजी दिन भर से सोय हुए हैं माँ सोती-सोती बडबड़ा रही है क्या तमाशा है ? इसे उसकी सरस बुद्धि और मझ-स्वभाव समझन में सयया असमथ रहा। फिर भी उसने साहस करके माँ के कमरे में प्रवेश किया। सोना अब भी चादर से अपना तमाम शरीर ढक कर सोन का बहाना कर रही थी। निम्मू न गकित होकर पूछा 'माँ, माँ चाचाजी कहाँ हैं ?'

सोना भड़क कर बोली 'जहनुम में।'

निम्मू भय से काँप कर रह गई।

निम्मू वहाँ से उठ कर चापस चाँद के पास आ गई। चाँद भी सोन का बहाना किए हुए था। निम्मू ने और अधिक शक्ति होकर पूछा 'बाबूजी यह जहनुम क्या होता है ?'

चाँद ने निम्मू की ओर प्रश्न भरी दृष्टि से देखा मुस्कराया और हँस कर बोला 'तू क्यों पूछती है ?'

माँ कहती है कि चाचाजी जहनुम में चले गए।'

चाँद आगबबूला हो उठा। बिगड़ कर बोला 'जहनुम तेरा चाचा

नहीं, तेरी माँ जायगी।”

“ओ जी मेरा नाम लिया तो ठीक नहीं रहेगा” कमरे में प्रवेश करती हुई सोना गज कर बोली।

‘क्या कर लोगो?’

!“सोना तटप कर रह गई।

पीटोगी?” चाँद के छोटों पर अनायास ही हँसी आ गई। वह हसता हुआ निम्मू से बोला, भाग कर मेरे वाली छड़ी तो उठा ला, तेरी माँ आज मुझ पीटगी।’

निम्मू को भी मजाक सूझा। वह भाग कर छड़ी उठा लाई। चाँद न बड़ी मुश्किल से अपनी हँसी को दबा कर अपन हाथ की छड़ी सोना के हाथ में धमा दी। सोना अस्त हो उठी। ध्यग का प्रहार उसको अवगत कर गया। छड़ी को निम्मू की ओर उठाती हुई तटप कर बोली ‘मैं तेरी हड्डी-पसली एक कर दूगी, ठहर ।” और देखते-देखते निम्मू नौ-दो ग्यारह हो गई।

‘सोना!’ यकायक चाँद गम्भीर हो गया। उसने उसका पल्लू पकड़ लिया ‘यह ध्वज और गद्दी आवतों को छोड़ कर मेरी बात सुनो मैं अरविंद को मना कर साता हूँ और तुम खाना बना कर रखो।’

मुझ से खाना नहीं बनगा। सोना यह कह कर हठात चाँद की आँखों में ओझल हो गई। उसके कदम रसोईघर की ओर बढ़ रहे थे।

रसोईघर में धूँहा जलान के बाद सोना का गुस्ता बिलकुल ठंडा हो गया और वह बिना से व्यथित हो उठी। उसे महसूस हो रहा था कि उसने अरविंद पर जो व्यग्य कस है वह तीर स कम नहीं है बिलकुल ही शिष्टता और इन्सानियत के विरुद्ध है।

एक बार तो उसने सहज आत्मियता का भी त्याग करने यहाँ तक कह दिया था कि अब इस घर में खाना खाने तो बुद्ध का ।

सोना न अपने मुंह के आग हाथ रल लिया। वह विचलित हो उठी।  
मस्तिष्क में संघर्ष का तूफान-सा उठन लगा। कही हुई बातें बार-बार  
उसे याद आन लगीं।

अरविन्द जी ! बड़ भाई ने बी० ए० पास करवा लिया अब कुछ  
आप भी करके दिखाइय न ?

व्यग तीला था जाहूत करने वाला। अरविन्द से नहीं रहा गया।  
कठोर एवं क्रुद्ध स्वर में बोला जमाना आने दो भामा आकाश के तारे  
भी तोड़कर ले आऊंगा। किसी भी तरह महान् धन कर दिखा दूंगा।

हमारे मरने क बाद ?' भयानक प्रश्न।

नहीं भामो, तू तो मेरी माँ के समान है। तुझे मैं सुल देकर ही  
मरूंगा। आज प्रतिज्ञा करता हू तुम्हारे सामन कि अपन मन का  
इन्तान मार करने भी कुछ बनूंगा। उसका कठ भर आया। आलें  
सजस हो उठीं। इस सत्तार में सभी बचन अथ द्वारा बेल जा रहे हैं।  
तुम्हें पसा चाहिए, शची को पसा चाहिए मित्र को पसा चाहिए पसा  
पसा पसा ! भामो, बिना पसे क जीवन व्यय सासला ध्यय और  
प्रीत ध्यय।'

फिर यह जादुई करिदमा जल्दी क्यों नहीं बिपला बेते ? आपको  
रोकता कौन है ?

सब कहती हो भामो, मेरी माँ यदि जीवित होती तो मुझ जरूर  
रोकती। मेरी मजबूरियों और बहारी पर रहम लाकर सीन से चिपका  
लेती पर गीले यस्त्र पर पुव सोकर मरू सुल पर मुलाने वाली मेरी  
माँ कहीं ? अरविन्द की आँखा में अश्रु छनछला थाए।

सोना बिरुंरु पड़ी। निम्नू दोड़ी-दोड़ी भाई।

'बया हुआ माँ ?' वह घघरा उठी थी।

'जा अरविन्द को बुला कर ले आ !

'पिताजी गये हुए हैं।

'नहीं तू भी जा ? मैं उसक बिना नहीं रह सकती। वह मेरा बच्चा

है। हाथ रो यह मैंने, क्या कर दिया ?'

तब सोना को जिन्दगी व अभाव कष्ट और पीड़ाए सभी की सभी काटन बौड़ पड़े।

और वह मानसिक-सघष में डूब गई।

\*

\*

\*

३

अरबिन्द दिन भर गहर की सड़कों, बागीचों एव होटलों में घूमता रहा पर वह कुछ निराश नहीं कर सका कि यह कहाँ जाय। यसे उसका कई ऐसे मित्र थे जिन्होंने मित्रता की गोली बघारते हुए उसे कई बार कहा था कि समय पडन पर तुम्हें पता चलेगा कि हम तुम्हारे लिए क्या कर सकते हैं ? और आज इस 'क्या का स्पष्टीकरण करन का समय आ गया था। वह इस क्या में छिपे अपनत्व की अतल गहराई की चाह से निज होना चाहता था। अतः वह दिनग के घर चला।

दिनग का नाम यसे बमझीप्रसाद था। लेकिन पन्द्रह अगस्त १९४७ के पश्चात भारतवष जसे ही आजाद हुआ, परतंत्रता की श्रृंखलाए जसे ही गड-खड हूड, यसे ही धनी बाप व बन् ने अपना रूप बदला। उस समय तक बन् हार्न स्कूल की परीक्षा पास कर चुका था, अतः अपन ही मोहल्ले में उसन स्वतंत्रता समारोह का आयोजन किया और उसमें उसन कविता पाठ किया था।

सोर्गो न सालियाँ बनाइ। कवि को प्रोत्साहन मिला। चाहे भाव न हो चाहे भावा पर श्रोताओं नअत्यन्त धम स काम लिया पर उने निरत्साहित न करके उत्साहित ही किया। फलस्वरूप आज माँ भारती की एक और थरद (।) पुत्र मिल गया। प्रतिभा विकसित होती गई और बमझीप्रसाद न सुरन्त एव मासिक पत्र निकाला। इस मासिक पत्र का नाम था दिनग और सम्पादक व-बमझी प्रसाद दिनग'।



पिना जी मुझसे सख्त नाराज हैं। इस पत्रकारिता में सिवाय घाट के फायदे का नाम नहीं। फिर भी तुम भरोसा रखो कि मैं तुम्हारी पूरी सहायता करूँगा। तुम मुझसे दो दिन बाद मिल लेना।'

और दो दिन मैं कहाँ जाऊँगा? अरविंद न सन्निक षट्ट होकर कहा।

घरन घर।

मेरा भी कोई घर है?' अरविंद का गला भर आया अब मैं उस घर में तभी पाँव रख सकता हूँ जब मैं समय हो जाऊँ। मैं कुछ उपार्जन करने लूँ। दिनग वह आदमी कितना धीन होता है जो दूसरों के टुकड़ों पर चलता है। भया तुम मुझे कुछ काम दे दो। मैं तुम्हारा जिन्दगी भर अहसान नहीं भूलूँगा।

बमड़ी न मन हो मन सोचा कि गले में फाँसी का कवा लग ही गया। अतः उसे आन्वासन देता हुआ अत्यन्त मधुर स्वर में बोला 'अरविंद! कम से कम दो दिन तक तो तुम्हें कहीं और रहना ही पड़ेगा इसके बाद मैं कहीं न कहीं तुम्हारा प्रवन्ध कर ही बँगा। तुम नहीं जानते कि आजकल मैं किस सङ्कट में हूँ।

अरविंद क्रोध से अलभुन उठा। मित्रता का ढोंग भरने वाले का मन्त्र रूप स्निहना विकृत और क्षोभला होता है यह उसने आज जाना। वह स्तब्ध होकर वहाँ से चल पड़ा।

मोक्ष निलय में श्वेत फूलों की माला के सदृश्य आकाश गंगा की धारा मन को मोहन लगी थी। एक शांत वातावरण समृद्धि पर छा रहा था। गलियार्थ सुनसान हो रही थीं। बड़ चौक का अध्या भिलारी अब भी क्लिप्त की हल्की पवचाप सुन कर कह उठता था 'बाबू एक पला।

बड़ चौक के पास एक नाला था, गंदे पानी का नाला। सर्दियों और छोट-मोट जीव-जंतुओं से भरा पूरा। म्यन्सिपलिटियों के सफ़द और स्वच्छ वस्त्र वात दुष्टिप्रिय कमिन्नों के विपरीत यह नाला जतना ही धिनीता और काला था कि वहाँ के गरीब निवासियों का आनन्द

यहाँ रहना दूबर हो गया था। यहाँ क असम्य निवासी उन कमिनरों की इज्जत पर धूल उड़ाने हुए कभी-कभी बड़ी असम्य बातें कह देते थे, जो उन्हें सधया शिष्टता का हवाल करके नहीं कहनी चाहिय थी। ये कहते थे कि यह कमिनर जब बोट का चुनाव होता है तो सग बट या पालतू कुत्त की तरह पूँछ हिलाते आते हैं प्रायना और प्रतिनापे करते हैं, और घाद में एक दसक पुत्र या गर मोहल्ले क कुत्तो की तरह उनकी ओर आँख उठा कर भी नहीं देखते।

बोर्ड-बोर्ड आवेश क बनीभूत होकर उन्हें चोर-सटरा तक कह देता था जो इन कमिनरों की इज्जत क विरुद्ध होता था। भला इन्हें घोर लुटरे कहना कहीं तक उचित है? यह तो मनुष्य की प्रकृति है कि स्वाय पड़ तो गये को भी बाप बना ले।

फिर भी इस नाले के इद गिब रहने वाले मनुष्य कितन सहिष्णु थे कि दम घोट देने वाली उस घदबू को ये अमृत समझ कर साँसों द्वारा पी रहे थे। गरस पीकर जिस प्रकार गिवजी मर्यञ्जयी बन गए थे, ठीक उसी प्रकार ये गरीब निवासी सडाद पीकर मृत्यजयी तो नहीं कम से कम मंदिर क उस महादेव की धरणी में अवश्य आ गए थे जिसकी घेदी की नाली में अनाज क बान सड-सड कर इसी प्रकार की लियली हुनघ उत्पन्न कर देते हैं और बचारा महादेव चिरन्तन घय धारण लिये बठा रहता है।

अरविद उसी नाले की ओर बढ़ा जा रहा था।

रात्रि का तिमिरांचल तारों के सुमनों से अत्याकषक लग रहा था। उसके बीचोबीच चमरता दगार उस आंचल की श्री-श्रद्धि कर रहा था। सुपमा या सारप्राप-सा दा रहा था। कभी-कभी प्रकृति की इस अनुपम क्रीड़ा को देग कर अरविद की भावातिरेक हो उठता था कि प्रकृति ही बिनागम्य भोक्ति सत्यों की सम्पूरणता है।

धीरे धीरे तिसबते नगर की रास्ते की दसो हवा क भँके से धार धार जसती-बभनी धीम पड़ी। अरविद न जान क्यों हंस पडा। जहर

उसे इस वृत्ती के ब्रम्हने और जलन पर हँसी आई होगी । सोचता होगा  
जैसी सरकार बसी बत्ती ।

तभी वो आदमी गम्भीरतापूर्वक बातचीत करते जा रहे थे । उनका  
चेहरे पर भेदभरा औत्सुक्य छाया हुआ था ।

“यह किसी मर्ी के सक्षण है ?” एक बोला ।

‘नहीं जो यह तो साक्षात् हत्यारिन है ।

‘बच्चे को माले में फेंक गई ।

अरविंद उस ओर व्रतगति से भागा । उसके दुःखित मन में यह विचार  
बार-बार मर्मन्तिक व्यथा के सनान उठ रहा था कि एक बत्तला अपन  
वात्सल्य को सहादवार माले में कैसे फेंक गई ?

वह माले क पास गया ।

एक बट्ट हाथ में सालटन लिय भद्दी भद्दी गालियाँ दे रहा था ।  
एसा विदित होता था कि उसके अतर का आक्रोण बार-बार उसके हृदय-  
पटल पर भू-सुंठित होकर चोत्कार-सोत्कार कर रहा है ।

अरविंद भक देर तक वहाँ निकतम्य विमूढ़ खडा रहा और अत में  
उसने बढी कठिनता से एक बुड्ड से पूछा ‘बाबा, क्या बात है ?”

यह प्रश्न पूछ कर उसन असे उस थम-धात कसात बड्ड क यर्गों से  
विबीर्ण मानस पर गहरा आघात कर दिया हो । जलतो हुई आँखों से  
अरविंद को देख कर उसन कहना शुरू किया ‘बात क्या है भया घोर  
कलियुग आ गया है कलियुग ! मनुष्य मनुष्य को कौडा-भकौडा समन्धन  
सगा है । शास्त्रों में ठीक लिखा है ि कलिकाल में आदमी आदमी को  
खायगा । विन्वास न हो तो घलो अपनी आँखों स देख लो ।” इतना  
कह वह बड्ड अरविंद को घसीट कर उस जगह ले गया जो बटबू से भले  
आदमियों का माया भन्ना बेतों थी ।

‘परन्तु, जरा सालटन पकड़या लो । उस मनु न दूसरे बड्ड  
स कहा ।

परमु से साल्टन लेकर यद्द न उसे नाले की ओर भुकाया । अरविद न चील कर अपनी आँखें बंद कर सीं ।

देखा भया, इस कलियुग कहत हैं, कलियुग । घोर पाप हो रहा है घोर पाप । और इस यद्द की आँखों में बादल अवसाद की चिनगारियाँ भड़क उठीं ।

अरविद बुद्ध आन्वस्त हुआ । उसन अपन हाथ में साल्टन ली । गौर से देखा—कित्ती कठोर और हृदयहीन माँ का कोमल गिणु ! कोमल इतना जितना कि फूल, पर ओह !—उसने एक ग्राह छोड़ी और नाले से बुद्ध दूर पर धा कर आघरे में बठ गया ।

अब अम्यर में उमस नभ-गगा प्रयसि सी चन्द्रमा से आतिगन करन के लिए तत्पर जान पड़ती थी और चन्द्रमा तारों की बारात लिए लड़ा लड़ा मुस्करा रहा था । एकाएक मेघ गिणु ने उन्हें अपन आवरण में ढक लिया । उस का ढकना एसा जान पड़ा जैसे चन्द्रमा मेघ गिणु की यवनिका में नभ गगा के सोमन्त में सिद्धूर डाल रहा हो । चन्द्र क्षण में ही पवन ने उम निरापरण कर दिया । सष्टि न देता होगा—जाह्नवी और चन्द्र का महामितन ।

बुद्ध की भी भी न अरविद के विचारों की तन्मयता को भङ्ग किया । यह चीव कर घड़बड़ा उठा "ओह ! यह गिणु ? कितना विकृत और कितना घोभत्स ? ममता न ममत्व के गोणित से सतोष प्राप्त किया हो या अपने जीवन के दुःख का अंत किया हो पर य दोनों बातें घणास्पद हैं । यह घतमान युग की घृणित विणोपता है । इस रस रजित सन्तोष और दुःख के घन्त में घणा और अगुप्साहीन भावना की उत्पत्ति है जो दिन प्रतिदिन हृदय-घट पर अकित हो कर अपराधी के वास्तविक सुख और समन को छीनती रहती है । एक एसी बादल वेदना का सृजन करता है जो इस हृयारिन माँ के बुधव सघय की भयभीत व बावर घना देगी और यह माँ सदय के लिए समाज तथा उस पापी के हाथ दिव जायगी जितने धून से इस गिणु का जन्म हुआ है ।

अरविंद न हड़ता के साथ अपना प्राण स कहा गलत परम्परा और उस का समाधान आदमी को पगु घना देता है ।

अरविंद कुछ देर तक फिर मौन रहा । परमु पागल के सहन चीख रहा था 'मैं कहता हूँ अब प्रलय होन वाली है । धरती इस पाप की गठरी को अब नहीं उठा सकती ।'

वास्तव में परमा सच ही कहता है ।' अरविंद आवेग में उठ खड़ा हुआ 'बसुंधरा विपण्य हो उठी है । बच्चे की हत्या वास्तव में अमानवीय कृत्य की सब से निकृष्ट परिधि है । मैं अपने बच्चे की हत्या कर दे ? हत्या करके नारी के हृदय का घणित नगापन बताने के लिए उसे शब्दों के नरक में फेंक दे । उसकी फूल-सी पलकियों के समान घम को अपने खंझार पत्रों से चीर फाड़ दे । ओह ! नारी का यह रूप कितना रोमांचक और हृदयभङ्गक है । पापाणी दानवी ।'

सहसा अरविंद को महाभारत की कतौ याद हो आई । युयु के प्रति उमकी प्रगाढ़ प्रीति भरी तपस्या और भारहर का महादान 'बल' के रूप में कनी को प्राप्त होना घम और आदम की महानता भले ही हो ? अथ धार्मिक निष्ठावान किसी प्रकार की टिप्पणी करने वाले को नास्तिक कह कर भले ही हार्दिक शान्ति या खै लेकिन सत्य छुप्र नहीं रह सकता और पाप छिपाया नहीं जाता इस उक्ति से शायद सभी ही सहमत होंगे । यही सत्य आज अरविंद के उच्छ्वसित मन में श्यथा का संचरण कर रहा था कि क्या कती न करण को फेंक कर अपने को बदनाम हो से बचा लिया और इस गिण की माँ ने बच्चे की हत्या कर के अपने को मुक्त जान लिया ? पर इतिहास गयाह है कि—न तो कती को शान्ति मिली थी—बल को त्यागन पर और न इस माँ को मिलेगी—बच्चे की हत्या करने पर । क्योंकि खून वास्तविक मृत्यु के बाद पानी बन जाता है और हम उसे भूल जाते हैं वर्ना खून खून को कभी नहीं भूलता, कभी नहीं भूलता ।

अरविंद वाचास हो उठा । वह क्या करे ?

तभी पुलिस के दो व्यक्ति घ्राए और उस वच्चे को उठाकर ले गए ।  
तमाना खरम हो गया ।

अरविंद की छाँवों में अब नौद समान लगी थी । उसन बड़ी मुश्किल से अपन आप को सम्भाला और अन्त में वह अपन भाई क मित्र वकील धोरेन्द्र कुमार क बगल पर पहुँचा ।

उसन दरवाजा खटखटाया ।

छोटा-सा बगला । आगे दालान में बाग और उस बाग में चाँदनी में चमकत पीले, लाल और सफ़द फूल ।

दरवान न छड़वार सोहे क घन बड फाटक को खोने बिना ही पूछा  
“कौन है रे ?

‘ मैं हूँ अरविंद, गोमू ?’

“ओह अरविंद बाबू अपन चाँद बाबू के छोटे भया भाइए भाइए,’  
कहते-कहत उसन फाटक खोल दिए ।

“गोमू तुम्हारे बाबू सो गए ?”

“हाँ क्यों जगा बू ?”

‘ नहीं, मुझ सोन क लिए एक दरी चाहिए और छोड़ने को धावर,  
क्या मिल सकती है ?

“क्यों नहीं ?” कह कर गोमू न तुरन्त अपनी कोठरी के आगे दरी बिछा दो और अरविंद बिना कुछ बोले हो उस धर सो गया ।

\*

\*

\*

४

दाऊ सारा बूधन को आसुर था । प्राची की मुलरित होती हुई  
अदण्डिमा मुटागिन की मांग का सिन्दूर लग रहा थी ।

राची न अल्हदता से बगीचे के एक फूल को तोडा । जसा कि अक्सर  
अपानी में व्यवसिपण एक विचित्र अल्हदपन की निहार होती हैं और ये

निष्प्रयोजन ही इस प्रकार की हरकतें परती रहती हैं। फूल को तोड़ कर गची न उसको सूंधा, फिर उसे सापरवाही से सोप हुए नौकर पर फेंक कर अपने ही पावों से मसल दिया।

‘गोमू अरे ओ गोमू ! उसने झपट कर चादर को घींचा। प्रकाश में उसन सोय व्यक्ति का चेहरा देखा तो हतप्रभ रह गई। सक्पका कर यह उठी ‘ऊँई यह तो अरविन्द है !’

पल भर के लिए वह गम्भीर बनी रही और बाद में उसने मसले हुए फूल से उसक तन मन को गदगुदाना शुरू किया। अरविन्द के नत्र खुल गय। सवेरे-सवेरे उसके सम्मुख कोटरगायिनी नत्रों वाली सद्य-यौवना थी। उसन अथ भरी आँखों से उसकी ओर दखा और देखते-देखते उसके युगल अधरों पर स्मित रेखाएँ माच उठीं।

‘तुम यहाँ कैसे ?’ गची न पूछा।

भया से झगड आया हू।’

क्यों ?”

भाभी तानें जो देतो हैं ?”

ओह ! घूमन चलोग ?’ गची जानती थी कि सोना से अरविन्द का झगड़ा सदा ही चलता रहता है।

‘क्यों नहीं ?”

‘उठो।’

अरविन्द गीघ्रता से उठा और गची के साथ हो लिया। इस समय वह स्वप्नाविष्ट सनिक जो बाइलों के दर के निरुद लड़ा है लेकिन अपनी पत्नी का हसता हुआ चेहरा याद कर उन्मत्त हो जाता है दण भर के लिए समस्त संकटों को विस्मृत करके मुख का आवास बन जाता है ठीक उसी प्रकार रात की वेदना और कष्ट से मक्षत हो गची के सग अपन को सुखागार समझ रहा था।

// यवकों की यह स्थिति भी घड़ी मजेदार होती है। युवती का ससग

उनमें स्फूर्ति और उत्साह का समावेश कर देता है। वे अपन को गौरवान्वित और भाग्यवान समझन लगते हैं।

अरविन्द सोच रहा था मेरे दुस्वप्न का अन्त हो रहा है। वकील साहब मुझ अवश्य ही किसी उग्रपुत्र काय में लगे होंगे। शची कुछ-कुछ मेरी आर जाकर्षित है।

तुम चुप क्यों हो ?

“नहीं तो।

वह खिलखिला कर हस पड़ी, ‘जल्द तुम्हें गहरी पीड़ा है अरविन्द। एक बात बताओ ?’

पूछो।”

‘परसों चाँद भया वह रहे य कि अरविन्द नची से प्यार करता है। क्या यह सच है ?’

कुछ-कुछ।’

“मम् यह छायावादी उत्तर पसंद नहीं है।’ उसका बहिष्म मयों में रोप को हल्की चिनगाटियाँ दोल पड़ीं।

छायावादी है या रहस्यवादी यह मैं भी नहीं समझता। मैं साफ तौर पर इतना ही कह सकता हू कि तुम मम्के अर्घी सगती हो तुम्हारा साथ मुझ अर्घी सगता है लेकिन इससे साथ यह भी सही है कि अभी यह स्थिति नहीं आई है कि मैं तुम्हारे बिना अपन आपकी अपूर्ण समझूँ।”

“और यदि यह स्थिति उत्पन्न हो गई तो ?”

“तो मैं तुम्हें प्राप्त करने का प्रयास करूँगा। हालाँकि मैं इन महान करतूतों से नितान्त अरिचित हू कि एक सम्पन्न घराने की सुगणित बन्धा को अपन प्रम-आल में रिक्त लुबी से फाँसा जाय कि वह फिर न निरस्त सरे ? मैं उन युवकों के आधुनिक हृदयों से भी परिचित नहीं जो अपने प्रयत्नों का मधली का तरह लड़पाना जानते हैं। न ही मैं गाम्भीर्य-इन्द्रजात में अपनी प्रयत्ति को भड़का कर नाटकीय ढंग



से उन गढ़-गढ़ाय भाष्यों को बोन सकता हू जिन्हें अबसर नई प्रमियायें ही क्यों, समस्त प्रेम-इच्छुक युवतियाँ बड़े धाव से सुनती और पसंद करती हैं। मैं इस माग का विलुप्त नया और भीला ध्यान हूँ गधो ! इसीलिए मेरा प्यार परवाना नहीं बन सकता फलता-फूलता मुरम्भा जाता त्रे, कलाइमेवत पर नहीं पहुँचता ।

मकानों का क्षेत्र समाप्त हो चुका था । धुले मदान की खुली हवा के भोंकों में गधी की न्यायल जलकों पर से उसकी साड़ी के छोर का उडा विषा था जिससे उसका रूप मुग्धरित जान पडा । उसके अभिराम आनन पर चघल मत्स्य के समान चपल नयन सरते हुए जान पड । अरविन्द उसे अनिमेष हृष्टि से देखता रहा ।

इस गिलित समाज में एक प्रकार की एसी प्रमियायें होती हैं जिन्हें अपन प्रेमी की भोली बातें बहुत प्रिय होती हैं । गधो बसी ही थी । उस अरविन्द की बातों में रम जान पडा, अत घह बोली 'यदि तुम आपुनिक समाज क प्रघतित नियमों से अनभिक्त हो तो तुम एक सफल व्यक्ति नहीं बन सकते । सोसायटी मूव' के तरीके ही तुम्हें उच्च वर्ग में जो पान्वात्य सम्पत्ता और सस्कृति का अनुकरण कर रहा है, एक दिस घस्य और आकषक 'हीरो' बना सकते हैं, अथवा तुम सदा ही पुच्छल तारे की पूँछ की तरह महलगहीन ही बने रहोगे ।'

अरविन्द कुछ बेर मौन धारण किए चलता रहा । उसके लसाट को ससबटें उसके अन्तर के गम्भीर चिन्तन की प्रतीक जान पड रही थीं । वह कुछ विचलित-सा भी जान पडा फिर बोला, 'गधो ! इस वग ने व्यक्ति के मान-दण्ड बढस दिए हैं । वह मानवीय भावनाओं से धार्मिक वेष्टाओं की ओर अधिक बढ गया है । फिर भी मैं अपने धारे में इतना ही कह सकता हूँ कि मैं कबस प्रेम कर सकता हूँ प्रेम । और वह भाव विरल हो उठा, 'प्रेम भी ऐसा जिसे हमारे शास्त्रों ने पूज्य कहा है वाचिता का आगार और महिमाधर माना है । तुम्हीं बताओ न वह अनुप्य कितना महान है जो अपने आराध्य की सर्वस्व अर्पण करके उसे

भाजीवन पूजता है जस कि वह हर दृष्टि से पूजने लायक भी नहीं है । क्या यह मानव त्याग का परम आदर्श नहीं कि हम मानवता के लिए अपनी यासना का दमन कर लें ?”

शची मुस्करा पड़ी । वह नीम के नीचे बठती हुई बोली, ‘कौन दयता है और क्या त्याग है, इनकी मापतायें सदा बदलती रहती हैं । अरविद यदि मैं तुम्हें कहूँ कि मुझे पाने के लिए तुम महान् बनो, ऐसे महान् नहीं जिस की पग पूजा करे पर ऐसे महान् जिसे हमारा पग मान । मेरा भाई मेरी भाभी और मेरे सम्बन्धी महान् समझें । तो तुम क्या महान् बनने का प्रयास नहीं करोगे ?

“यह बहुत बड़ी बात है ?’ अचानक उसका चेहरे पर उबासी दौड़ गई जैसे वह आवग की इन बड़ी गुलियों में इस तरह उलझता गया कि उसे यह भी भाव नहीं रहा कि वह बिस्तुल बकार है । उसका पास इतना भी पसा नहीं है कि वह वो जून पेट भर खाना भी खा सक ।

‘तुम एकाएक उदास क्यों हो गए ?’ शची न आश्चर्य से पूछा ।

‘मैं सोच रहा हूँ कि व्यक्ति कल्पना के सन्तोष में इतना लीन क्यों हो जाता है कि वह यह भी भूल जाता है कि इस जगत में उसका अपना अस्तित्व क्या है ?

‘नापद तुम्हें कल की बातें याद आ रही हैं” शची न उठने हुआ ।

‘हां चांद भया की दगा देख कर मेरी आत्मा कराह उठती है । शची, मनुष्य को देवता के रूप में यदि देखना चाहती हो तो चांद भया को देखो । भ्रातृत्व की भावना का सदा रूप और उस पर उत्सव की कामना, ये दोनों उनका अग-अग में कूट-कूट कर मरे पडे हैं । मैं यहीं नहीं रहूँगा । यहीं रहने पर चांद भया की बड़ा बप्ट होगा । वह एक-दम उग्र और व्यथित हो उठा ।

‘क्यों ? क्या तुम अपने घर नहीं जाओगे ?’

‘नहीं, घर से जो इरादा लेकर निकला हूँ, उसको पूरा किए बिना जाना मुझे आत्म प्रवचना सा लगता है।

शची को आघात सा लगा। कुछ विचार कर बोली ‘फिर मन्त्र प्राप्त करने की प्रतिज्ञा का क्या होगा? अरविन्द मैं तुम्हें बहुत प्यार करती हूँ। और प्रयत्न के मन में तब कितना बच्य होगा जब उसका प्रती उसे छोड़ कर अनिश्चित काल के लिए वहीं दूर चला जाए। मैं तुम्हें नहीं जान बुगी।”

‘इतना अधिकार है मुझ पर?”

‘हाँ।

“गधी!” अरविन्द ने झपट कर उसका पल्लू पकड़ लिया। शची के स्तब्ध चेहरे पर नवीन यौवन का एक सघ जाग्रत क्षुधा-मूर्ति अकस्मात् दौड़ गई। उसने अनुभव किया और वह सकोध समेत स्थिर हो गई। उसने मन ही मन सोचा, ओह! वह कितनी भावुक हो गई है? उस इतनी शीघ्रता नहीं करनी चाहिए।

और अरविन्द उसकी जड़ता का तात्पर्य समझ गया। उसका पल्लू छोड़ कर पश्चात्ताप भरे स्वर में बोला, ‘गधी! मैंने तुम्हें पहले ही कहा था कि मैं इस प्रेम माग का नया ध्यान हूँ। मुझ से अपनी प्रयत्न से बर्ताव करने में काफी भूलें हो जाती हैं। सम्य-सुसंस्कृत समाज में प्रेम करने का सर्वोत्कृष्ट तरीका क्या हो सकता है इस से मैं सवया अनभिज्ञ हूँ।’

‘गधी कुछ नहीं बोली, वह चुपचाप चलती रही। उसके समक्ष उस का अपना घर घूम रहा था जहाँ व्यक्ति की भावना से पूजा को अधिक महत्व दिया जाता है।

भारतवर्ष में पारिवात्य सस्कृति का जो प्रवाह चला आ रहा है, उस ने यहाँ की मानवता को पीड़ित और अजरित किया है। लेकिन उसका बहिरंग इतना सुन्दर है कि यहाँ का कोई भी प्राणी सहजता से उसकी ओर आकर्षित हो कर धम कम और नतिरता का नए सिरे से मान दण्ड गवने लग जाता है। बड़ी-बड़ी दानदार बत्तर्बे और उनमें पति के

समक्ष पत्नी का अन्य व्यक्ति क साथ प्रमालाप सुरापान और रोमास का ऊपरी और छिछले रूप का प्रदर्शन । यह सब घाबिर क्या है ? मानवीय भावनाओं पर आघात नहीं ? व्यक्ति कसा भी हो पर उस व्यक्ति में एक बात का होना बहुत जरूरी है कि वह बाह्याडम्बर में प्रवीण हो, उसके पास धन रागि का प्रचार भण्डार हो और सर क लिए एक सुंदर कार हो ।

गची का सारा घर इस सन्धता के सागर की अतल गहराइयों में गोते घा रहा था । गची भी इन्हीं नई सन्धता-जनित मान्यताओं से प्रभावित थी । अरविंद के प्रति उसका कोई लगाव नहीं था और न ही उसका तनिक प्रेमाक्षयण भी, बल्कि इस प्रकार की बातों और अभिनय को यह मनोरजन का एक अंग समझती थी । हाँ, कभी-कभी वह गजाकुल अवाय हो उठती थी । यह शशाकुलता उसे अरविंद की उस कटूक्ति का स्मरण करा देती थी जो यदा-कदा उसकी अपेक्षा पर वह उसे हसी हसी में कह देता था, 'जिस प्रकार धन को गायें नित्य प्रति नई-नई घास खाती हैं ठीक उसी प्रकार तुम पुण्यों को चाहती हो, अथवा उनका साथ प्रेम का अभिनय करती हो । प्रिय और अप्रिय तुम्हारे लिए कुछ नहीं हैं । फिर तुम्हारे इस आधुनिक समाज में जहाँ सबसे स्वतंत्र है, जहाँ केवल पूंजी की महत्ता है जहाँ निष्ठा के बोलवाला है वहाँ मानवीय मूल्योंकों का क्या भटत्व हो सकता है ? यह कसी

अनोखी बात है शची कि इस अंग का धूम्य पहलू कितना सुन्दर व मनोरम है कि आदमी का भोला और मूढन हृदय उसमें अपन आपको एकाकार करने के लिए साक्षमित हो उठता है । लेकिन जिस प्रकार एक अद्वितीय सुन्दरी निरावरण होने पर घणारपद लगती है और नील व्यक्तियों की आँसों को सकोच से भका देता है उसी प्रकार जब इस समाज का सुनहरो पर्वा हटता है तो आदमी इससे नगपन से भयानुर हो उठता है । सब इस समाज की सारी कोमलता भयकरता में बदल जाती है । इस समाज में किसी मनुष्य क गुण विनाय का आदर नहीं है बल्कि

यह छल-कपट या अनकानन तरीकों से कितने अधिक प्राणियों को अपनी ओर आकर्षित करके एश कर सकता है यही उसकी महानता का परिचय और प्रमाण है। और यह महगी और दुष्ट महानता प्रत्यक्ष साधारण व्यक्ति के लिए सुखम नहीं है।

अब दोनों अपन-अन विचारों में तल्लोन चले जा रहे थे। पूरब का सतेज प्रकाश सष्टि को आलोकित करने लग गया था। एक ग्वाला हाथ में दूध की घाल्टी लिए दसगति से भागा जा रहा था। वह नग पाँव था इसलिए बार बार वह धरती की ओर देखता था। धरती पर ककड़ बिखरे थे जो उसके पाँवों में चुभ रहे थे।

शची ने उत्कल होकर मौन भंग किया, अरविद, यदि तुम यहाँ रहना चाहो तो मैं तुम्हारा प्रबन्ध कर सकता हूँ।

‘मैं यहाँ रहना नहीं चाहता, फिर तुम्हारा सामोप्य दुर्भाग्यवग बुझकर हो जाय तो?’

‘कसे?’

‘तुम्हारे समाज की औरतों में यही आदमी सभी प्रकार से धष्ट है जिसके पास दीनत है।’

‘तुम्हें अविश्वास का रोग लग गया है। मैं उन औरतों में नहीं हूँ अरविद! मैं वास्तव में तुम्हें चाहती हूँ। उसन बड़ विश्वास क साथ कहा पर तो भी स्वर का व्यंग दिया नहीं रह सका।

यह भेरा सौभाग्य है। तभी मैं जरा डर कर हल्का विश्वास लेकर अपने सब आत्मीयों से तुम्हारे प्रम की चर्चा कर देता हूँ।’

‘फिर तुम कहाँ जाओग?’

‘कहीं भी पर तुम्हें कुछ रुपय कज देन पड़ेग।’

‘कज क्यों?’ मैं तुम्हें प्रम करती हूँ ऐसे ही दे दूंगी। अरविद को उसके स्वर में अहम का तीक्ष्ण जान पडा।

‘नथी! यह मैं बार बार भूल जाता हूँ कि तुम मुझ प्यार करती हो। भविष्य में इसके लिए अधिक सावधान रहूंगा।’

अब मैं तुम्हें एक आतिरी बात कहना चाहती हूँ। उसने दृढ़ता से कहा, "यदि तुम कभी समय हो तो इस प्रम-युजारिन को अपने घरणों में स्थान देना।" बिल्कुल नाटकीय-सवाद य गधी के।

'यह तुम्हारे पर अवलम्बित है। कदाचित मैं इस सञ्क्रान्तिकाल में समर्थ होऊ ही नहीं।'

उसने चौंकर कर जवाब दिया, यह नहीं हो सकता। मुझ विश्वास है कि एक दिन तुम बहुत ही लोकप्रिय होओगे, पन और पन दोनों के भागी बनोगे।

'तुम्हारे स्वप्न को सत्य करने का प्रयास करूंगा।'

'दिन भर वहीं रहोगे।'

कह नहीं सकता किसी भी गाड़ी से चला जाऊंगा।'

बगला आ गया था।

जैसे धरामदे में विद्यी टेबुल के चारों ओर घाय के प्याले लगा दिए गए थे।

दाची गधी की भाभी अनुराधा और अरविन्द ने घाय की। गोमू म घवीस साहब को उठाना चाहता तो अनुराधा ने डाँटते हुए कहा 'उठान की कोई जरूरत नहीं है, सोते-सोते थक जाएगा तो आवर घाय की लेंगे।

अरविन्द को अनुराधा का यह बर्ताव प्रीतिकर नहीं लगा लेकिन दाची किस भाव से प्ररित होकर कह उठी, 'अरविन्द पुग एसी नारी की माँग करता है, जो अपने अधिकारों का सही मूल्यांकन करना जानती हो।

अरविन्द मौन रहा। अनुराधा के मुग पर गर्व की रेखाएँ सक्षित हुईं।

विगय रूप से, गत वय में उन्हीं के साथ बम्बई गई थी ।'

'माह ! वही ठाकुर जगदीप सिंह ।' कटाल या मरविंद के स्वरो में ।'

हाँ महाराजा साहब के पी० ए० ।

मादमी बड़ प्रणय हूँ ।

'बगक बिलायत भी जाकर घाय हैं । बड़ ही शिष्ट हैं ।'

मरविंद के होठों पर निराशा भरी मुस्कान नाच उठी । गंभीर होकर वह बोला, "इसलिय मुझ तुम से डर लगता है । जब मैं अपने आप को देखता हूँ तब मुझ धरती के सीध-सादे इन्सान की याद हो जाती है और तुम्हें देखता हूँ तब स्वयं का उस अक्षरों के बारे में साधन लगता है, जिसका उपभोक्ता कबल इन्द्र होता था ।

'गची को यह लाइन भरी बात प्रकटी नहीं लगी । वह कुछ कठोर होकर बोली, यह तुम मेरा अपमान कर रहे हो ?'

एसी मेरी सनिक भी इच्छा नहीं है ।'

तुम्हारा यह वाक्य तुम्हारी भावना का साथ नहीं द सकता । लखमुख आज तुमने यह बात कहके मेरे दिल को बड़ी ठस पहुँचाई है । तुमने मेरे प्यार का अपमान किया है यह कठोर किंतु धीमे स्वर में जाती ।

'गची इसीलिये मैं तुम्हें कहना हूँ कि मैं प्रेम के विषय का मया धार्य हूँ । मैं भूल जाता हूँ कि एक प्रेमिका के साथ किस तरह व्यवहार करना चाहिये । क्षमा कर दो म ।

मैं तुम्हें क्षमा नहीं कर सकती ।'

'तुम्हारी मर्जी । तभी इंजिन न सीटा दो । यह गची का हाथ पकड़ कर बोला मुस्ताली के लिये माफी माँगता हूँ । अभी जहरत पड़ तो मुझ सिलना । मैं तुम्हें बराबर तब तिस्रा कहूँगा । फिर उसने भाई के घर लौटने के लिये और बूढ़ कर गाड़ी पर चढ़ गया ।

\*

\*

\*

नया आदमी नया गहर ।

सुन्दर व पवतीय सुपमा युक्त । हरा भरा और सुसम्पन्न । विभिन्न राजनीतिक बलों का केन्द्र ।

अरविंद उस समय हिन्दू पीड़ित सेवा समिति में भर्ती हो गया । हालांकि उसे वेतन के अधिक पैसे नहीं मिलते थे लेकिन उसका सम्पन्न विभिन्न जन-नेताओं से होता गया । हिन्दू महासभा उस समय पूर्ण प्रगति पर थी । मुसलमानों के नश्वर अत्याचारों से पीड़ित हिन्दू दृष्टियों में सबसे जबरदस्त यही प्रतिक्रिया हुई कि यह सब अत्याचार का प्रसन्न कारण हुआ है ।

बड़ी विकट समस्या थी ।

अरविंद इन दिनों बिल्कुल खामोश रहता था । वहाँ के जन-नता यह उपाधि उन्हें किसी जनता द्वारा प्राप्त नहीं हुई थी बल्कि वे हर भाषण में इस शब्द को इस प्रकार जोड़ा करते थे, 'माइयों और बहनों ! यह स्वतंत्रता सच्ची स्वतंत्रता नहीं हिन्दुओं की सांग पर इस स्वतंत्रता इस आजादी, इस फ्रीडम की नींव पड़ी है । साहीर की गली-गली में हमारी बहनो की नगा करके जलूस निकाला गया बच्चों की भातों की मोच पर रक्तकर प्रदान किया गया । मामूम बच्चियों के साथ बलात्कार किया गया जवान सड़कियों के गलागों में हे भगवान । ऐसी भयानक सीसा तो अभी इस आर्यावर्त में राष्ट्रों न भी नहीं की थी । हम जन नताओं न अपनी आँखों से यह नगा जलम देखा है । हम 'जन-नताओं न अपन बानों से हमारी माँ बहिनों की दुःख-बद भरी कहानी सुनी है । इस प्रकार 'जन-नता' धम की आट में अपना राजनीतिक उल्लू सीधा करने में प्रयत्नशील थे ।

यह दोपहरी अरविंद के जीवन की अविस्मरणीय घण्टी । दिन मणि मीने आकाश में चमक रहा था । उसकी रजत-सी पवत रश्मियाँ



अग्नि-बाण सी लग रही थीं। सभा भवन में थोड़ी हलचल थी क्योंकि बाहर से किसी लोकप्रिय धार्मिक नेता का आगमन हुआ था। गव स्नान निजन और निस्पन्द था।

वह सोच रहा था गची के बारे में। गची के अतुल्य सौन्दर्य का मूल्यांकन करन बड़ा हुआ था यह। सोच रहा था कि यह उसे वास्तव में प्यार करती है या नहीं। तब उसने मन न हौले से कहा कि आज से नहीं बचपन से ही यह उसे चाहती है। बचपन की ये घड़ियाँ कितनी मधुर और प्यारी थीं। गची का बात-मात पर भगडना और भगड़ कर वापस मन जाना अरविंद की कितना भाता था? तब वह मन ही मन निराप्य करता था कि वह जीवन में उसे ही अपनी अर्द्धांगिनी बनाएगा उसी पर अपना सबस्य विसर्जन करेगा। पर शची जैसे-जैसे जीवन की ओर अपन कदम बढ़ाती गई वैसे-वैसे वह अरविंद से दूर से दूरतर होती गई। हालाँकि वह जब कभी भी अरविंद से मिलती थी तो उसके व्यवहार में पहले जसा ही अपनत्व टपकता था लेकिन उस अपनत्व में शक्ति कर देन घाली स्वतंत्र भावना का मिश्रण अरविंद की मन-स्थिति को बाचाल कर देता था और वह भी अहम् से अभिभूत होकर शची के समक्ष यह प्रदर्शन कर बठता था कि वह भी उससे उतना ही प्यार करता है जितना वह करती है। तब उन दोनों के बीच एक ईर्ष्या की हल्की रेखा उत्पन्न हो जाती थी और वे एक दूसरे के प्रति तनिक कठोर होकर कुछ कटूवक्तियाँ सुना देते थे। लेकिन अरविंद जैसे महान महत्वाकांक्षी मुयक के लिय यह अभिनय क्षणिक था। वह तो मन ही मन निश्चय करता था कि आज अर्धाभास भने ही हमारे सम्बन्धों को मजबूत न होने दे पर एक दिन मैं उनति और प्रगति के साथ-साथ गची को प्राप्त करन में किसी भी तरह समय हो जाऊगा।

तब उसका अन्तर-मन अत्यन्त क्रूर होकर उसे अर्णात कर देन घाला प्रश्न कर बठता था और यदि इस बीच शची न सम्भारे साथ दल कर दिया तो ?'

इस प्रश्न के ध्यान के साथ वह ध्याने में आ जाता था और उसकी धारों में हिंसात्मक चिन्तनारियाँ जन उठती थीं। अग प्रत्यग ध्वंस हो जाने थे और ध्वंस धाप से वह कह उठता था कि यदि गची ने उससे ध्वंस किया तो वह उसका जीना हराम कर देगा। वह प्रयत्न करेगा कि वह किस प्रकार सबसे किस प्रकार उसे मार्मिक वेदना मिले ?

फिर उसने हृदय की कोई कोमल भावना विह्वल पड़ती थी, 'गची। ऐसा नहीं कर सकती थी और फिर नारी एक ही पुरुष को प्यार करती है वह पुरुष कसा भी हो नारी के लिए ध्वंस ही है। हाँ, शची इतना चकराती है कि मैं महान् बन्, लोकप्रिय और एश्वयवान। वह मैं जरूर बन्गा। महत्वाकांक्षा की पूरता के लिए मैं अपने ज्ञान की हर क्रिया का प्रयोग करूँगा, सतत प्रयत्नशील और जागदक रहूँगा।'

'अरविद यावु अरविद यावु' धपरासी न बाहर से पुकारा।

'बोन है ?

'मैं हूँ चेतन।'

'बोसो ?'

सह हुए बिबाइयों को धीरे से खोल कर चेतन नीतर घुसा। अरविद की गभीर मुद्रा देखकर वह क्षण भर तर्प स्तब्ध रहा और फिर मुस्कराते हुए बोला "आपको स्यामी जो बसा रहे हैं।

"मुम् ? यह घोड़ा चकित होकर बोला "चेतन क्या तुम मुम् घता सकते हो कि मुम् क्यों घुसाया जा रहा है ?"

चेतन मुस्करा पड़ा। बिच्छू-सी छोटी-छोटी आँसुओं को नधाना और दरी पर बठता हुआ बोला "आप भी बसी घाते कर रहे हैं साहब मैं भला गवार आदमी स्वामी जी के भद को क्या जान सकता हूँ ? ये भगवान् के समान हैं।'

अरविद ने उसकी घात का कोई उत्तर नहीं दिया। वह धुपचाप घठा रहा। उत्तर सलाट पर पड़ती हुई सलवटे उसकी आंतरिक गभीरता की प्रतीक थीं। वह उठा और चेतन से बोला 'कहाँ बसाया है ?'

‘ठाकुर मोहनसिंह की कोठी पर ।

“कह देना मैं आ रहा हूँ ।

अरविंद उठा और अचमत्क सा मोहनसिंह की कोठी की ओर  
रवाना हो गया । प्रयत्नी की मधुर या कट कल्पना में तमय किसी प्रमी  
की उस कल्पना में अवरोध उत्पन्न करना कितना पीडाजनक होता है,  
फिर भी “पराधीन सपनहु सुख नाहीं की पक्तियाँ स्मरण कर प्राणी  
को अपन आपको सतोष देना पड़ता है । अरविंद न अपन आपको सतुष्ट  
किया और ठाकुर मोहनसिंह की कोठी पर पहुँचा ।

कोठी की बठक में बड़-बड़ पूंजीपति सानन्त और कुछ सापु एक-  
त्रित थ । उन्हें दूध के गिस्तान भर भर कर लिए जा रहे थे और वे पी पी  
कर निर्धारित विषय पर अपनी थोथी दलीलें पेश कर रहे थ । अरविंद  
ने जैसे ही बठक में प्रवेश किया वैसे ही सभी उपस्थित व्यक्तियों म उसे  
इस तरह देखा जस विल्लियाँ अचानक नई बिल्ली का देखती हैं ।

अरविंद कुछ झेंप-सा गया । ठाकुर मोहनसिंह न सिगरेट का बग  
पींचते हुए कहा अरविंद देखो आज सभा है तम्हें सभी भावणों का  
सारंग तिलना है अत ठीक पाँच बज सावजनिक बाग में पहुँच जाना ।

अरविंद निरुत्तर रहा । वहाँ से वापस आ आया ।

पाँच बज सभा का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ । सभापति के कथना  
नुसार एक वक्ता उठना था और साम्प्रदायिकता का विष उगता हुआ  
अत में धम की जय हो अधम का नाग हो प्राणियों में सद्भावना हो  
और विश्व का कल्याण हो के नारे सगाता हुआ बठ जाता था । वक्ताओं  
में कोई भी एसा नहीं था जिसकी बखतरब बसा इतनी प्रभावोत्पादक हो  
जिससे श्रोताओं में हलचल पदा हो जाए एक महान प्रतिक्रिया उत्पन्न  
हो जाय । एकाएक एक ओर कुछ व्यक्तियों न हल्सा मचाना शर किया ।  
य पत्राय के शरणार्थी थ साम्प्रदायिक आग ने जिनका सवस्व जला  
दिया था जिन पर अमानुषिक अत्याचार हुए थ । आवाज आई हम  
तो बरबाद हो गए आप क्यों हिंदू हिंदू चिन्ता रहे हैं ?

‘हम बदला चाहते हैं। एक आवाज।

‘हम इन डॉगियों को जान गए।’ दूसरी आवाज।

बेषते-बेषते सभा के रंग बदलने लगे। नाजूक स्थिति उत्पन्न हो गई। ठाकुरों की माता भवानी जग से पीड़ित होकर ध्यान में पड़ी थी। साधुओं का साधुवाद चला नहीं।

भूल पेट और भरे पेट की पीड़ा और चोख का यही तो अन्तर है। जब भूल पेट की चीख निश्चिन्ता है तथा सत्य नगा होकर सब पर धा जाता है।

स्वामी सोहनगिरि जी न हड़बड़ा कर अपना दह-कमण्डलु उठाते हुए कहा स्थिति बिगड़ रहा है मेरा ह्याल है कि सभा विसर्जन कर दनी चाहिए। य कारणार्थी दुख से पागत हो गये हैं। इन्हें अभी खून चाहिए, धम नहीं। अगांति चाहिए गमन नहीं।’

ठाकुर माहनमिह न बीपने स्वर में कहा “मेरी मोटर तयार है चलिए।

उस समय अरविंद के दिम में विचित्र सघष हो रहा था। त्रिचारों के आदोलन में वह कुछ निणय नहीं कर पा रहा था। लेकिन उसकी महत्वाचांदा उसे बचोट रही थी। कह रही थी, यह मुनहरी मौका है, यदि तुम्हें अपन पर विश्वास है तो आज इस समूह में आग फला दे। अपनी बद्धि और भाषण-कला के सहारे भीड़ को दान्त कर दे।

यह उठा और गजता हुआ बोला “मैं तुम्हें खून दूंगा खून सस्नि पढ़ने आप दांत हो जाइए गांत।

गह गम्भीर गजना ने सभा में सन्नाटा फला दिया। स्वामी जी ठाकुर साहब और बत्तागण हनप्रभ हो गए।

अरविंद न समूह पर दृष्टिपात करके कहना प्रारंभ किया

‘भाण्यो और घहनों।

मैं जानता हू कि भाषण आरंभ कष्ट और पीड़ा का निदान नहीं। लेकिन आप यह भी जानते हैं कि मत्पदक पाए हुए अपराधी को जय

फाँसी हो जाती है तब वह व्यक्ति वास्तव जिंदा नहीं होता जिसको अपराधी में सारा है। महान राजनीतिज्ञ श्री चाणक्य ने कहा है—प्रजा के लिए हुए पाप राजा भोगता है, राजा के पाप को राजपुरोहित भोगता है / स्त्री के लिए पाप उसका पति भोगता है / और बेटे के लिए पाप उसका गुरु भोगता है, तब आप बताइए कि धर्म के नाम पर किए गए पाप और अपराधों को कौन भोगगा ?

तीसरे प्रश्न का सीधा उत्तर है (मजहब के पगम्बर या रहबर ! मैं जानता हूँ कि मुसलमानों ने अपराध पर अपराध किया है, धर्म और धर्मोपदेश किए हैं पर मैं पूछता हूँ, क्या इससे इस्लाम के चार चाँद सगरे गए ? नहीं, नहीं, नहीं ! एक आवाज आती है कि नहीं। ताकत और शासन धर्म को सनातन नहीं बना सकते। धर्म को शाश्वत बना सकती है तो उसकी अखंडता, उसकी सहिष्णुता और उसकी विंगल एकत्व की भावना।' — १५/१२/११ २६/१२/११ १७/१२/११

वह लगातार एक घटा बोलता रहा। उसने उस उत्तम समुदाय को बहुत ही शांत कर दिया। वह कहता रहा मुसलमान हिन्दुत्व को नहीं मिटा सकते और न ही हमारे हिन्दू भाई यह सोच कर अधीर हों कि विधर्मियों ने हमारा सबनाश कर दिया। क्योंकि हमारे शास्त्र कहते हैं कि प्राणी स्वयं अपने कर्मों का जन्मदाता है इसलिए वह स्वयं अपने कर्मों का फल भोगता है। न कोई किसी को मार सकता है और न कोई किसी को जिंदा कर सकता। मारना और जिलाना भगवान के अधीन है। ये बुधटनाएँ तो केवल निमित्तमात्र हैं।

इसके पश्चात् वह लगातार एक घटा फिर बोलता रहा। इस घट में उसने निम्नलिखित अंग बहुत ही महत्वपूर्ण कहा— 'अब हमें दिव्य भावुकता का त्याग करके समकालीन होना पड़ेगा। सधारा शक्ति का उपयोग को साकार करना होगा। धार्मिक पीरुपता निष्ठा, सेवापरायणता, राष्ट्रीयता की भावना ले कर हम एकत्रित हुए तो क्या मजाल है कि हम हिन्दू धर्म समस्त आर्यावर्त पर नहीं पला सके। अपराध और

घनाघार के उमूलन का एक ही रास्ता है यह है हिंदू महात्मा को बत देना हिंदू सगठन को प्रश्रय देना और सब बानें गीए हैं।

हृयध्वनियों और तालियों की गडगडाहट के बीच जब उसने अपना भाषण समाप्त किया तब ठाकुर मोहनसिंह ने उस प्रगाढ़ आतिथन में आवद्ध कर हार्दिक धन्यवाद दिया। स्वामी जी प्रसन्न हुए किन्तु फिर ये आपसी प्रतिस्पर्धा की जवन में जल उठे और उन्होंने तत्काल अपने आपकी गभीरता को प्रतिभूति बना लिया।

अरविंद बिल्कुल मौन और गभार था। ठाकुर मोहनसिंह ने जब वहाँ की विंगण उपस्थिति से उसका परिचय कराते हुए यह कहा, कि 'मैंने अरविंदजी की पहली ही नगर में पहचान लिया था। आप ही कहिए कि लाल कभी गुड्डा में छिप कर रह सकते हैं? मैं कहता हूँ कि हमारी सभा इस नता को पा पर गौरवान्वित होगी।'

तब अरविंद ने अत्यन्त धीमे से कहा "मुझ पानी चाहिए।"

लेकिन उस दिन अरविंदजी को पानी की जगह सेमन मिला और इसके बाद वह यान अरविंद नता' उन्हीं की कार पर बठ कर ठाकुर की बोटी पर गया। भाग्य का रत्न एक ही दिन में बदल गया।

\*

\*

\*

७

अरविंद के हाम में दाघी का सत था। वह सत को हाथ में ले कर दाघी को मुँदर सिगावट को देख रहा था पर न जान किस विचार में उसका कर वह सत सोल कर नहीं पढ़ रहा था।

ठाकुर मोहनसिंह का बोटी का एक सानदार कमरा। मौकुर-चाकुर। घामोद प्रमोद। भोग विलास। सबसब।

भाग्य-शरू का यह स्वर्णिम बिंदु।

बुद्ध देर तक विमूढ़ रहन के बाद अरविंद ने पत्र खोला। पढ़ने लगा।

प्रिय अरविंद !

तुम पत्र क्यों डालोगे ? कम्बलन हो ना और अब इस कम्बलनी पर महानता की छाप और लग गई है, अतः मित्राज सातवें आसमान पर पहुँच चुका है। सातवें आसमान पर खड़ा रहता है जो सब पर दयालु और उदार है और तुम्हारा मित्राज उस आसमान तक पहुँच कर पत्थर की तरह कठोर और तपस्वी की भाँति एकांगी बन गया है।

समाचारपत्रों में तुम निर्विरोध हिंदू महासभा का एकनिष्ठ कम निष्ठ और यगस्वी मता स्वीकार कर लिए गए हो। तुम भी खूब हो। खूब क्या गिरगट हो और सम्मान सूचक शब्दों में मैं तुम्हें इन्द्रधनुष कहना ही पसंद करूँगी। इन्द्रधनुष के सात रंग होते हैं और तुम्हारे में अमी तक दो रंग बिल हैं नीलाभाला अरविंद और नला अरविंद।

अरविंद ! एक दिन मैं तुम्हें कहा था न कि तुम यश और धन दोनों के भागी बनोगे। मुझ विश्वास हो रहा है कि मेरी भविष्यवाणी अब सत्य हो रही है। यश अर्जित होने के बाद धन स्वतः ही तुम्हारे और भाग्यता हुआ आएगा। यही आज की व्यवस्था का नियम है।

कल मैं एक स्वप्न बंसा था। तुम डूला बन कर आए और मुझ ब्याह कर ले गए। कितना मुहाता और मधुर स्वप्न था ? मनुष्य का चेतन मन इस अचेतन मन की सुंदर प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा करता रहता है।

पत्र की प्रतीक्षा रहेगी।

तुम्हारी—

राधा

अरविंद की दाएँ भर क लिए सुलातुभूति हुई। गची उसकी दुसहिन बन कर अपरिचितम सुल का अनुभव करती है यह भावना भविष्य में उसकी कितना प्रसन्न करेगी ? यह घंटों उस पर विचारता रहा। और

यदि ठाकुर मोहनसिंह आकर उस नहीं पुकारता तो न जान कब तक इस समाधिस्थ भवस्या में निमग्न रहता ?

अरविद आज हमारे समधी नरेन्द्रसिंहजी के यहाँ नृत्य-गीत का कार्यक्रम है उन्होंने भी निमंत्रण दिया है, रात को ६ बजे तक चलना है ?

अरविद न ठाकुर साहब को बठान का संकेत करके धीरे से उत्तर दिया ।

यदि मैं नहीं चलू तो ?

यह कबे ही सजता है ? ठाकुर न जाशय से कहा ।

“क्यों ?”

देखो आपसी परिवार ही आज की बड़ी विंगपता है । बड़-बड़ लोगों से घनिष्ठता आग चल कर आपको बड़ा काम देगी । इसमें हमारा बहुत बड़ा स्वाय है ।’

अरविद न हस कर कहा तब मैं जरूर चलूंगा । मैं सदा आपका ही भला चाहता हूँ ठाकुर सा । जीवन में सब कुछ भी देकर आपका अनुराग मिलता रहे वह मेरे लिए परम सौभाग्य की बात है ।”

“यह तुम्हारी महानता है, अन्दा में चला ।

ठाकुर चला गया ।

अरविद के अमरों पर अचानक भयानक मौन हसी नाची । उसकी आँसों में झरना घमकी और उसन आह के साथ भयकर निलय किया । उसन टबुल की दरार में से फाड़-टनपन निजाता घोर गंधी को पत्र लिपन बठा ।

प्रिय गंधी

पत्र मिला । तुम नहीं समझती कि मैं उस पत्र को कितनी बार भावावेश में घूमा । मनुष्य अपनी सबसे प्यारी वस्तु को पाकर कितना खुश होता है वही हालत मेरी थी ।

तुमन तिला तुमन स्वप्न देना उस स्वप्न में दो आत्माओं को



एकाकार होते हुए देखा। उस मधोन अनभूति का अनुभव किया जो नर और नारी के प्यार की चरम सीमा कही जाती है। वाश ! उसका मैं भी अनुभव करता। फिर तुमन यह कते लिख दिया कि मैं भाग्यशाली हूँ। भाग्यशाली तो तुम हो ?

मैं नता हो गया हूँ पढ़ कर मुझ हसी आई। शायद तुम्हें यह पता नहीं है कि आज का नता कितना स्वार्थी और बर्दमान होता है ? धीरे धीरे यह शब्द से पूजा जान वाला शब्द जनता-जनादन की दृष्टि में दिन प्रतिदिन गिरता जा रहा है। फिर भी मैं बहुत ही महत्वाकांक्षी हूँ अतः मुझ इस 'नता' शब्द के पीछे जितनी भी धुराइयाँ छिपी हैं और बाद में करनी होंगी, स्वीकार हैं। मैं महान बन कर तुम्हें प्राप्त करना चाहता हूँ।

तुम्हारी सोसायटी का क्या हाल-खाल है ? नघी ! मैं उस दिन को आज तक नहीं भूला हूँ।

वह दिन—बलब में तुम बी० सी० मायुर का उपहास कर रही थीं और उसकी बीबी शाराब के मग में घूर उस उपहास का साथ दे रही थी। मुझे यह सब अकब्या नहीं लग रहा था। मान लो एक बरक किसी आदमी के पास पसा न हो और उसने मजबूरी से फटा ही कोट पहन लिया हो तो क्या हुआ ? पर तुम्हारी सोसायटी भी यही विचित्र और एडवांस है। मायुर के पीछे ही पड़ गई। अतः मैं धचारे को रोना धा गया, वह रो रहा था और उसकी बीबी स्तिलखिला कर हँस रही थी। साचार वह बाहर चला गया तो मैं मुना कि उसकी बीबी डाक्टर राय से कह रही थी कि जाने बीजिए डा० राय ! यदि सोसायटी के बाबिल महीं हैं तो फिर यहाँ आते ही क्यों हैं ?

और राय न उसकी कमर में हाथ डाल कर कहा 'पर आपकी साड़ी तो आज रग ला रही है।

मेरी साड़ी ? यह गोपीसिंह की भेंट है। तब मैं ठाकुर गोपीसिंह के द्वारे में सोजने लगा। यह व्यक्ति एयाग मुर्दा था। नारी, चाहे वह

गोरा हो या साँवली, चाह वह काली हो या चेचक क दाग वाली एक घार वह उसक जिस्म को काटे बिना नहीं रह सकता था। कत की आदत थी न उसकी। फिर वह मिस्टर बी० सी० मायुर की घमपत्नी को एक साड़ी भेंट कर दे तो कोई बड़ी बात नहीं क्योंकि वह तो सौंदर्य की छान थी।

बी० सी० मायुर बाहर चला आया। मैं उसका पीछा किया। उसके पीछे का बहाना ही मेरे मानसिक परिताप से छुटकारा पान का यत्न था। मैं जानता था कि एक दिन मरी भी ऐसी ही हालत हो सकती है जब मैं उसे साँवला देन के ब्याल से बाहर चला जाना थपकर समझा।

मैं बाहर आकर देखा। मायुर निस्सहाय घच्चे की तरह आँखों में अंध भर कर उस भवन की ओर देख रहा है जिसमें उसकी बीबी नील-साँवलेच का परित्याग करके उसके सम्मान की किल्ली उड़ा रही थी।

मैंने उसे साँवला देन के ब्याल से कहा 'आपको इतना उत्सर्जन नहीं होना चाहिये, मरान तो होते ही रहने हैं ऐसी सोसायटी में। आपकी धप रखना चाहिये।'

मेरे इस प्रश्न से वह घोर घ्याकुल हो उठा। विगलित स्वर में बोला 'आप नहीं जानते मिस्टर भरविब, कि मैं अपनी बीबी के लिये अपनी हर प्रिय वस्तु को छोड़ दिया है। यदि मुझ यह पता चलता कि ब्याह के बाद मरी बीबी मुझे भर्त्सक पीडा पहुँचाएगी तो सच कर्ता हूँ कि मैं ब्याह ही नहीं करता इस रोग को ही नहीं पालता? आह! कितने उत्साह के साथ मैंने इसे सोसायटी में भूव करना सिखाया था। और मैं इसलिये भूव करना नहीं सिखाया कि उसका सितारा बुन्द होने हो वह मुझ ही सोसायटी से बाहर निकान दे।'

उसकी आकुल आँखों में व्यथा की चिनगारियाँ जल उठीं। वह रुढ़ कठ से बोला 'हाँ। मैं अपनी कुल शीशत को समाल कर रखता। उसे धरनी बीबी की प्रयेश इच्छा पर पारी की तरह नहीं घहाता तो

एकाकार होते हुए बेला । उस नवीन अनभूति का अनुभव किया जो मर और नारी के प्यार को धरम सीमा कही जाती है । पाश । उसका मैं भी अनुभव करता । फिर तुमने यह कैसे तिल दिया कि मैं भाग्यशाली हूँ । भाग्यशाली तो तुम हो ?

मैं नता ही गया हूँ पढ़ कर मुझ हसी आई । शायद मुझे यह पता नहीं है कि आज का नता कितना स्वार्थी और बर्झमान होता है ? घीरे घारे यह थड़ा से पूजा जान वाला शब्द जनता-जनार्दन की दृष्टि में दिन प्रतिदिन गिरता जा रहा है । फिर भी मैं बहुत ही महत्वाकांक्षी हूँ, अतः मुझ इस नता' शब्द के पीछे जितनी भी घुराइयाँ दीपी हैं और बाद में करनी होंगी, स्वीकार हैं । मैं महान् बन कर तम्हें प्राप्त करना चाहता हूँ ।

तुम्हारा सोसायटी का क्या हाल चाल है ? गधी ! मैं उस दिन को आज तक नहीं भूला हूँ ।

यह दिन—तब मैं तुम धी० सी० मायुर का उपहास कर रही थी और उसकी बीबी द्वाराय क नंगे में खूर उस उपहास पर साय द रही थी । मुझे यह सब अकदा नहीं लग रहा था । मान लो एक बत्त किसी आदमी के पास पसा न हो और उसन मजबूरी से फटा ही कोट पहन लिया हो तो क्या हुआ ? पर तुम्हारी सोसायटी भी बड़ी विचित्र और एडवांस है । मायुर का पीछे ही पड़ गई । अतः मैं बघारे को रोना धा गया वह रो रहा था और उसका बीबी तिलकिला कर हंस रही थी । साज्जार वह बाहर घता गया तो मैं सुना कि उसकी बीबी डाक्टर राय से कह रही थी कि जान डोजिए डा० राय ! यदि सोसायटी के काविल नहीं है तो फिर यहाँ आते हो क्यों हैं ?

और राय न उसकी कमर में हाथ डाल कर कहा 'पर आपकी साढी तो आज रग ला रही है ।

मेरी साढी ? यह गोपीसिंह की भेंट है । तब मैं डाक्टर गोपीसिंह का बारे में सोचने लगा । यह व्यक्ति एयाग मुर्दा था । नारी चाहे वह

गोरा हा या साँवली, चाहे वह कालो हो या चक्क क दाग वाली एक बार वह उसक जिस्म को काने बिना नहीं रह सकता था। कुत्त की आदत थी न उसकी। फिर वह मिस्टर बी० सी० मायूर की घमपनी की एक साड़ी भेंट कर दे तो कोई बड़ी बात नहीं क्योंकि वह तो सौंदर्य की छान थी।

बी० सी० मायूर बाहर चला आया। मैं उसका पीछा किया। उसके पीछे का महाना ही मेरे मानसिक परिताप से छुटकारा पान का यत्न था। मैं जानता था कि एक दिन मेरी भी ऐसी ही हासत हो सकती है अब मैंने उसे साखना देन के ख्याल से बाहर चला जाना धयस्कर समझा।

मैं बाहर आकर देखा। मायूर निस्सह्राय बच्चे की तरह आँसों में अम्भु भर कर उस भवन की ओर देख रहा है जिसमें उसकी बीबी गीत-संकोच का परित्याग करके उसके सम्मान की खिल्ली उड़ा रही थी।

मैंने उसे साँखना देन के ख्याल से कहा, 'आपको इतना उत्तजित नहीं होना चाहिये, मज्दूर तो होते ही रहते हैं एसी सोसायटी में। आपको धय रखना चाहिये।

मेरे इस प्रश्न से वह घोर व्याकुल हो उठा। विगलित स्वर में बोला "आप नहीं जानते मिस्टर अरविंद, कि मैं अपनी बीबी का प्रिय अपनी हर प्रिय वस्तु की छोड़ दिया है। यदि मुझे यह पता चलता कि ब्याह के बाद मरने बीबी मुझे मर्मांतक पीटा पहुँचाएगी तो सब कहता हूँ कि मैं ब्याह ही नहीं करता इस रोग को ही नहीं पालता ? ब्याह ! जितने उस्ताह के साथ मैं इसे सोसायटी में भ्रूष करना सिखाया था। घोर मैं इसलिय भ्रूष करना नहीं सिखाया कि उसरा सितारा बुन्द होने ही वह मुझे ही सोसायटी से बाहर निकाल दे।

उसकी व्याकुल आँसों में व्यथा की चिनगाहियाँ जल उठीं। वह रुठ रुठ से बोला 'बाप ! मैं अपनी कृष्य जीवन को समाप्त कर रखना। उसे घरनी बीबी की प्रत्यक इच्छा पर पानी की तरह नहीं बहाता तो

आज वह मेरा उपहास नहीं करती सोच मुझ अपने ध्वंग का निगाना नहीं बनात लेकिन अब मैं कर ही क्या सकता हूँ। दुख से मैं यहाँ के मिठाई घर मेरे पास रखा ही क्या है ?'

मैं उसकी धपसा को सहन नहीं कर सका। उठ कर चलन को उद्यत हुआ कि उसने मेरा कंधा पकड़ते हुए कहा ठहरो अरविन्द, तम नहीं जानते, मैंने अपना बीबी से प्यार केवल वासना के बन्गीमूत और उन्मत्त प्रेमी की तरह नहीं किया है बल्कि एक भक्त की तरह उसके प्रति भक्ता भी रखा है। और मेरे जसा समझदार आदमी भी उस भक्ता में इतना भक्त हो गया कि उसे उस नारी के व्यवहार-वर्तव्य के दृष्टि में भी प्यार नजर आया। जब तक मेरे पास पसा था तब तक वह मुझ इतना प्यार करती थी जितना जूलियट अपने रोमियो को करती थी। आज मैं उस प्यार को माद कर गद्गद् हो जाता हूँ। सोचता हूँ कि चाची पहले मुझ इतना प्यार क्यों करती थी। तब तब मेरे बिल में दूध भरी ऐंठन होता है और मैं तड़प जाता हूँ। वह सम्मान और प्यार किसी विनाय उद्भूत से किया जाता था ताकि मैं गरीब हो जाऊँ ताकि मेरी सारी पूँजी की हानि मेरी बीबी बन जाय और मैं पातल बूझ की तरह मांस के टुकड़े के लिए बसा, मांस सगी हड्डी के लिए पूँछ हिला कर उसके सामने भों भों किया करूँ।'

मैंने यही खडा रहना अच्छा नहीं समझा था अतः हम नूय सड़क पर चले आए थे। माधुर के दिल में शायद उस समय भयकर सुफान उठ रहा था। एक हृदय विदारक घटस्थ धपसा थी जो उसकी मस्त-मस्त को पीड़ित कर रही थी। उसकी आँखें भी राजल हो उठी थीं।

मैं भी जितना मूख था कि उसने प्रेम-जान में फत गया और अपनी अपार अनरागी सुदा कर उसके हाथ की कठपुतली बन गया। माधुर पुन बोला, अरविन्द ! मैं सठवे बिल से कहता हूँ कि मैं उस घर भी बहुत प्यार करता हूँ। मैं चाहता हूँ कि वह भी प्यार से बोला करे सुकरा कर मुझ जाना कितना बिया करे, प्रेम से आसिगन में आरुद्ध

कर अपना प्यार दे दिया करे। पर वह इतनी कठोर और हृदयहीन हो गई है कि वह मेरा इतना भी ख्याल नहीं रखती जिनना एक मेम अपने पिल्ले का रखती है? तब न गस्ते में भर जाना हूँ। और उसने लिए अशुभ कामनाएँ करने लग जाता हूँ। मुझ पूरा यकीन है कि मेरी बोलत उसके पास भी अचल नहीं रहेगी। वह उसने पास से भी हाथ के कबूतर की तरह स्वतंत्र होकर उड़ जाएगा तब वह मेरे पास आएगी। तब उसे अपन सौंदर्य का अभिमान भी नहीं रहेगा। वह बड़बड़ी हा जा। उसएगीका तेज और अहम मर जाएगा। उसका उड़ना और फड़फड़ाग बंद हो जाएगा क्योंकि तब वह पखहीन होगी। तब वह मुझ खूब प्यार करेगी, इतना प्यार जितना जब मैं डौलत वाला था तब प्यारती थी। अर्थात् मैं उसी आशा और वक्त के इतजार में हूँ। मैं भूठ नहीं कह रहा हूँ मैं सचमुच उसे बहुत ही प्यार करूँगा। उसकी काली काली जुल्फों की छाया में मुझे बड़ा आनंद मिलता है वह जब हठती है तब मुझ उसे मानने में एक स्वर्गीय सुख का आभास होता है। वह बहुत ही अच्छी और प्यारी है लेकिन आजकल वह कठोर हो गई है कठोर!

मायुर का घर आ गया था अतः वह सलाम करके चला गया। मेरे सिर पर बोझ सा हो गया।

गण्डी ! तुम भी उसी सोसायटी की महान नारी हो ! साक्षियों की सरसराहट में सरा की मावक्ता और नृत्य के आरोह-अवरोह में जीवन का तख्त निकालने वाली उसकी मीमांसा करनेवाली। वास्तव में मुझ तुम्हारी सोसायटी बहुत पसंद है। अहाँ रूपगविता एवं शिक्षिता पत्ना अवन पनि की उतनी ही मार्मिक वेदना पहुँचा सकती है जितनी समाज एक साक्षी असहाय बच्चा को पहुँचाता है। यहाँ वास्तव में द्वेषिया रहते हैं ! यह सब लिख कर तुम्हें पीडा पहुँचान का मेरा कोई ध्येय नहीं है। बल्कि मैं तो बहूँगा कि तुम्हीं लोग भारतीय सभृति क ढकोसले को दूर कर पाश्चात्य सभृति की गरिमा की मंगाल जलापे हुए हो जिस सभृति में शील चरित्र नीति और अनोति को एक भ्रमात्मक राग

अवाध की तरह नरेन्द्रसिंह न पूछा, 'फिर हमें क्या करना चाहिए ?'

अरविंद प्रवचन शांत रहा।

बोलिए।' ठाकुर माहनसिंह न सपोरता से कहा।

'आप जानते हैं इस मामले को रवाना के लिए धारक लोगों क्या करवा दे जाएंगे ?

'जी।'

जनता की सरकार है यदि यह चाहें तो आपको फाँसी की सजा भी दे सकती है। क्योंकि स्थित बबल चुकी है कानून के मापदंड बदल चुके हैं। साम्राज्यवादी और सामन्तवादी सत्ता की समाप्ति के पश्चात् जो जनतात्मक शासन का उदय हो रहा है उसके पूर्णरूप की घोषणा चाहे भले ही न हुई हो पर उस पर धीरे धीरे असल जहर किया जान लगा है। अत्याचार, अत्याचार अनाचार भ्रष्टाचार का भ्रत हो रहा है भ्रत करन के पूरा प्रयास भी जारी हैं। हाँ यग स्थिति और बतमान सत्तारमक अत्याचार-अनाचार जहर जीवित है, लेकिन ये भी क्षणिक हैं और उनमें कबल पूँजीपतियों को ही क्षान किया जा सकता है पर आपको नहीं। क्योंकि आपका यग समाप्त हो गया है। अल्पकाल में आपन अपना पुनर्निर्माण एवं विकास नहीं किया तो घरती से सामन्तों का अस्तित्व ही मिट जाएगा।'

अमौर का उसका लम्बा भाषण ठाकुरों को बिन्दुस अच्यदा नहीं लगा। उन्हें एसा मानूम हो रहा था कि यह विविध व्यक्ति कितना धीर और गम्भीर है तथा आग सगी और क्रुभाँ खोदन वाली जान से भी एक बड़म आग बग्न हुआ है। खून हा गया है और यह भाषण दे रहा है। व दोनों अक्षय हो उठ पर रहे निविरोध ही।

अरविंद बोलता गया इस दोषण और उत्पीड़न प्रणाली का मूरज क्षितिज के धीर पर अन्तिम भन्व दिख रहा है। सामन्तवाद का राम घाल—ईश्वर न ध्या-यङ्, राजा-रव, अंध-नाथ बनाय है—भी भव

निष्प्रभाव हो गया है। हम राणा प्रताप की सन्तान हैं या हम चित्तौड़ की गान हैं—य मारे भी अब कमजोर और धोद पड़ चुके हैं। कहन का सात्पय यह है कि स्थिति बहुत बबल चुफी है। इस बदनी हुई स्थिति में आप को कोई भी ऐसा कबम नहीं उठाना चाहिये—जो आप की मान प्रतिष्ठा के लिए घातक मिट्ट हो अथवा आप को एक असह्य अर्थाभाव दे जाय।

‘फिर आप कोई उपाय यतलाइये न?’ नरेन्द्रसिंह न भँभला कर कहा।

‘उपाय बता दूंगा पर नकद पाँच हजार रुपय लूंगा।’

‘पाँच हजार?’ नरेन्द्रसिंह और मोहनसिंह की आँखें फट गईं। पर अरविंद क भाषण का धातक उन पर पूरे तोर पर छा गया था।

‘साखी का काम हजारों में निकालता है और आप में देख रहा हूँ कि बोरे भर की जगह मुट्ठी भर भी नहीं देना चाहते। हालाँकि मैं यकील नहीं हूँ पर मैं इतना विश्वास क साथ कह सकता हू कि स्वय भगवान इस धरती पर उतर आयें तो भी आप को वे नहीं बचा सकते। बचा सकता हूँ तो केवन मैं सिफ मैं।’

अरविंद इतना कह कमरे में घुलकवमी करन लगा। उसक उठते कदम उन दोनों को बाबाल कर रहे थ। मोहनसिंह ने नरेन्द्रसिंह की ओर भवभरी दृष्टि से देखा और नरेन्द्रसिंह न विस्मय से। अरविंद ने बड़ी सफाई से उन दोनों की ओर देखा और फिर दीवार पर लग एक प्राचीन राजस्थानी शयी के चित्र ‘दोला माह’ पर दृष्टि गडाते हुए बोला यह पाँच हजार मैं अपन लिए नहीं माँग रहा हू। मुझ रुपयों से मोह नहीं प्यार नहीं नह नहीं। लेकिन मैं कतव्य से विमुक्त भी नहीं हो सकता। धर्ममाओं न कहा है कि माता पिता की सेवा ही सब से बड़ा धम तप और मोक्ष है यदि मैं इस सेवा से बधित रहा तो मेरा कल्याण कसे होगा? मैं इस भव-बधन स मुक्ति कसे पाऊंगा?’

मोहनसिंह ने तपाक स कहा ‘हम पाच हजार देंग?’



“इस प्रदान की कोई आवश्यकता नहीं है। मुझ बाहरी आत्मीयता में सदा खोललापन नवर आता है। एक बात को ध्यान मन में घड़कन की तरह बसा खींचिय कि मैं आप पर कोई घृसान नहीं कर रहा हूँ यह मेरा प्रत्युपकार है पाँच हजार की दापसी है।

अरविंद कुछ देर तक विचारों में निमग्न रहा, फिर बोला मैं जानता हूँ कि गोली केसर अद्वितीय सुन्दर युवती है। आप भी स्वीकार करते हैं। और मेरा मन कहता है कि उसक सौंदम्य पर प्रत्येक व्यक्ति सहज ही में आसक्त हो जाता होगा। उन आसक्त व्यक्तियों में आप का और मेरा भी नाम आ सकता है।’

मोहनसिंह की आँखों में वासना मात्र उठी। वह भावेश में बोला ‘जो हाँ मैं भी देखकर मस्त हो गया था।’

अरविंद ने पत्नी निगाह से उन दोनों को घूरा। अपने बायें हाथ की घटकी में अपना निघता होंठ एक पल के लिए पकड़ा और बोना ‘स्त्री यदि वह रूपयुती है तो विष भरी कटार है—फिर भी पुरुष अथा होकर स्पश करता है तडपना है और मर जाता है। ठाकुर सा। यह वगन की बातें हैं बड़ी गुदतम हैं। यदि आदमी ज्ञानानुसार इन बातों को अच्छे और सही ढंग से विस्तरेण कर से तो औरत के बनावटी जाल में कभी भी न फँसे। आज एक औरत ने आपके परिवार को दुर्घटना में डाल दिया है सवनाग की भट्टी में भोंक दिया है। इन दो मौतों से वह निर्भय हो गई है। क्योंकि यहाँ का भद्रिय उसके जिस्म को दरिद्रों की भाँति मोचते थे और उसे भर्मान्तक पीड़ा पहुँचाते थे। आज वह स्वतंत्र हो गई निर्वाह हो गई, दुःख रहित हो गई। आप गाँत रहिए बोलिए नहीं जो मैं कहता हूँ बस सुनते जाइए। आप इस चिन्ता से बिसकुल मुक्त हो जाइए कि आप पर कोई आपत्ति या विपत्ति आ सकती है। मैं कह रहा था एक नारी के पीछे आपके परिवार में खून-खराबी हुई एक शीपवी के पीछे महाभारत का समाप्त हुआ, एक सीता के पीछे सका का माग हुआ, एक पत्थिनी के पीछे गौरवपूज

नीति-स्तम्भ बिसौड़ मसान बना । कहन का तात्पर्य है कि स्त्री सब दुख का मूल है । वह नीति में भी बड़ी निपुण होती है । कहते हैं—

उदाना वेद यच्छास्त्रं यच्च वेद बहस्पति ।  
स्वभावेनव तच्छास्त्रं स्त्री बुद्धी सुप्रतिष्ठितम् ॥

जिस नीति शास्त्र को ब्रह्मगुरु गुरुभाष्य जानते थे तथा जिस नीति शास्त्र को बहस्पति जानते थे, वह नीति शास्त्र स्वभाव से ही स्त्रियों की बुद्धि में रहता है । [ हि० प १८१ ]

इस पर आप प्रश्न करेंगे कि कसर इतनी भयंकर और घतुर नहीं है यह ठीक है । लेकिन वह सब एसी नहीं रहेगी । जमान की हवा से आज तक कोई नहीं बचा है इसलिए मविष्य में आप को इस नारी से सावधान हो जाना चाहिए ।

अब मैं आप से जो कहता हूँ उसे ध्यान से सुनते जाइए । गायब आप कसर को जिंदा रखना चाहेंगे । आपको लिए नारी उपभोग की वस्तु है और कोई उपभोग इतना क्रूर नहीं होगा कि वह अपनी उपभोग की वस्तु का नाश कर दे । सब मैं आपको वो सुख इन पाँच हजार में दूंगा । पहला—कसर मौजधान सुंदरी और दूसरी इस समस्या से मुक्ति । आप पुलिस के सामने सिर्फ इतना ही कहिए कि धूर्डसिंह ने मेरे दोनों बच्चों को जान से मार डाला । इससे आप को लाभ होंगे—धूर्डसिंह का हक भी मारा जाएगा और आपको कसर भी मिल जाएगी । अपने गोलों का मुँह पसों से बन्द कीजिए शक्ति से नहीं । अब पता ही सबका बाप और माँ है ।

दूबते को तिनक का सहारा मिल गया ।

ठाकुर नरेन्द्रसिंह ने भ्रष्ट कर अरविंद के पाँच पकड़ लिये और गिड़गिड़ा कर कहा आप मनुष्य नहीं देवता हैं साक्षात् देवता ।”

अरविंद न पाँच छुड़ाकर कहा ठाकुर सा ! देवता बनना आसान है और आदमी बनना मुश्किल । क्योंकि आदमी बनने के लिए कठोर

तपस्या करनी पड़ती है अपनी प्रत्यक्ष इन्द्रिय व लिप्ता को धन में करना पड़ता है वासना का त्याग करना पड़ता है। और देवता मनन के लिए सिर्फ धिवेन को पुष्ट और घाणी को मधुर व संयत करना पड़ता है।

इसके पश्चात् भरविद न उनकी ओर ताका भी नहीं सीधा डरे व बाहर हो गया।

\*

\*

\*

६

अपने कमरे में पहुँच कर उसन उमाद भरा निश्वास छोडा और मोटों को जब से निकाल कर मेज पर जार-जोर से पटकन लगा। धए भर तक वह उन मोटों को अय भरी दृष्टि से देखता रहा और बार में खगी भरे स्वर में जोर से पुकार उठा 'जगिया, अरे ओ जगिया।

जगिया गीघ्रता से कमरे में आया अम्मा अन्नदाता।

'देख हमारे लिए जन्दी से खाना तो से आ।

'ओ ह्वम।'

सुन आज सुम में बड़ी फसों देख रहा हूँ।

'नहीं अन्नदाता हम नौकरों में सदा ही एसी फर्नी रहती है पर आज आप के रग कुछ और जान पड़ते हैं। जान पड़ता है कि आज वहाँ से गड़ा धन मिल गया है।'

हाँ गड़ा धन नहीं बन्द धन। से यह दस का मोट, और सेगा ?

'नहीं अन्नदाता नहीं यह बहुत है।

बस।'

'हाँ अन्नदाता, आप तो साक्षात् भगवान मालूम पड़ते हैं।

'जा खाना ले आ।

जगिया चला गया।

अरविद उसके जाते ही बिस्कुस गम्भीर हो गया। गरीब का सोन

भी कितना छोटा है ? आवश्यकता से अधिक चाहते ही नहीं । एक ये पन वाले हैं तुम्हारा के भवत सासब क पुतले, भरे पेट के भूखे ।

इन्सान इन्सान में कितना अंतर है ?

जगिया खाना रब गया । अरविन्द न गीघ्रता से दो-चार कीर लिए और चाँद को खत लिखने बठा ।

भया !

तुम्हारे कई पत्र मिले और मैंने किसी का भी उत्तर नहीं दिया । मेरी विवगता से तुम परिचित हो ही । झूठ स्वाभिमान में वास्तविकता को छिपाय में किना बनन वाला हू ? इसी बनावट में मैं तुम्हारी बेवना क उठते हुए गोलों की पीडा प्रस्तर की तरह भूक घना सहता रहता हूँ, तडपता रहता हूँ । तुम उदारतावादी हो । मेरी गलतियों का उदघाटन नहीं करते बल्कि अपन अंतर में उसे कसक की तरह बसाय रहते हो । यह उदारता हमारे स्नह की आन्तरिक घारा को गुप्त करती जाती है । यदि तुम चाहते हो कि तुम सुखी बनो तो मेरी प्रायना है कि तुम इस उदारतावाद के चक्कर स भुवस हो जाओ ।

तुम न सिखा कि पत्नों का अभाव कभी-कभी मुझ विगुब्ध कर देता है । सच है भया तुम्हारे जसा ईमानदार आदमी आज जानवर बन कर जीवित रह सस्ता है आदमी बन कर नहीं । आदमी को तुम्हारे बेश में जीने का हक ही नहीं है । मैं भी अनुभव करके देखा है कि जब तक व्यक्ति प्रचलित सापनों को चाहे वे अच्छे हैं या बुरे, प्रयोग में नहीं लाता है तब तक वह अपन जीने का हक प्राप्त नहीं कर सकता । जीने क हक को प्राप्त करने के लिए आदमी को बहुरूपिया बनना पडता ह । पक्का अवसरवादी होना पडता है । यदि वह इस अभिनय में असफल है तो वह हर क्षण में असफल है ।

अब तुम्हें गरीबी का सामना नहीं करना पडगा । तुमन अपने अरविन्द को घपना लून पिला पिलाकर पढ़ाया लिखाया है । अपनी पत्नी को बट्टु घातों और व्यय सह-सह कर उसकी इच्छाओं को पूरा किया है ।

और अब तुम्हारा भाई समय हो रहा है तुम्हें उस दमा मारो स गिन गिन कर बबले लन चाहिए । एक-एक रूपया फेंक-फेंक कर उसे वापस ताने सुनाने चाहिए ताकि उसका अहम उसके आक्रोश की जलन में मोमबत्ती की तरह रह रहे, तड़प तड़प कर जले । मेरा विचार है कि अहम क जसन क याद वह बचस मारा रह जायगी फूल-सी कोमल और समु सी विंगल हृदय वाली । अभिमान क कांड न ही उसक और तुम्हारे जीवन को तिक और बिरस बना रखा है । उस कांड के टूट जान पर वह तुम्हें अपार प्यार देगी अपन उमाद भरे जीवन में तुम्हारी हर बदन को दिया कर मुझ में बदल देगी । वह बहुत अच्छी है भद्रप ई पूज्य है ।

इस व्यस्त और सघनमय जीवन में मुझ 'निम्मू का मुझ इस तरह दिखलाई पड रहा है जिस तरह गान्ति और मुझ का सूरज प्रभात के आगमन पर पूरब दिशा में बिहता है । वह सूरज कितना निन्द्य और मुखप्रद होता है कि रगन-मात्र से महान सतोप होता है । बसी ही पवित्र सूरत है अपनी निम्मू की । सोचता हूँ— जीवन क समस्त बपन तोड कर उस महान मुझ के लिए घिरन्तन घटन में घसा आऊ । लेकिन मेरी महत्वाकांक्षा मुझ सदा ही दुबल कर बेती है ।

मे तुम्हारी सेवा में अपन उपाजन किए हुए धन का एक बडा हिस्सा यानी तीन हजार रुपए भज रहा हू । इन रुपयों को मैंन पाप स नहीं कमाया है । पुण-साधन ही इनक अजन में सहायक रहे हैं ।

एक कहानी याद आ गई ।

सबस छोटी छोटी होती है छोटी की बिड़िया अपनी बाब में पकड कर भयल कर सेनी है । बिड़िया को बाज भपट कर मार देता है बाज को गिकारी मार देता है और गिकारी खूँक गरीब है साबेबार है इस लिए वह अमीर के द्वारा मार दिया जाता है । हाँलाकि यह पाप है पर इस ईन्वर के माम पर सुट्टि का नियम समझ कर समाज में मान्यता दे दी गई । ऐसे ही इस अम की धुरी घसती रहनी है ।

'जीवो जीवस्य जीवनम् ✓

रुनेहमयी भाभी को प्रणाम । निम्नू को प्यार ।

तुम्हारा पुत्रवत

अरविंद

चाद को पत्र लिख कर अरविंद बहुत देर तक उमन और मौन बठा रहा । न जान क्यों उसे अपनी इस उन्नति और प्रगति से सतोष नहीं हो रहा था । एक अभाव उसको खटक रहा था वह अभाव या गची का । बिना गची वह अपने को अपूर्ण समझता था । तब वह अपनी अपूर्णता को पूरा करने के लिए आकुल हो जाता था । तब उसके समक्ष आशाओं का विस्तृत क्षेत्र फल जाता था जहाँ प्रत्येक वस्तु सुखप्रतीत होती थी, जहाँ मनुष्य की महत्वाकांक्षा कुलाँघे भरती हुई नाच सकती थी जहाँ मनुष्य अपनी बुभुक्षित वासना की सरलता से तृप्ति कर सकता था ।

अरविंद उठा और कमरे में घुल कर कदमी करने लगा । उसके समक्ष वह घटना साकार हो उठी जो अयाय की नाँव पर आधारित थी । जो मानवता के बस पर अपने निदयी कदमों को खूँखार कील के सहज गाढ़े हुए थी । वह विचलित हो उठा । दुनिया में कितने घण्टित और विचित्र पाप होते हैं । वह स्वतः ही बडबडाया में भी कितना पापी है कितना घण्टित है कितना पतित है ? पासवान के सडके धूँडसिंह का हत्यारा कौन है ? मैं अरविंद ही । वह अरविंद जो निमित्त बुद्धि जीवी और गरीब है । पूजी का मोह आदमी को कितनी विषम परिस्थिति में डाल देता है कितना सकीण और पतनो-मुखी बना देता है ? केवल अपने व्यक्ति को पूजा और सुख के लिए आदमी परत्यर-सा बठोर और साँप-सा विषाक्त हो जाता है । बचारा धूँडसिंह ! जीता जागता इन्सान, माँ की आँसों का तारा जिसकी रगों में जवान अरमान अठसलियाँ करते होंगे बल से अपराधी करार दिया जाकर जल के भयानक सॉलियों में बंद कर दिया जाएगा । कानून अपनी अधी परम्पराओं का

अनुरण करके उसे मौत की सजा दे देगा। सत्य झूठ के पर्दे में छिप जाएगा अधवार प्रकाश को प्रस सेगा विय अमत को प्रभाव हीन कर देगा। आज के यात्रिक और पूत्री प्रधान युग की यही विणयता और यही सत्य ह। यह सत्य सक्रामक व्याधि-सा हर मानवी मस्तिष्क में आरोपित होकर उसे पयध्रष्ट बना रहा ह।

यह क्षण भर क लिए विमूढ़ हो गया। दूसरे क्षण अपन तपे स्वर में कहा, 'युग का अभिगाप आज के निवासियों को एक ही विचार देगा—उसके लिए इन्सान की कोई कीमत नहीं। यह जय चाहेगा तय अपन विपत्ती का कीट-पतंग की तरह मसल कर रख देगा। उस समय उसक चेहरे पर कदना के भाव भी नहीं धाएंगे। पन्घाताप उसके हृदय को कचोटगा नहीं। कितना सधुतम रूप होगा—मानव का? दो भले काम करके यह अपनी अक्याई का डका बजाएगा इससे उपरान्त यह धपके से महापाप कर बठगा? यह महापाप प्रकट नहीं होगा।

अरविंद सुदृक कर अपन विस्तरे पर पड गया। उसके मुल पर अत्रसाद ओम ग्लानि और ध्यया के कई भाव सधय करते हुए जान पड। यह अवन हो उठा "आदमी कितना बदल गया ह ?

एक बार चाँद ने कहा था 'सोना तेरा अरविंद एक रोज जट्टर देवना बनगा। यह साधारण व्यक्ति नहीं ह और असाधारण ब्यक्तिद्व एक दिन महत्व धारण करता ही ह। पवित्र भावना पवित्र आदग और पवित्र विचार का यह आगार ह। मैं सच कहता हूँ—यह एक दिन अपनी इही अक्याइयों को लेकर देवता बन जाएगा। तब तुम उसे उतना ही प्यार करोगी कितना मुक करती हो।

सब भाभी तमतभाकर बोली थी भ्रौपत्री में रह कर महल के सपन देखना बहुत ही सरल और सुलप्रद होता ह। आज पसा ही परमात्मा बना हुआ ह बिना पसे वाले देवताओं के मबिरोँ पर कबूतर अपन घोंसले बनाते हैं और मूर्तियों पर घूहे माचते हैं।

पसा ?' अरविंद भारी स्वर में विल्लाया।

तब उसके मुख पर से सभस्त ग्लानियाँ हवा हो गई । उसने अपने जीवन की महान पवित्र भावना को, जिससे वह सत्तार में अपने आपको एक कल्याणकारी विचार द्वारा समा देना चाहता था त्याग कर पसा पर के-द्री भूत कर दी ।

वह उठा और उसने अपनी छाया में निःसंकोच निम्नलिखित वस्तियाँ लियीं—

युग खल गया ह । आज वही दयता कहलाता है जो अपने निम्नतम एवं घृणित कृत्यों द्वारा अपने उद्देश्य तक पहुँच जाय जिसकी दृष्टि सब अपने उद्देश्य पर जमी रहती है । एक मनुष्य का जीवन उसके लिये उतना ही महत्व रखता है जितना तूफान के लिये तिनका ।

\*

\*

\*

१०

भूरी आँखों वाले एक युवक ने सवेरे सवेरे अरविद के कमरे में प्रवेश किया । अरविद चाय पी रहा था । अपने हाथ की उँगलियों से धीरे धीरे मेज की बजा रहा था । उसने नीले रंग की लुगो पहन रखी थी, सडोकेट बनियान । उसकी पलकें अब भी बोभिल थीं ।

युवक ने ममस्कार कर एक क्षण उसके सामने खड़ा था । पत खोले बिना ही अरविद ने अत्यंत नम्रता से उसे बठन का संकेत करते हुए कहा 'आप बठिए और चाय पीजिए ।'

युवक निष्पत्ता का स्थान करके बोला 'मैं अभी चाय पीकर आया हूँ । मुझे मल्होत्रा जो न भेजा है ।'

अरविद ने एक बार उस युवक के मुख को ओर देखा । निरागा संश्रान्त-बलांत वह युवक स्थिर बठा था । उसके नश्रों में व्यथा थी ।

वह बहुत ही मधुर होता हुआ बोला 'देवा भया तबल्लुफ करने



की कोई जरूरत नहीं है। इस अपना ही घर समझो और जम क चाय पी लो। भूख लगी हो तो टोस्ट मगवा दूँ ?

युवक उसके व्यवहार से गदगद हो उठा। अरविद उसके मन के भावों को ताड़ गया पुकारा 'जगिया अरे ओ जगिया दो टोस्ट।

युवक के हृदय में दुःख की घटाए उमड़ रही थीं नील से टकरा कर दुःख पिघल उठा और आँसुओं की राह बहन लगा।

अरविद उसके अंध देखकर कहण हो उठा। आँसु बँध स बोला 'पगले कहीं के रोता है जवान होकर साहस खोता है। छि-छि छि, धड़त धड़त घात है। हन भी यदि तुम्हारी तरह रोना शुरू कर देते फिर उन्नति कस करते ?

आप खत पढ़ सीझिए,' उसन रु थ बँध स कहा।

"उसकी जरूरत नहीं है। इस खत में देवीप्रसाद जी मल्होत्रा म तुम्हें काम देने के लिए मुझ लिखा होगा। लिखा होगा पाकिस्तान में इस परोब के पास अच्छी सम्पत्ति और सती-बाड़ी थी। हँसता-गाता परिवार था सुख-समृद्धि थी। पर यहाँ हिन्दू-मुसलमानों का दगा हुआ। काफ़िरी ने इसका सबस्य लूट लिया। आप उसकी सहायता कीजिए। उसन एक सम्झा साँस लेकर पुन कहा, "मैं तुम्हारी जरूर सहायता कहूँगा। जगिया—टोस्ट रख दो और आओ। तुम घाय पोओ न गम न करो। मैं तुम्हें सजित नहीं कर रहा हूँ। मैं हर युवक को जिसकी नसों में गम खून बौड़ रहा है अपना भाई समझता हूँ। यताओ तुम्हारा नाम क्या है ?' उसन घाय का प्यासा मह से लगाकर एक घुस्की भरी।

' किसन। उसन बिलकुल धीमे से कहा।

' किसन तुम जवान हो तुम्हें इतना निराग नहीं होना चाहिए। उसन हँस कर कहा तुम्हारे ही नाम के यग-नता धीकृष्ण की भाँति तुम अपना मूल्यांकन करो। सोचो, समस्त कम अन्न धनरूपति मय मति जल, धन ममन मायु सत्य और असत्य उत्पत्ति और

प्रलय, बव और पवित्र ओकार में ही हूँ। इस प्रकार के विचार मनुष्य की सघुता और सुच्छता को मिटा कर उसका उत्कथ करते हैं। और तुम अभी से बिलकुल निराग हो गए हो! नहीं आदमी को कुछ भी बुझाध्य नहीं समझना चाहिए समझ।

किसन न श्रद्धा से उसे हाथ जोड़ लिए "आपकी बराबरी मैं क्या कर सकता हूँ।'

' फिर वहा हीन भावना। जाओ, बल से महासभा के दफतर आ जाना।'

बहुत अकड़ा।' युवक चला गया।

अरविद गौचादि से निवृत्त होन के लिए चला गया।

सगभग एक घट में वह सभी कार्यों से निवृत्त होकर निरुत्ता तो अपने कमरे में मोहन सिंह को उसने किसी युवती से इत्तचित होकर घातधीत करते पाया। युवती उसकी ओर पीठ किए हुए थी। वह उसे पहचान नहीं सका पर जैसे ही मोहन सिंह न देखा वैसे ही वह आह्ला दित स्वर में बोला लीजिए अरविद जी जा गए हैं।

युवती न गदन घुमाई। अरविद जरा भी चंचल नहीं हुआ। सपत स्वर में बोला, 'शची ?

शची न तपाक से कहा 'गुड मॉनिंग ।'

कब आई ? अरविद ने उसे पूरी तरह घोलने भी नहीं दिया क्योंकि उसे भय था कि कहीं शची उसे 'डियर' न कहवे।

"सुबह।

"सामान कहाँ ह ?'

"नीचे।

"ठाकुर साहब आपका परिचय इनसे हो गया होगा ?

' इतना तो हो ही गया कि यह आपकी कोई परिचित हैं मोहन सिंह न तनिक मुस्कराते हुए कहा।

किर मैं परिचय करा ही देता हू वह आराम से बठते हुए बोला

'घाय हैं मेरे बड़े भाई मिस्टर घाँव के मित्र बननील धीरे-धीरेकुमार की बहन, मिस गजो बो०ए। धीरे आप हैं हिंदू महासभा के महान नेता ठाकुर मोहनसिंह जी। ठाकुर साहब मेहमान की खातिर तवाचा फौजिय।'

'क्यों नहीं, मैं अभी घाय बिस्कुट और टोमट भिजवाता हूँ, कहकर ठाकुर चला गया। उसके जाते ही अरविंद गजो के पास बैठकर बोला, "भाज मैं तुम्हें अपने पास देखकर बहुत खुश हूँ।"

'पर तुम्हें मेरा परिचय अच्छी तरह देना चाहिये।

'सुरा तो नहीं दिया ?

'पर यह भी तो नहीं कहा कि तुम मेरे मित्र हो।'

"भाजकल मैं राजनीति और धर्म के बलदल में हूँ। तुम्हारा दिया हुआ इन्द्रधनुष का नाम मुझ बहुत प्रिय है।

"सच ?

विश्वास क्यों नहीं होता।

'राजनीतिज्ञ हो न, इसलिये।'

दोनों सिसबिलाकर हस पड़े।

घाय था गई थी। अरविंद ने उसकी ओर घाय बढ़ाते हुए कहा, 'पीओ।'

'और तुम ?

"मैंन अभी पी है।"

'अकेली मैं भी नहीं पीऊंगी उसने मसल कर कहा।

"जब बच्चे की तरह टडोगी तो मुझ भी पीना ही पड़ेगी, कहकर उसने भी अपने लिये घाय का कप बनाना चाहा।

'मैं बनाऊंगी तुम्हारे लिये ?

"क्यों ?"

तुम्हें प्यार जो करती हूँ' इतना कह गजो ने एक भावक दृष्टि उस पर फेंकी। यह ब्याकुल हो उठा। उसका हाथ अनायास ही उसकी

घोर बढ़ा। उसे स्पष्ट करना चाहा कि वह बोली "पराया मकान है।"

अरविद गची का मकेत समझ गया। सभलता हुआ बोला, 'कसे माना हुआ ?'

"मोसी ने धुलाया है एक बहुत जरूरी काम से, पर मैं वहां नहीं ठहरूंगी।

क्यों ? उसने आश्चर्य से पूछा।

'इस लिये कि वहाँ व्यक्तिगत स्वतंत्रता का हनन होता है। वहाँ पीना पिलाना मना है और मुझ सराज बाबू के यहाँ जाना है। वहाँ तो सभी पीन पिलान वाले हैं।

अरविद चुप रहा।

गची न चाय समाप्त करत हुए कहा चुप क्यों हो गए ?

'सोच रहा हूँ गची कि मुझ तुम्हारी उन हरकतों से डर क्यों लगता है ? यह बिलकुल गनीर हो गया, 'मैं घुरे से घुरे पागविक से पाशविक घोर उत्तम से उत्तम काय का इतनी निभयता घोर धय से कर लेता हूँ जैसे मेरे कान पर जू तक भा नहीं गेगी हो पर तुम से मुझ बराबर भय लगता है। तुम्हारा प्रत्यक संकेत मेरे मन में सन्देह का प्रादुर्भाव कर देता है।'

यह मेरा परम सौभाग्य है।

नहीं मेरे चरित्र की दुबलता है नतिक कमजोरा है।

यह क्षिप्तक्षिता कर हँस पड़ी तम भावुक हो और जब भावना में बहने लगते हो तब तुम्हारा घ्रात्म विश्वास निबल हो जाता है। अरविद ! यह बिलकुल सही है कि तुम मुझ प्यार करते हो और मेरा घोर तुम्हारा प्यार यदि इस दायर में सतुष्ट है तो उस बड़ दायर में जिस हम पाश्चात्य सम्प्रदाय से प्रभावित सोसायटी कहते हैं सन्तुष्ट रह सकता है, अटूट रह सकता है। उसन अरविद पर अपनी घ्राँखें जमाकर मध्यम स्वर में कहा, "हाँ वहाँ तुम्हें सहिष्णु बन कर रहना पड़ेगा। यह स्नान करन चली गई।

अरविंद काफ़ा देर तक विचारता रहा। उसे फ्रांस के सुप्रसिद्ध यथायवादी लेखक होनोर द बालज़ाक के उपन्यास 'मोल्ड गारियो की एक पात्री बाई काज़ंटस' के शब्द स्मरण हो उठे 'जब तुम प्रेम करो तो ऐसा स्त्री धुनो जिससे तम सब प्रेम कर सको कभी किसी स्त्री को धोखा न देना। लेकिन अरविंद देख रहा था उच्च वर्ग में प्रचलित प्रेम प्रणाली इस पवित्र वाक्य से बिल्कुल विपरीत पड़ती है। पुरुष स्त्री और स्त्री पुरुष पर हार्दिक विश्वास कर ही नहीं सकता—निष्ठा के आधार पर उदार पधियों की तरह परोक्ष गिकायत की धत्ति लिय हुए हैं। पति पत्नी के समस्त साध्वी और आज्ञाकारिणी बन कर उत्कट प्रेम का परिचय देती है पर पीछे से उसके आर्थिक प्रभाव क रोन रोती है उसकी सजीव मनोवृत्ति की खिल्लियाँ उड़ानी है और धर्म विशय की मान्यताओं क विरुद्ध एक शब्द के उच्चारण का विवृत रूप में उद्घाटन करती है और पति अपनी पत्नी क स्वतंत्र प्रेम पर करारे ध्यंग कसता है उसकी धारि त्रिक एवं नतिष बुधलताओं की कुसटा या दुग्धरित्र के नाम से पुकारता है उसक शराव पीन और अय पुरुषों के आलिंगन में आवड होकर बाल डोस करन को वह अमभारतीय संस्कृति कहता है। जहाँ इतना तीव्र विरोधाभास हो वहाँ स्त्री और पुरुष क प्रेम की सफलता असम्भव जान पड़ती है। सहज मानवीय प्रेम के उदगम की बात हवाई जान पड़ती है।

दाघी न कमरे में प्रवेश कर लिया था। उसकी कीमती और घमकदार साड़ी उसने मुडोल तन पर बहुत ही प्रिय लग रही थी। घघरों की निग्दप मुस्कराहट मन को मोह रही थी। वह उस अनिमेय दृष्टि से डरता रहा। उसने निरन्तर बेसन को वह सह नहीं सकी। आकुल स्वर में बोनी इस तरह क्या देख रहे हो ?

तुम्हारे रूप को। गघी सब कहता हूँ, तुम्हारे तन और मन पर घेरा ही अधिकार रहेगा। वह हड़ना से बोला।

बगब। वह सप्रिचट घठती हुई बोली यह तम सी-दय से अभिभूत हो कर तो नहीं कह रहे हो ?”

‘नहीं ।

‘फिर निश्चित समझो, मैं तम्हारी ही रहूँगी ।’ शचा न उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया । वह उसे विडम्बना पूरा निगाहों से देखन लगी । अरविंद का प्रेम-स्तावित अन्तराल उसे नहीं समझ सका ।

\*

\*

\*

११

दिन के पाँच बज हिंदू महासभा के विनाय कायकर्त्ताओं की गुप्त बैठक थी । सभा का स्थान ठाकुर मोहनसिंह की कोठी ही बना गया था । विषय रखा गया था—पाकिस्तान के प्रति महात्मा गांधी का पक्षपात पूरा खयाल तथा सभा का भविष्य में विनाश सगठन ।

अरविंद चार बज तादी का कुर्ता पाजामा पहन कर बैठकस्थान में आया । एक अपरिचित कार वहाँ खड़ी देखकर वह अनायास ही उस ओर बढ़ गया । जगिया का पूछा, यह कार किस की है ?

बाबू जी, सेठ हरप्रसाद की ।

‘ठाकुर साहब से कहो कि अरविंद बाबू आना चाहते हैं ।

जगिया न घापस आकर कहा, ‘ठाकुर साहब न निवेदन किया है कि वे कुछ व्यक्तिगत मामलों पर विचार विमग्न कर रहे हैं अतः वे आप से क्षमा मांगते हैं । घाप बाहर ही उनकी प्रतीक्षा करें ।

अरविंद घनचाप वहाँ पर बैठ गया ।

उस समय साम्राज्यवाद भारतीय पूँजीपतियों के हितों की रक्षा नहीं कर पा रहा था । और नही यद्य के अन्त काल तक ब्रिटिश सरकार और भारतीय पूँजीपति घग के बीच कोई कायदे से सौदा ही हो रहा था । यह सत्य है कि ब्रिटिश सरकार ने उनमें समझौता करन का कई बार प्रयास भी किया था और उन्हें कुछ महत्वहीन सुविधाएँ भी दी थीं पर

उससे पूजीपात वगैरे सन्तुष्ट नहीं हुआ, फलस्वरूप वह कांग्रेस के सगठन में शामिल होन लगा। उसे दिपे रुज से गति पहुँचाता रहा।

और आज जब वेग स्वतंत्र हुआ तब भी भारत का पूँजीपति वगैरे जमींदारों, रियासती मरदों को अपन साथ मिला कर भारत के सभी प्रकार के उद्योग को हथियाना चाहता है एक बड़ा राजनीतिक गठ बना कर देश की सत्ता को अपन नियंत्रण में करना चाहता है।

कदाचित् यह एकाकी सम्मेलन इसी बात का घोटक है।

यह घटा रहा।

लगभग आधा घटा घाब घे सज्जन निकले। यह सज्जन जिन्हें अरविंद पहचानता था, मिल मानिक व और कांग्रेस के सक्रिय कार्यकर्ता भी।

उनके जोते ही अरविंद ठाकुर के पास गया। ठाकुर ने कहा 'अरविंद तुमसे एक गभीर समस्या पर परामर्श करना चाहता हूँ।'

अरविंद अपन स्वभावानुसार ऐसे अवसरों पर नितान्त गभीर और निश्चल बन जाता था। उसकी आकृति पर कठोरता आ जाती थी।

ठाकुर ने उससे उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना ही कहा 'मुझे विश्वास है कि तुम मुझ सहो सत्ताह लोग ?'

'ठाकुर साहब !' अरविंद जनसिधों से देख कर मुस्कराया, 'मैंन धायको कभी भी गलत सत्ताह नहीं हो। जीवन की राह में जिस निमी का साथ हो उस पूरणया सच्चाई के साथ निभाओ, यही सच्ची मित्रता है। स्वायत्तता, स्वायत्त परामर्शता और उचित धरपर पर धन करना यह पापियों का काम है नीच लोग ही ऐसा करते हैं। भगवान् उनकी आत्मा कभी पूरा नहीं करते।'

ठाकुर की आँखों में सन्देश की छाया भलकी। आँखों की सनिक धकिम करके बोले 'तेद हरप्रसाद जी आय व कह रहे व हिन्दू महा समा से 'यागपत्र दकर कांग्रेस में सम्मिलित हो जाइए। सत्ताह सत्ता से हो हम धपने अधिचारों स्वायत्त और हितों की अधि रदा कर सकते हैं।'

धरविंद ने कहा, "जहाँ तक जर्मादारी उन्मूलन और उद्योग के राष्ट्रीयकरण के न होना देना का सवाल है, वहाँ तक मैं सेठजी की राय की कद्र करता हूँ पर भ्रवानक किसी सस्या से त्याग पत्र देकर दूसरी सस्या में सम्मिलित हो जाना अपन आपकी को जनता की नजरों में नीचे गिराना है। मेरे एक सूत्र को हृदय में महामन्त्र मान कर बसा लीजिए कि जनता जिसको अपनी नजर से नीचे गिरा देती है उसे उठने नहीं देती और राजनीति जिसे छोड़ देती है उसे वापस नहीं ग्रप नाती। इसलिए हमें अपना हर कदम इतनी सावधानी से उठाना चाहिए कि हमारा क्षतया जरा भी कम न हो।

‘ फिर ?’

समय की प्रतीक्षा कीजिए।

इसके बाद उसने एक प्रकाशित विज्ञप्ति ठाकुर साहय के हाथ में देकर कहा, आज मैं सभा में उपस्थित नहीं हो सकूँगा, अत्यंत आवश्यक काय से मुझ बाहर जाना है। कृपया आप मेरी इस विज्ञप्ति को पढ़ कर सुना दीजियेगा।’

ठाकुर न विज्ञप्ति की कुछ प्रतियाँ ले लीं और उन पर अपनी दृष्टि डौड़ाते हुए उहोन उवास स्वर में पूछा, ‘ बस इतनी ही छपवाई है ?’

नहीं बीस हजार छपवाई हैं और उन्हें सारे भारतवर्ष में प्रचारित कराऊँगा कह कर धरविंद कमरे के बाहर चला गया।

ठाकुर न विज्ञप्ति को पढ़ना प्रारम्भ किया। उसके महत्वपूर्ण अंग इस प्रकार थे—

कांप्रेस हिन्दुत्व की महानता से विनम्र हो कर उनको सहयोग दे रही है जिन्होंने सहस्रों हिन्दुओं का मौत के घाट उतारा है। साम्प्रदायिक विष यमन करना मेरा कदापि ध्येय नहीं है अपितु हमारी गहरी मायता है कि वास्तविक एकता उन्हीं लोगों में आ सकती है जो कि समान आचार विचार वाले समान परम्परा वाले समान संस्कृति-सम्यता वाले एक उद्देश्य के ही वस्तुओं को मानन वाले तथा करन वाले



हों। हिंदू महासभा इस भारतीय कथन के अनुकूल है अतः हमें उसके भेद के मोर्चे एकत्रित होकर राष्ट्र की स्थापना करनी चाहिए। अहिंसा परमो धर्म यह तत्त्व प्रत्येक हिंदू के रोम रोम में व्याप्त है, इसलिए अहिंसा का यिन्य को पाठ पढ़ाना का दायित्व भी हिंदुओं पर आ जाता है। मेरी अभिलाषा है कि हमें इस धर्म के प्रचार प्रसार में तत्पर हो जाना चाहिए। पर साथ ही मैं उस अहिंसा का विरोध भी करता हूँ जो व्यक्ति को कायर और नपुंसक बनाती है। कमहोम बन कर अपना नाम कराना हिंदुओं का काम नहीं है। क्योंकि कथन है कि ईश्वर उसकी रक्षा करता है, जो खुद अपनी रक्षा करता है। आज पाकिस्तान में हिंदू संस्कृति विध्वंस की जा रही है ऐसे समय हिंदू धर्म हिंदू संस्कृति और हिंदू सभ्यता की रक्षा हमें सगठित हो जाना चाहिए, प्राणायण करने को उद्यत हो जाना चाहिए, अपन धारणो उत्सर्ग करने के लिए हर समय तत्पर रहना चाहिए।'

अन्त में उसने बड़े ही भोज पूरा शब्दों में घोषणा की, मैं हिंदू हूँ इसका मुझे गौरव है उस धनुषधरा न मुझ उत्पन्न किया है जहाँ मर्यादा पुरुषोत्तम राम और युग-पुरुष भगवान् श्री कृष्ण न बननी सीसाएँ की हैं। हिंदू राष्ट्र धर्म ही मेरा मुक्त है मेरा तबस्व है मेरी आत्मा और परमात्मा है। धर्म को जय हो अधर्म का नाश हो प्राणियों में सबभावना हो विश्व का कल्याण हो, ओ३म हर हर महादेव।"

\*

\*

\*

१२

धरविद इस बख तक पुस्तकालय से सीटा। उसने जाने ही जगिया की एक ग्यासा धाय सान की कृता। चाय का एक घूट हल्क से उतार कर उसने जगिया से पूछा मेम साहब आई यों ?

नहीं बाबू जी।"

वह फिर घाय पीने में लग गया। वह कुछ उद्दिग्ध सा जान पड़ता था। उसकी चेहरे पर ख़ाई थी। घाय समाप्त करके उसने जब से एक पत्र निकाना। उसे पढ़ने लगा, पढ़ते-पढ़ते उसकी आँखों में अश्रु छलछला आए। वह बड़बड़ा उठा "भगवान कितना निष्ठुर है?"

उसने खिड़की की राह बाहर भाँका। नीचे एक भिखारी चब्रसतों का कोई भजन गा रहा था। एक पगली जिसने अपने पाँवों में घुँघरू की जगह टूटे-फूटे बतनों के टुकड़े बाँध रखे थे, बार-बार हस-हस कर नाच रही थी। भिखारी की पगली से कोई वास्ता नहीं था और पगली तो सिर्फ पगली ही थी ससारा से विरक्त अपने में मस्त। समीप खड़ा एक कुत्ता उसके बतन में पड़ रोटी के टुकड़े को बड़ इतमीनान से खा रहा था। पगली उसे भी देखकर हस रही थी फिर एकाएक उस पर झपट कर उसने उसकी गदन अपनी बाँहों में दबोच ली और उसके मुँह को इतने प्यार से चूमने लगी जितने प्यार से एक माँ अपने बच्चे को चूमती है। जैसे यह पगली इस मूक जानवर के प्रति अपनी बिसिप्त वेदना प्रकट कर एक महान सुख और सतोष का अनुभव करती है। जैसे उसकी मुस्कराती हुई आँखें कह रही हों कि तू जानवर है पर तेरा मसा निश्चल हृदय मनुष्यों का भी नहीं है। मैं तुम्हें कितना प्यार करती हूँ, कितना चाहती हूँ?

फिर उसने आसमान की ओर देखा। आसमान पर काले मेघ मड़रा रहे थे। उनका बीच-बीच में घाँव इस तरह चमक जाता था जिस तरह नई दुहन का अप्रतिम सौंदर्य युक्त धानन जो अपने प्रियतम को दुखाने के लिए बार-बार घूँघट की ओट से आँख मिचीनी का खेल करता हो।

शायी के सेडिल की जावाज सुनाई पड़ी। उसके पाँव सड़खड़ा रहे थे जैसे आज उसने हमेशा से अधिक पौ लो हो। उसकी साड़ी बन्धस्थल से खिसक-खिसक बार-बार जमीन पर लौट रही थी और वह उसे सनातन का असफल प्रयत्न कर रही थी।

अरविद न उसे विचित्र दृष्टि से देता। उस दृष्टि में न प्यार था,

न सनाप न क्रोध था और न घृणा । अजीब असाभंजस्य की भावना  
जीर जड़ता ।

जब उसने मचल कर हिचका से कर अरविंद को छुआ तो अरविंद  
न उसी जड़ता की दशा में उसका सामन वह पत्र रख दिया । उसने उपेक्षा  
और तिरस्कार से उसे सकर फेंक दिया और वह अस्पष्ट स्वर में बोली  
' मुझ शरत्ब दो, मैं और पीऊंगी । '

सहस्र विद्युओं के डक की पीड़ा से उत्तजित अरविंद पीछे सा  
पड़ा ' तुम्हारे भाई को लकवा हो गया है उनकी हालत चिंताजनक  
है ।

' मेरे भाई को लकवा हा गया है नहीं, एसा नहीं हो सकता ।  
वह मरहोगी से क्षण भर के लिये जाग्रत हो कर बोली ' तुम मुझ  
बनावा चाहते हो ? ' दाची पलंग पर निहाल हो गई । उसकी आँसू  
बब हो गई । वह कभी गची को और कभी अपने आपको देखन लगा ।  
उसकी बयनीय दशा अपने छांसू । उसकी बहुपायी अपनी शक्तिशुता ।  
उसकी जड़ता, अपनी बचनी । उसके चेहरे के उन्मादित भाव, अपना  
चित्ताग्रस्त स्तानमुख और उसके होंठों पर फड़कती किसी अप्रती गीत  
की धुन और अपने अन्तर में समसानवत गूँथता । य सब उसका बम  
घोंट रहे थे ।

दाची न आँसू खोली और दुरबरावर उसका हाथ पकड़ लिया ।  
बोली, ' तुम लड़-लड़ बना देखने हा ? तो जाओ न, इतत क्यों है ? अरे  
बाह ! सुनते नहीं मैं कहता हूँ सा जाओ ।

अरविंद अपमान की आग में जल उठा । उसके चेहरे पर क्रूरता  
उभर आई और उसने एर हाथ से गची का गला पकड़ कर और दूसरे  
हाथ से उसके सडोल कपोल पर घाटा देते हुए क्रोध से उबल कर कहा  
' पान की हब हो गई । अगरमी को घोल कर पी गई हो । मैं कहना  
हूँ, तुम्हारा भाई सकल बीमार है । '

शची की आँखों में नींद उमड़ रही थी। वह पुटपुटाई सो जा,  
सो जा, मेरे पास सो जा L

सज्जा, सनाप, ग्लानि और क्रोध से उसका अग जग काँप उठा।  
उसने उसकी भ्रूभ्रूरी और फिर तडाकतड उसकी गाल पर चार-पाच  
घाँटे जड़ दिए।

नशा उतर गया। आँखें खुल गईं।

गधरी न मर्म समझने की भगिमा से उसकी ओर साका। किंचित  
आतुर होकर उसने कांपते स्वर में कहा 'क्या हो गया है तुम्हें ? सुमन  
मुझे इतना बेरहमी से पीटा क्यों ?

"वीरेन्द्र कुमार को लकवा ।" कठावरोध के कारण वह पूरा  
बोल नहीं सका। उसने खत उसके हाथ में दे दिया। वह पढ़न लगी।  
पढ़ते-पढ़ते उसकी आँखों से आँसुओं की अविरल धारा प्रवाहित हो गई।  
सज्जा और ग्लानि स वह छटपटा उठी।

अब क्या होगा ? वह हठात लची हो गई।

होगा वही जो कम में लिखा है, पर तुम्हें सुबह की गाड़ी से  
वापस चले जाना चाहिए ?'

'धनो कोई गाड़ी नहीं जाती ?'

नहीं।

तब वह अवसाद से आभ्रम होकर विह्वलता से बोली, अरविंद,  
यदि भया को कुछ हो गया तो ?'

'कुछ नहीं होगा हिम्मत रखो सब अच्छा ही होगा। वह बड़ी  
मुश्किल से अपने रोने को दबा रहा था। पायाण की तरह कठोर अरविंद  
का बूसरा रूप आज निरावरण होकर उसके समक्ष प्रकट हो रहा था।

अरविंद के मन में द्विजली की तरह कठोर विचार कौंधा। वह  
पुस्तों पर बठता हुआ दार्शनिक के स्वर में गधरी से बोला मनुष्य के  
जीवन के ये अभिगप्त क्षण हैं जिन्हें हम और तुम चरम सुख से प्रोत  
प्रोत समझ कर इस तरह अपना रहे हैं जिस तरह सर्दों से ठिठुरा हुआ

सूरज की किरणों को । पर य हमें सतोष नहीं दे सकते । सतोष का सम्बन्ध आत्मा से है और जब आत्मा स्वयं कृत्रिम और उच्च वग की धमकदार बबरता से आवेष्टित ह तब सतोष हम लोगों में कैसे मावाम कर सकता है ? धमकदार बबरता से मेरा मतलब यह है कि हम अपने अस्तित्व या अपनी स्थिति का सही विम्लेषण एवं मूलमोकन किए बिना अपने आप को मात्र सहा दूसरे सचि में ढालने का प्रयास करते हैं । ये प्रयास आवश्यकताओं की अपूर्णता के कारण हमसे उचित और अनुचित, यहाँ तक पशाधिक कृत्य करावे हमारे बाह्य ठाट-बाट को कायम रखते हैं । पति-पत्नी के शरीर का सौदा करके अपनी शराब के और कायम रखता है और पत्नी-पति के अभ्ययन की पुस्तक बच कर अपनी साड़ी की धमक रखती है । यह धमकदार बबरता अत में स्वभाव बन जाती है । उवाहरण स्वरूप तुम्हें ही लेता हूँ । भाई मीत की शया पर है और तुम शराब में डूब कर मुझ से अपने जितम को मुषवाना चाहतो हो ।”

शब्द क्या य, जसते हुए अगारे । लोभ उद्भग और मनस्ताप को अनन्त भावनाओं में उसका रोम रोम उलसित हो उठा । उसने मन में भाषा कि मैं भ्रष्ट कर अरविब का गला पकड़ लूँ और वह एक गद बोले उसने पहले उसके प्राण निशान लूँ और वह हिल पगु की तरह उठी भी पर उसी क्षण घड़ाम ने गिर गई अंस उसकी सारी शक्तियाँ क्षीण हो गई हों ।

अरविब विचारों के आवेग में उठ कर टहलन लगा । उसकी भूकता शधी की और भी असाह्य और भयंकर लगी ।

यह उसकी ओर बिना बेसे ही बोला 'यह तोसायटी आदमी से आदमी का लह धोन रही है । उसे सहज मानवीय भावनाओं से परे हटा कर व्यापारी बना रही ह । अगर भाई प्यार करता हूँ तो वहन भी प्यार करेगी । अगर पत्नी पति के कहन पर मानती ह तो पति भी बदर बनन की तयार ह । उच्चबुद्धीन या उच्च वग की यह तोसायटी हमारे

मानवीय सम्बन्धों को समाप्त कर रही ह ।

आज तुम्हें अपन भाई की बीमारी पर चार आँसू रोने की फुसत तो ह कन तुम्हें यह फुसत भी नहीं मिलेगी । तुम्हारा भाई पीढा से कराहना रहेगा, स्नह और ममता से अपनक उस द्वार की ओर देखता रहेगा जिस द्वार की ओर से सुन आने वाली होगी । पल-पल में सिसक सिसक कर वह पूछेगा कि मेरी बहन आई, जिसे मैंने बड़ दुनार और प्यार से गुड़िया की तरह सजा कर पाला था । और कोई निर्मम चुपके से वह वेगा कि वह गराब के नश में चूर होकर किसी कुलीन बग के घन पति पुत्र की बाहा में सिमिट तिकुड़ कर उसकी घासना के साथ नतन कर रही ह तो उस निरोह के अन्तर पर कितना मरमान्तक धञ्जपात होगा । वह खिडकी की राह चमकते चाँद को देखने लगा जो अब घनाओं के आवरण से भुक्ति पा चका था, "तेरा भाई दुःख से कराह कर टूटते हुए स्वर में कहेगा, कोई मेरी बहन को जाकर कह दे कि उसरा भाई चुला रहा ह । वह अन्तिम साँसे गिन रहा, मर रहा ह । लेकिन हाय ! यह बहन जिस पर एक भाई न चाँद सितारे सुटाप प उस वक्त भी नहीं आएगी । वह पंखहीन पक्षी की तरह तड़प कर अन्तिम बार कहेगा कि यदि मेरी बहन आ कर मुझे एक बार ममत्व से भीग कर घूम लेती तो मैं निस्संदेह अच्युत हा जाता मैं नहीं मरता । पर उसकी बहन को इतना फुसत कहाँ ? और वह बेचारा बम तोड वेगा ।

गधी बहुत बेर तक विमूढ़-सी पडी रही । प्राणघातक रोग सं पीडित रोगिणी की भाँति उसन अपनी बुझती हुई आँखें खोलो । उसकी जोम घुल गई थी बड घुल गया था, सारा अन्तर गुष्क हो गया था । वह उठी तो उसे महसूस हुआ कि जैसे उसके नीचे के भाग पर लम्बा मार गया हो । वह धक्के खाती हुई अरविब के पास पहुँची और गिरकर उसन उसके पाँव मजबूती से पकड़ लिए । फफक कर कह उठी, 'अब घप हो जाओ इतन कठोर न बनो । मैं हाय जोडती हूँ ।'

अरविब न पाँव छुटा कर गधी को देखा । उसके बहते हुए अश्रु

उसने हृदय की चमकदार अक्षरता के बलुप को धोते हुए जान पड़े। अरविद न उसे उठा कर अपनी धानी से लगा लिया। अपन स्वर को कोमल बनाता हुआ बोला "भोर अत्यन्त सुन्दर हो कर भी जब अपन पाँवों को देखता है तो घाठ-आठ घाँसू रो पड़ता है। घसी कुरूपता धरती के हर प्राणी में आज विद्यमान है।

\*

\*

\*

१३

सधेग हो गया था।

रात भर की उनीची आँसों को नीतल जल से धोकर अरविद न दाची को जगाया। गधी न नौद में ही अगवाई सी और पुन सो गई। क्षण भर के लिए अरविद गधी के मुरभाए हुए मुख की ओर देखता रहा। उस लगा कि दाची का मुख इतना निर्दोष और कोमल है जितना जन्मजात गिग का। तब उसे अपन कड़ये घोल तीर से कम प्रतीत नहीं हुए। जग्टी तार समान बनों से उत्तर अन्तस्तल को हृदयवयक कष्ट हुआ और यह इतना रोई कि उसके चेहरे का साधारण कांति भी सप्त हो गई। उसक हँठ सुल गए और उसके रक्षिम कपोलों पर अथ घारा के बिह अकित हो गये।

तब वह अपन धारे में सोचन लगा। उसको अपनी करतूत पर हादिक ग्लानि हुई। दूसरों को इन्सानियत का पाठ पढ़ाने वाला इरान खुद कितना पतित और दानी है? पाप को युग का साधन और मर्त्या कांक्षा की पूर्ति के लिये कुकृत्यों को अष्ट समभन वाले ध्यक्ति को दूसरों की भुरादियों की आलोचना करन का अपिकार ही क्या है? उसे तब प्रथम अपनी आत्मालोचना करनी चाहिए। अपन हृदय के मोह अथकार तोत्र सासता और पगाचिज बसि को सत्म परना चाहिए। वह इधीभूत हो उठा-कुपत रा। बदला भरे स्वर में उसन गधी को पुबारा "गधी, उठी तुम्हें गाड़ी से जाना है।

हाथ से झम्कोहन पर गची जाग उठी। उसकी दृष्टि में रोय और कदगा दोनों थीं। अपन आंचल को ठीक करती हुई वह बोली, 'नौकर से कहो कि वह मेरा सामान ठीक कर दे।'

'वह ठीक कर बेगा पर पहले तुम मुझे माफ कर दो।'

'क्यों, तुमने कौन सा अपराध किया है कि तुम क्षमा मागिन लग। तुम जैसे सीध-सावे भोले भाले, दूध के घोय, देवता से अधिक उदार व्यक्ति इस देश में नहीं रहे तो पृथ्वी रसातल को नहीं पहुँच जाएगी।

उसकी आँखें रक्तिम हो उठीं। आन्तरिक ईर्ष्या और जलन के मारे उसका अग-अग कांपन लगा। वह तीव्र स्वर में बोली, 'मैं जानती हूँ कि तुमने कल मुझ जो कटु धार्ते सुनाई, उसके पीछे तुम्हारा कौन सा ध्येय था? तुम सत्य का नारा लगा कर मुझ पर अमिट प्रभाव छोड़ना चाहते हो? मैं जानती हूँ कि तुम स्वयं कितन ईमानदार हो? इस कमरे में बठ कर हजारों रुपये कमा लेना किस हुनर का कमाल है? वह हुनर एक ही है—सत्तार को आँखों में धूल भोंकना या एकदम छोटे और नीचे रास्ते अपनाना। तुम समझोग कि दूसरों को खाल खींचना ही आसान है लेकिन अब कोई भी व्यक्ति इतनी सहन शक्ति नहीं रखता कि जो चाहे उसकी धज्जियाँ उधड़ दे और वह मूर्ति की तरह जठ बना मुनता रहे। आज का हर आदमी प्रतिगोध का पुतला है। तुम अपन सुख के लिये 'हिन्दू हिन्दू' का नारा लगा सकते हो तो क्या मैं बाल डाँस और गराय नहीं पो सकती? पर तुम्हें अपनी स्वतंत्रता पसन्द है मेरी नहीं, यह तुम्हारा बुजुआ मनोवृत्ति है जिसे मैं कतई पसन्द नहीं करती। भविष्य में मुझ अपन सम्य-घों पर विचार करना पडगा। अच्छा गुठ-घाई ।

वह कमरे के बाहर चली गई।

अरविंद यत्रवत उठा और जगिया को सामान बाधन को कहा। सामान बध जान पर गची ठाकुर साहब की कार में बठी और जब अरविंद दाची के साथ कार में बठन लगा तब गची न नाराजगी से भौंहे टेंकी



कर के कहा, 'इस वृष्ट की कोई जरूरत नहीं है      झाड़वर घलो ।'  
 धूल उड़ती हुई कार आँसों से ओझल हो गई ।

\*                                     \*                                     \*

१४

जहर ।

हाँ, जो चाहता है कि इसे अपने हाथ से जहर दे दूँ । कुल कलत्रिनी बहया पापिन यह अपना काला मुँह लेकर यहाँ आई ही क्यों ? हुए में दूब क्यों नहीं मरती, रेल की पटरों पर क्यों नहीं सो गई, मदी में क्या नहीं दूब मरी, कहते-बहते सन्तराम की आँसों में घ्रासू धा गए । कुल में उत्तजित होकर उसने अपन मुँह पर तीन-चार घाटों मार लिए । ऐसा लग रहा था कि जैसे वह थोड़ी देर में पागल हो जाएगा, हृदय में उठते हुए कुल के बादलों में उसकी चेतना ली जाएगी और यह मूर्छित हो कर गिर पड़ेगा ।

उसके सामन प्रतिमा-सी निष्प्राण एक युवती थी जिसका रंग काश्मीर की बेसर की तरह शीत और सौरभमय था । वह धारम पीड़ा सताप और व्यथा की तीव्र भावना से अभिभूत और सतप्त अपने आप को मोच रही थी । उसकी मोली गहरी समुद्र की सर्वाधिक सुन्दर व प्रिय मछली की भाँति आँसों के अधु उसकी अतगूढ़ वेदना का इतिहास कह रहे थे । बाप निदयी जल्साव की भाँति निमग्न हो कर उसे दुस्वारों पर दुस्कारों मुना रहा था 'बमीनी, मैं तेरे कारण अपना मुँह कैसे विलाऊंगा लोग मुझे अपनी अंगुलियाँ बिकाएंग मेरे सम्मान पर यूँके अरा बदनाम तु न मुझे कहीं का नहीं रखा । उस मुसलमान के घर ही सारी उधर रह जानी तो अच्छा होता पर उफ ! मुझे बरबाद और जलील कराने से तुम्हें क्या मिलेगा ?' सतराम अवन हो उठा । क्षण भर के लिए उसके मन में बहुत ही

मयानक विचार आया। समीप पड़ी पिस्तौल उठा कर वह उस युवती की ओर बढ़ा। उसके मस्तिष्क में खूबारपन समाया हुआ था। वह आगे बढ़ा। पिस्तौल की नली को उसको गदन पर लगा कर दाग देना चाहता कि उसका हाथ काँप उठा। वह अलग हो गया।

उसके बिलग होते ही युवती चोट खाई हुई साँपिन की भाँति फुटकारती हुई घोल उठी, 'मुझे मार दीजिए पिता जी मुझे मार दीजिए, मारिय न गोली रुक क्यों गए? मैं कहती हूँ आपके हाथ काँपते हैं तो लाइए मुझे दीजिए मैं ही आत्महत्या कर लूँ मर जाऊँ यदि आप मुझ पिस्तौल नहीं देंगे तो लीजिए, मैं इस लिडकी से कूद कर अपनी जान दे देती हूँ। युवती लिडकी की धोर बढ़ी। सतराम जड़ बना रहा। उसने लिडकी छोली और ज्योंही कूदने लगी त्योंही उसने युवती को पकड़ कर अपनी छाती से चिपका लिया।

'नहीं नहीं बेटा घू नहीं जानती कि मैं तुम्हें कितना प्यार करता हूँ। याद है न जब तू परा हुआ था तब मैं सारे मोहल्ले में मिठाई बँटवाई थी। सोम के कारण मैं तुम्हें क्या-क्या बक गया क्या अनाप-जनाप कह गया। उफ तेरा मासूम बिल मेरे बुरे लपकों से धलनी हो गया होगा। मेरी प्यारी बच्ची तेरी अपवित्रता का ह्याल कर के मैं पागल हो गया था और आवेग में तेरे बिल को दुल्लाने वाली बातें भी कह गया, जो एक अच्छे बाप को कभी भी नहीं कहनी चाहिए। मेरी गुलाब ! मचा एक बाप अपनी बेटी की एसी दुश्गा कसे सहन कर सकता है? बेटी भी फिर कसी, इकलौती जिसकी जिन्दगी के लिए बाप के बिल में बड़े-बड़े अरमान हों बड़ी-बड़ी मिन्नतें और साथे हों। घड़ी बटी अपना सब कुछ सुटा कर, बदनाम होकर उसके सामन आए तो वह बदनसीब बाप किस प्रकार अपने पर नाबूर रह सकता। कल जब लोग यह जानेंगे कि मेरी बेटी गुलाब अप हूत है छह माह के ब्रावममलमानों के गिश्ज से निकल कर आई है तो तुम्हारे मासूम बिल को कितनी ठेस लगगी ?'

‘फिर मुझ मर जान दो ।

‘यह आसान होता तो कितना अच्छा होता ।’ संतराम फिर सिसक पड़ा ‘मनुष्य सत्कार के सभी संकटों से मुक्त हो जाता है ।

गुलाब रो रही थी ।

संतराम सड़ा-सड़ा सिसक रहा था । जब दोनों के हृदय रीने से हंसने लगे तब संतराम ने दोष निश्चयन लेते हुए, हड़ता से कहा ‘फिर भी मैं तुम्हें छुगो खरीद दूंगा । तैरी माँ को मरते वक्त दिए बचनों को मैं अपने प्राण प्रण से पूरा करूँगा । तुम्हारी माँग में सितबूर का टीका लगवाऊँगा चाहे उसके लिए मुझ अपनी बौलत का सौदा ही क्यों न करना पड़े । चल, स्नान करके बुद लाओ से ।

छोटा सा घर, पर बहुत ही सुबर । सुनते हैं कि पहले उसमें एक मुसलमान रहता था जो अब पाकिस्तान चला गया था । उसके आस पास कई और मुसलमानों के घर थे उन में भी पजाब से आय हिन्दू बस गए थे । किसन का घर भी यहाँ था । जब उसन सुना संतराम की लडकी आ गई है तो वह भी उसके पास आया । लाहौर में वह उसके ही मरान में रहता था । संतराम किसन पर घड़ा ही रनह रखता था ।

संतराम पाना ला कर उठा ही था कि किसन ने हाथ जोड़ कर नमस्कार किया ।

‘बहो किसन कम धामा हुआ ?’

‘आपको बघाई दन, आपकी गुलाबी आ गई है न ?’

‘हाँ वह आ गई है । उनका स्वर धात्र हो उठा ‘पर किसन जातिमों न उसको बहुत सताया है । उसकी

तो क्या हुआ ? अब आपका कगह-जगह एसी अपहृत बवतिपाँ मिल जाएगा ।’ उसन अपनी बमोज की याहें बाजू तक घड़ाते हुए कहा ‘हजारों बवतिपाँ उड़ा ली गई हैं ।

‘लेकिन इनको धपनाएगा कौन ?’

‘समाज ! आपकी बटी किसी की बहन किसी की भतीजी, किसी

की भानजी तो होगी ही उसी प्रकार हमारा लड़कियों का समाज के किसी न किसी व्यक्ति से कोई न कोई रिश्ता जुड़ा हुआ ही है। ये जुड़ हुए सम्बन्ध हर किसी का एक-दूसरे की आलोचना—प्रयालोचना से बचाएंगे।

‘हाँ, फिर किसन त एक काम कर न।’ वह उतावली से बोला ‘जल्दी से इसकी कहीं न कहीं शादी ठाक कर दे। मैं परेशानी से घबरा जाऊंगा कुछ न कुछ दहेज भी दूंगा। न जान क्या मैं इस के लिए इतना अस्थिर हो उठा हूँ? सतराम अपने दोनों हाथों की अंगुलियों को बड़े विचित्र ढंग से नचा रहा था। किसन न उन्हें सतखना दी ‘मैं कागिश करूंगा।’ वह चल पड़ा।

सूय भित्तिज की ओर बढ़ रहा था। क्षितिज के अन्त छोर पर रुपहली घर्षा हो रही थी। कहीं-कहीं मेघ गिन्नु उस सुनहली अमस्त्र धारा में चबल बालकों की तरह तर रहे थे। देखत-देखते सुनहले सागर में मलीनता छाने लगी। मेघ गिन्नु इस तरह सूय की ओर लपक जैसे कई बेध अमत्त क घट को ले जाते हुए दरय को पकड़न के लिए भ्रष्टते हों। पर यह दरय बड़ा बलगाली था। अमत्त क घट को पकड़ कर वह अपनी अन्तिम भलरु विधाने लगा।

सूय के अन्तिम दग्गन गुलाब न बढ़ी धद्धा और भक्ति से किए। फिर गहरी निरागा से अपने मंह को दोनों हाथों से दिपानी हुई बोली ‘प्रभु मेरी रक्षा करना।

नोचे से सतराम ने पुकारा “गुलाब !”

गुलाब उसके सम्मुख आई। रोते रोते उसकी आँखें सूज गई थीं।

‘रो मत बेटा, मैंने सोचा है कि तुम्हें अपना बाले को मैं पचास हजार के जबर दूंगा। इतने रुपय अच्छे स अच्छे आदमी को तेरा गुलाम बना कर रख सकते हैं।’

गुलाब निरुत्तर रही। केवल वह अपने पिता के दगाध स्नेह से

आबोलित हो कर रो पड़ी ।

घाप न उस अपन सोने में छिपा लिया ।

\*

\*

\*

१५

चाँद को चिह्ने भाई था ।

लिखा था—बीरेद्र का देहात हो गया है ।

अरविब न पत्र पढ़ना बंद कर दिया । वह कुछ देर तक रोता रहा । जब जो हल्का हुआ तब वह आगे बढ़ने लगा । बीरेद्र अपनी मृत्यु के पीछे कई हजार का कज छोड़ कर गया है । यहाँ तक कि उसका बगला भी गिरवी है । साचा अरविब, यह कितना विपाक अर्थ-सकट है । दो चार दिन में उन्हें बगला खाली करना पड़गा । मैंने अनुराधा देवी से विनती की है कि वे अपन घर आ जाएँ । बदाचित्त उन्हें हमारे ही घर आना पड़गा । इयर शधी की तथामत खराब है । उसको खबर था रहा है । उसका शरीर दिन रात आग की तरह जसता रहता है । वह अनुराधा को मजबूर कर रही है कि हमें अरविब के घर नहीं जाना चाहिए । यह दम और गब का पुतला है । समय पर वह हमें बड़ी सीखी यातें सुनाएगा । खर कुछ भी हो । बीरेद्र की मृत्यु के साथ उस घर का सुन्दर स्वप्न सड़ जड़ हो गया ।

बीरेद्र न अन्तिम समय मुझ अपनी डापरी ही थी । उसमें एक जगह मराठी के सुप्रसिद्ध गणभाष सेलक थी वि० स० काश्पर की कुछ पत्तियाँ लिखी हुई थी ।

अथयुग का यदि कोई सबसे बड़ा अभिगाप है तो यही है—आत्मा की अधिरता । सालव इस युग की आत्मा है । रुपया आना पाई इस युग का मंत्र है । व्यक्ति-व्यक्ति के परस्पर सबय से निर्माण होन वाली विविध भावनाओं का इस युग में स्थान नहीं । कला और कपास,

सौन्दर्य और शार, विद्वत्ता और वाययान प्रम और फौलाव सब एक माप से नापे जा रहे हैं बने जा रहे हैं। प्राचीन धर्म प्रधान सस्कृति ने शरीर की ओर से मुह फर लिया था। नयी धर्म प्रधान सस्कृति आत्मा से मुह मोड कर ससार की प्रगति करना चाह रही है।'

उपपवन पक्तियों में आज के युग का चरम सत्य घोस रहा है। वस्तुतः आज हर चीज का मापदण्ड बवल चुका है।

उसने आगे लिखा था 'मैं इस धर का, विशपत अपनी पत्नी अनुराधा और बहन गञ्जी का मुचरक रूप से चालित यत्र हूँ जो बिन भर अपन विभागी बल पुजों को घिस कर पसा पवा करता है और उस पसे का बहुत बडा हिस्सा य दोनों अपनी ऊपरी आन-गान यान पारियव रूप क शृङ्गार में लष कर देती हैं। शय इतना कम बचता है कि मैं जो कि एक यत्र हूँ अपन फल-पुजों को ढग से तेल भी नहीं बे पाता हू। पर साथ ही मैं इतना डरपाक और कायर हूँ कि मैं अपनी पत्नी का विरोध भी नहीं कर सकता अपेक्षा तो बडी दूर की बात है। न मालूम कौन सी अज्ञात भावना मुझ इतना भयभीत करती है कि मैं अपनी बीबी का काठ का उल्लू बन कर रह गया हू। मैं अक्सर महसूस करता हूँ कि मेरे हृदय में दुःख के काँट चुभते रहते हैं अति सूखती जाती हैं, धारे धीरे मेरा सारा शरीर मुर्दा हुआ जा रहा है।

आज अरविद, धीरेन्द्र हम से बहुत दूर, परलोक में है जहाँ उसकी आत्मा सब विपदाओं से मुक्त हो कर असीम शांति का अनुभव कर रही होगी।

तुम्हारी भाभी धारेन्द्र की मत्य से बडी दुखी है। कहती है आदमी क जीयन का क्या भरोसा जब यह हस इस शरीर रूपी मानसरोवर से उड जाय इसलिए अरविद को वापस बुला लो।

निम्नू स्कून में पड़ रही है। तुम्हें चुम्बन भजती है—अपन फूल से कीमल गाल का।

तुम्हारा  
धाँद

अरविंद ने भैया को प्रत्युत्तर लिखा । पत्र में उसने एक ही महत्वपूर्ण बात लिखी थी 'भाभी को आत्मा निमल हो गई है, अब यह तुम्हें बहुत ही सुख देगी ।

दूसरा पत्र उसने गौरी को लिखा ।

लिखा था—

गौरी !

तुम क्यों पत्र देन सगी चाहे मैं तुम्हारी चिन्ता में दिन रात घंटा बर्हें । बीरेन्द्र की मृत्यु का मुझ सहन अफसोस है । यही जंगल प्रवृत्तियों वाला मनुष्य पराजित हो जाता है । वह भगवान की आस्था लेकर इस दारुण दुःख को भाग्य का चक्र समझकर अपने मन को धैर्य बधाता है । हम भी रोने के सिवाय कर ही क्या सकते हैं ? विनय कर तुम्हें अपना भाई की मौत का बड़ा संताप है । चाँद न सूचिन किया है कि असह्य आघात के कारण तुम्हें ज्वर आ गया है । तुम्हारा शरीर दिन रात तबे की तरह जलता है । ऐसा भी क्या ? क्या मरने वाला पञ्चानाम स पुनर्जो वित हो जायगा ? नहीं, यह असम्भव है । फिर एक की मौत के पीछे दूसरा अपनी जान क्यों दे रहा है ?

मान लो, तुम अपने भैया को अनुराधा से अधिक प्यार करती हो पर अब प्यार का प्रदान दुःख करने से नहीं होगा ? बल्कि अनुराधा की गहरी और बीरेन्द्र के दोनों बच्चों को सभालने से होगा । इन दोनों में—नहीं बच्चों को इतनी ताबत दो कि जीवन के सघम में वे हिम्मत न हारें ।

अनुराधा भाभी को प्रणाम । बच्चा को प्यार ।

तुम्हारा

अरविंद

पुन—

भैया न लिखा था कि गौरी हमारे घर आ कर नहीं रहती । क्यों क्या हम कर हैं ? तुम सजीव मनोवृत्ति से क्यों सोचती हो—हमारे

और तुम्हारे सम्बन्धों के बारे में ? हम दोनों भाई क्या बूझते हैं ? अरी पगली हठ छोड़ कर अपने घर चली आ, अब तेरा अरविंद बकार नहीं है सब का पोषण कर सक्ता है, समझी ।”

पत्र की प्रतीक्षा में

तुम्हारा अपना

अरविंद

शची का उत्तर आया था—

अरविंद !

पत्र मिला पढ़ा और उत्तर लिख दिया ।

भया के प्रति जो तुम न सहानुभूति प्रकट की है यह ऊपरी दिखावा है जिसे समाज आदर एवं रिवाज की दृष्टि से देखता है ।

जगह-जगह तुम ने मुझे ले कर जो व्यग किए हैं उसके लिए मैं तुम्हारा शुक्रिया अदा करती हूँ ! भया का सत्ताप अधिक मुझ हा होगा भाभी को थोड़ा ही । जानते हो भाभी ने खत पढ़ कर क्या कहा ? उन्होंने तलवार की धार-से तेज स्वर में कहा कि मैं तो आप के भाई की मृत्यु पर बधाइयाँ बन्वा रही हूँ मनीषी मनवा रही हूँ । आप को बुझार क्या जा गया, भाई की मृत्यु की हमदर्दी का सर्टिफिकेट मिल गया ।

न मालूम तुम्हें हम लोगो को सतान में क्या मजा मिलता है ? मेरे भतीज कम से कम तुम से भया को भील माँगने नहीं आएंगे । मैं उनको बनाने में अपना सबस्व विसर्जन कर दूंगी । तुम्हें बता दूंगी कि शची कितनी स्वामिमानी है ?

तुम्हें हमारी गरीबी पर बड़ा तरस है । खत लिखते समय गायब यह भूल गए थे कि हमारा बगला भी गिरबी है । हम बिल्कुल गरीब हैं हमारे पास कुछ नहीं है । पर भाभी और मैं निएस किया है कि हम तुम्हारे मकान में आ कर नहीं रहेंगे चाहे हमें फुत्पाय पर ही सोना पड़े ।

जो तुम—‘हम गैर थोड़ा ही हैं’—का नारा लगाते हो, उसमें तुम्हारी वित्तनी सङ्कुचित वृत्ति छिपी है, इसका अन्वय पत्र पढ़ने वाला आसानी



स सगा सकता है। तुम चाहते हो कि हमें दो रोटियाँ डाल कर सत्कार के सामन जीवन भर डोल पीटते फिरो कि मैं इन्हें पाला है। मैं यह साँछन सन का तयार नहीं हूँ। मरती मर जाऊंगी, पर तुम्हारे सामने हाम नहीं फलाऊंगी।

यषों के बाद आज ऐसी स्थिति आ गई है कि मैं तुम्हारे सामने कुछ घातें साफ कर दूँ। कवाचित्त तुम्हें गमतफहमी होगी कि मैं तुम्हें प्यार करती हूँ। नहीं मैं तुम्हें जरा भी प्यार नहीं करती। हाँ प्यार का अभिनय मुझ बडा प्रिय लगता है। वसे तुम आदमी अप्रिय नहीं हो। अच्छे खानदान के हो। दीलत घसी गई तो क्या वह दिस तो सुरक्षित है। मैं सबव सोचती थी कि नाटक का यह हीरो घड़ा रगौला है। हीरोइन की सच्चे दिल से चाहता है उस पर अपने धरमान मूटाता है। इसलिए मुझ तुम्हारा सहवास अच्छा लगता था पर सचमुच मैं तुम्हें जरा भी प्यार नहीं करती।

अन्त में इतना ही कहूंगी—फिर तिर में बव होन सगा है। लिसा नहीं जा रहा है मुझ से पर एक बात मुझ जरूर लिखनी है। वह यह है—मैं जवान हूँ। अभी मुझ में काम करने की बड़ी क्षमता है। रूप है, अतः मैं मोह सकती हूँ। गिंसा है इस लिए मैं उपाजन कर सकती हूँ। लेकिन कम से कम मैं तुम से यह आगा जरूर बरगी कि अम तुम मुझ अपिक नहीं सताश्रोग।

— गधी

\* \* \*

१६

मूरज निरभ्र मोलाम्बर में समक रहा था।

जलना हुई हवा का भँकि कभी कभी सन-सान की आवाज कर देते थे।

अरविद पत्र पढ़ कर घेघन हो उठा। एक अव्यक्त सी वेदना उसके अन्तराल में घुमड़ रही थी। उसकी आँखों में धाँप उमड़ रहा था। धुंध सी छा गई। ऐसा महसूस हो रहा था कि थोड़ी ही देर में निविड अचकार छा जायगा और अपने विकराल हृदय में उस की तमाम इच्छाओं को समा लेगा। तब वह पिपासा रहित निर्विषयी इन्सान रह जायगा। तब उसकी वेदना गुँगी हो जायगी। तब उसकी कदना असहाय हो जायगी और उसके जीवन के सारे मधुर स्वप्न उल्कापात के समय आकाश के तारों की भाँति टूट जाएँगे।

गची उसके साथ इतना बड़ा छल करेगी उसने यह कभी सोचा भी नहीं था। उसका दुःख इतना निर्रोह और उपेक्षित हो जायगा, इसका उसे विश्वास भी नहीं था। उसके साथ 'हीर' की भूमिका घवा करने वाली नारी सत्य को अभिनय मान कर किसी के अन्तर में खिरन्तन दुःख उत्पन्न कर देगी यह सोच कर वह द्रवित होने लगा।

वह दुःख भरी कल्पनाओं में विचरण करता हुआ फिर स्वयं पर प्रतारणार्थों की शौछारें करने लगा। अन्त में वह पत्थर की तरह बठोर और राक्षस की तरह निर्बयी हो गया। दरभराज कस न देवकी के हर पुत्र को मौत के घाट इसलिए उतारना शुरू किया था क्योंकि उसकी संतान ही उसकी मौत थी। ठीक उसी भावना से प्ररित हो कर उस ने भी तय किया कि वह शची को कभी घन नहीं लेन देगा इसके लिए उस बड़ से बड़ा पाप भी क्यों न करना पड़े। नीच से नीच क्यों न बनना पड़े।

वह उठा और उसन गची को एक छत लिखा।

गची,

यह पत्र मेरा अतिम पत्र है।

इस पत्र में वास्तविकता कडयी हो गई है पीडदायक हो गई है और कुछ अपमानजनक भी। ए-ए भी तुम्हारी तरह मजबूर हूँ।

तुमन कहा कि मैं सिर्फ प्रेम का अभिनय करती थी लेकिन तुम्हें यह

पता नहीं है कि अभिनय बिलकुल मिथ्या भित्ति पर आधारित नहीं होता बल्कि उसका आधार सत्य ही होता है। इस पर प्राधुनिक युग में जहाँ वास्तविकता ही प्रधान है वहाँ अभिनय सबसे प्रभावहीन कैसे हो सकता है? तुम मुझ से प्रेम करती हो और जहर करती हो नहीं करती हो तो एक दिन तुम्हें मेरे बचपन पर गिर कर प्रेम का दान माँगना ही पड़ेगा।

मैंने ही तुमसे मुझ जिसी भी रूप में प्रहण किया था पर मैंने तुम्हें हमेशा अपनी प्रेमिका के रूप में ही देखा है। तुम्हें पता नहीं है कि हर युवक अपनी प्रेमसी को अपने मानस में द्रिष्टा कर रखता है। उस प्रेमसी को वह अपने मन के मुताबिक ढालता है। वह कसी होगी? सुन्दर या असुन्दर। उसका स्वभाव मधुर किना होगा और कठका कितना? यह कैसे बाँटे करेगा उस जिस तरह अपना सख्त समझगी और प्राणों से प्रिय वह जिस तरह कहेगी, भाँदि सभी बातें वह अपने मन में धीरे धीरे सजोता रहता है। फिर वह अपने विचारों के अनकूल जिसी युवती को खोजता है और मन ही मन उसे अपनी आराधना साधना और प्रेमसी मान लेता है। यही वजह है कि तुमसे बेला होगा कि जबकि अच्युत-आसे आदमी भी साधारण से साधारण स्त्री के प्यार में इस तरह डूब रहे हैं जिस तरह पानी में रुकड़। अतः मेरे द्वारा तुम्हें सर्वथा भूल जाना घसंभव है।

पर एक क्षण में तुम्हें यत्ना देता हूँ कि तुम्हारा यह अभिमान कि मैं सुन्दर हूँ जवान हूँ शिक्षिता हूँ इसलिए मेरे लिए यह जीवन सुगम है सर्वथा क्षणिक और झूठा है।

संता का सौंदर्य मजदूर की माँलों के कारण था और तुम्हारा सौंदर्य मेरी आँखों के कारण। अगर मैं इस बात को जहर मानता हूँ कि तुम जवान हो। लेकिन मुझ यह भी पुरा विश्वास है कि तुम इस बात को भी नहीं मूँती होगी कि अबानी स्वयं सौंदर्यमयी होती है, और साथ ही जगनी क्षण भंगुर भी। इसलिए तुम्हारा सौंदर्य भी क्षणिक है। फिरन्तन

तो केवल मेरी दृष्टि में। कभा अपने इसी सौंदर्य के दम्भ के आवेग में निकसोगी तो शायद तुम्हें एक साधारण क्लक भी अपना को तयार नहीं होगा। सब करना व्यय है वह महल बह चुका जा हर एक को मोह सेता था। राई का भाव रात के साथ ही चला गया।

अब मेरा और तुम्हारा जीवन दो रास्तों में विभक्त हो गया है। पाप्य भी अलग-अलग ही होंगे। देखो, कौन हारता है और कौन जीतता है ?

तुम्हारा  
अरविद

\*

\*

\*

१७

तीन दिन बाद—

किसन सतराम को समझा रहा था कि यदि आप अपनी घटी के लिए बहुत ही अच्छे छाविद की खोज में हैं तो अरविद बाबू से मिलिए। कल ही एक सभा में उन्होंने अपहृत महिलाओं के प्रति अपनी समस्त समवेदना जाहिर की थी। उन्होंने गरज कर कहा था कि यदि हम इतने सभुचित हो जाएँगे तो विजातीय हमारी माँ-बहनों का धम परिवर्तन करा के हमारे ही खून से हमारा विनाश कराएंगे। बंग प्रदेश के इतिहास के 'बाला पहाड़' को हम कभी नहीं भूल सकते। हमारी धार्मिक निरकुशता न उसके अधा विद्रोही बना दिया था और वह हिंदू होकर हिन्दुओं पर बाल बन कर छा गया था। रहा धम ! धम तो हमारा उदा ही उदार है। गार्सों न कहा है आपत्ति बाल में धम नाग नहीं होना। हमारी सहस्रों बहन और मानाए मजबूरी की हालत में म्लेच्छों का घर रही हैं अतः वे सूरज देवता की तरह पाँवत्र और गगा की तरह निष्कसक हैं।

सतराम ने गारा प्रकट की किस्न ये जितन नता हैं म इनके

सिद्धांत सही रूप से भाषणों में ही उतरते हैं जीवन से इनका बड़ा अलगव्य है।”

‘कैसे ? किसन न प्रश्न किया।

‘एसे कि कोई गायर अपना घर जला कर गायरी थोड ही करता है दूसरे के घर को जलते देख कर ही धया उमडती है। जब अपना घर जसता है न तब आदमी विकसित हो जाता है। अपना घर जला कर कविता लिखने वाला एक ही कवि राजा हुआ है वह था रोम का सम्राट नीरो। रोम जल रहा था और वह अनुभूतिपूर्ण कविता गा रहा था।’

किसन कुछ देर तक विचारता रहा और फिर थड़ापूण होता हुआ धीरे धीरे बोला, ‘पाँचों अगुलियाँ एक सी नहीं होतीं। मैं उनसे कई बार मिला हू। उनके व्यवहार यर्ताव से साफ भलकता है कि वे महान हैं बेवता समान हैं। निस्वाय भावना और सेवावत ही उनका मूलमंत्र है। मुझे पूरा विश्वास है कि गुलाब एसा गौहर पा कर बहुत ही सुख पाएगी।’

सतराम न दुःखभरी आह छोडी। विगलित स्वर में कहन लगा, मैं कहता हू कि इसे थोडा ना आदमी पहण नहीं करेगा। सब पवित्रता चाहते हैं।

“आप कोणिग तो कोत्रिए।’ किसन तनिक झल्ला पड़ा।

‘मेरा साहस नहीं होता।’

‘मैं कोणिग करूँगा।’

‘कोचड में हाथ डाल कर देख लो कह कर सतराम धाटकरबला गया।

किसन नेत्र मूँड कर विचार गूँथ सा बंठा रहा। अतीत उसके स्मृ पटल पर उभरन लगा।

बचपन की बात आज भी उसे ताजी-ताजी लग रही थी। गुलाब

का एक भाई अत्यन्त क्रूर था, बीड़म था अष्टावक्र सा था लेकिन वह उसे कितना चाहती थी। साथ खिलाती थी, साथ सुलाती थी।

इतना स्नेह का दृश्य उसन जीवन की बदालत में नहीं देखा था। उसका भाई बप-कपाती आवाज में कहा करता था, 'ओ जी !' वह इतना ही बोल सकता था। उसका इतना बोलना ही गुलाब की ममता को झकझोरने के लिए काफी था। वह उसके गालों और सलाट पर पवित्र धुम्बनों की बोझार लगा देती थी। कभी-कभी अष्टावक्र रो पड़ता था। उसकी आँसुओं को तिलमिला देने वाली मूक येवना कातर स्वर में कहती नजर आती थी 'बहन, भाई हमेशा अपनी बहन की रक्षा करता आया है, पर मैं इतना लाचार हूँ कि मेरी रक्षा तुम्हें करनी पड़ती है।'

बहन अपने भाई की असह्य ध्यया जतित मूक-वाणी समझ जाती थी। वह स्नहसिक्त स्वर में कह उठती थी 'मैं तुम्हें कभी नहीं छोड़ूंगी, मेरे भाई, कभी नहीं।'

तब अष्टावक्र के भद्रे भद्रे होठों पर मुस्कान गिरक उठी थी।

लेकिन भगवान् को बुद्ध और ही मजूर था।

सुझ वह किसी का भी ज्यादा दिन तक नहीं देख सकता। एक दिन अचानक अष्टावक्र को बुझार आया और... र आते ही उसकी दगा इतनी बिगड़ी कि वह वापस नहीं उठ सका। कराल काल की ब्याल सी बिपाक जीभें उसे सवा के लिए बस गई। तब वह कितनी रोई थी ? उस समय किसन उसके पास गया। उसके सिर पर हाथ फेरता हुआ स्नह सिंचित स्वर में बोला 'रो मत गुलाबो, रो मत अष्टावक्र की जगह मुझ ही अपना अष्टावक्र समझ ले। अरे पगली, मैं कोई दूसरा थोड़े ही हूँ, तेरा भाई ही हूँ, रो मत पगली रो मत।'

वह फूट कर रो पड़ी और किसन के गले से लिपट गई।

प्यार से भोगी हुई स्मृति न किसन को पलकों की तरल कर दिया। तभी पीछे से किसी का क्रोमस हाथ बढ़ा और वह किसन के कंधे पर

घा कर दफ्तार । किन्तु न नजर घुमा कर देखा गुलाब का हाथ था । वह तिमर रही थी ।

“तू क्यों रोना है ?”

“किन्तु पिता या किन्तु मायस है ? मैं उनका दुःख अरा भी नहीं दस सकती ।” इतना कह उठिन अरन आँसुन से अरन आँसु पीले, “मैं सुदरनी नहीं कर सता । न जान दामन पर दाग तग जात क बाद ना मुन बिन्दगा से मोह क्यों हो गता है ? अब मैं सोचती हू कि यदि उस सनन मर अनी तो अज्ञा रहता । पपी इन्नान की बिन्दगी घणने वाले कोदते की तरह है ओ बार-बार चटस चण्ड कर दव देता है ।”

“तू ठिठ न कर । मैं अरविद बाबू से अरर जान कहूँ ।”

मना अरविद बाबू चला ।”

इतनी क्यों है मैं सब ठीक किए देना हूँ । अनी जाना हूँ ।”

मताव न अरकाग की ओर देख कर आँसुन कपा निया ।

\* \* \*

१८

ठकुर नरेद्रसिंह के मामते की धात्र पन्द्रहवीं देगी थी । अरातन सचाच नरा थी । धूर्डसिंह क हाथों में हृदयसिंघा थी । मरदानर रोगी की तरह उमरा मुसडा मुरमा ग्या था । नतीं का रक मल्लु-रमड क मय से स्वतः हा बठ का तरह जन कर ठडा हा रहा था । उतका सकेद चेहरा देख कर यह सहेज ही अनुनात सपादा ना सता था कि वह अर-राया है या निरपरासी ? क्योंकि—“यह सेत मेरी स्मुराज है या मय्यु मरे लिए एक सेत है—अनी त्रिदृग मावना गधने जाने प्राप्ती पीने नहीं हो सकेने । यदि हमारे देग का जानून गडाहों क बय पर सच का अन्वेदन न कर क यदि किन्हीं मरों का उपपग करता जता कि पावचय देगीं में होता है तो बचारे धूर्डसिंह की मुक्ति निच जानी अनय मित जाना ।

अदालत में गवाह के रूप में खड़े होने के पहले अरविन्द ने एक बार अपनी जब सम्भाली। उस के चेहरे पर कठोर गम्भीरता थी। वह उठा। अदालत के कटघरे में खड़ा हुआ। वह बिल्कुल शांत और गम्भीर था इतना जितना कि सत्य।

भगवान की बसम खाते समय भी वह अविचल रहा। फिर बोला, "मौ लाड, जर जोड़ और जमीन यह तीन चीजें ही ससार की सदाइयों के कारण हैं। वेद, पुराण कुरान, रामायण महाभारत बाइबिल और इतिहास सभी इस बात में गवाह हैं। तब बचारे—घूँसिह जैसे नाचीब व्यक्ति के लिए इस तरह की हत्याएँ कर देना कोई मुश्किल काम नहीं है। जिस समय यह बाण्ड हुआ उस समय में वहीं था। हाथ में पिस्तौल लिए घूँसिह राक्षस की तरह खड़ा था। मेरो आँखें कभी धोखा नहीं खा सकतीं, वह घूँसिह ही था।"

वह कटघरे से लौट आया। उस समय घूँसिह की माँ आँखों में ध्रुम उतारे जैसे देख रही थी। उसका वग चलता तो वह 'पूतना' की तरह उसे किसी भी तरह मारने का यत्न करती। पर अरविन्द की दिठाई देखिए। उसके पास आया और कुछ भरे शब्दों में बोला 'तुम माँ हो इसलिए अपने बड़े क दोष को नहीं देख सकती। माँ के लिए घुरे से बुरा वग भी अच्छा होता है। माँ की आँखें ही ऐसी होती हैं लेकिन जो पाप करता है उस भगवान और कानून दोनों दण्ड देते हैं। एहिक जीवन के दुष्कर्म का भी प्रतिफल यहीं है, इसलिए कहने वालों ने कहा है कि नरक स्वर्ग यहीं है। तुम्हारे सामने तुम्हारे घेट को फाँसी हो, यह एक माँ के लिए भयकर नारकीय यातना है। तुम्हें धय धारण करना चाहिए और इसे घुरे कर्मों का फल समझ कर भोगना चाहिए। भगवान तुम्हें शान्ति और धय दे।

माँ क्रुध बोले इसके पहले ही अरविन्द वहाँ से चल पड़ा।

हृषिकेशियों से जकड़ और निराग घूँसिह को एन बार अरविन्द ने फिर देखा और समीप जा कर यह बोला, "तुम निर्दोष नहीं हो अत



दण्ड भोगन को तयार हो जाओ। यदि अपन आप को निर्दोष समझते हो तो ईसा मसीह की तरह शांति हो कर रहो, 'प्रभु इन सब का अपराध क्षमा कर देना। यदि मृत्यु का दण्ड असह्य सगे सख सुग्य हो कर रहना, 'प्रम प्रलय प्रमजन से इनका विनाश कर दो। सच्चे दिल की विनती कभी व्यर्थ नहीं जाती समझ ?'

अरविंद अदासत के बाहर हो गया।

\*

\*

\*

१६

आकाश के प्रासाद में टिमटिमाते असह्य दीप जल चुके थे। राज कुमार घट्ट किरणों के रथ पर आढ़ हो कर प्रासाद में विचरण कर रहा था।

जीवन की महत्वाकांक्षा मृग मरीचिका की भांति धनन्त फली हुई है। इस मरीचिका के पीछे प्राणी जन्मस मग के सह्य अतहाशा भागा जा रहा है। कुर्साँ मारते-मारते थक जाता टूट जाता है।

आदमी और मग।

अरविंद महत्वाकांक्षा की व्याख्या ही भिन्न करता है। सत्ता की परिभाषाओं से वह सहमत नहीं है। वह नपोलियन बोनापाट की तरह कमठ है। जीवन में असम्भव समझता ही नहीं। वह एक रोज महान् बनगा, जरूर बनगा।

अरविंद अपने ही विचारों पर हँस पड़ा। फिर भी वह खचल था। अपने मन के एक भाव को ढाड़स देन के लिए सुन्दर गवायली की सृष्टि करके अपनी आत्मा के पाप और कन्यु को सांत्वना दे रहा था।

धूर्वसिंह के लिए मैं घात भूठी गवाही थी। यह अन्वय पाप है। राक्षसी कृत्य है। मैं औरों को मानवता और मानवीय गणों की रक्षा के नारों को बुलव करने की प्रेरणा देता हूँ और खुद ? वह

गम्भीर हो गया, 'धमराज युधिष्ठिर ने भी अन्वत्यामा हतो, नरो वा  
 कुजरो कह कर किसी को मरवाया था। दानवीर कण के लहलुहान  
 कवच का दान लेते हुए ब्राह्मण घेग में इन्द्र को भी आत्म-ग्लानि नहीं  
 हुई थी। महर्षि बधोचि की हठियों पर देवताओं की विजय मुस्कराई  
 थी। कूटनीतिज्ञ श्री कृष्ण ने सबस्व समर्पण करने वाले धनुज को भीति  
 घम कम का पाठ पढ़ा कर महाभारत की अग्नि का प्रौर प्रज्वलित कर  
 दिया था। फिर मैं अपन लिए, अपनी उन्नति और प्रगति के लिए  
 परम्परा से प्रचलित साधन अपनाऊ तो क्या बुरा है? महान् प्राणियों के  
 पुत्र भी नीति बन जाते हैं। तत्ववेत्ता उनका विन्लेपण करके नए सत्य  
 की स्थापना करते हैं।

अरविंद शांत होकर बिस्तरे पर सो गया।

किसन खाना लेकर कमरे में प्रविष्ट हुआ। मेज पर खाना रख कर  
 वह विनीत स्वर में बोला, अरविंद बाबू, खाना तयार है खा लीजिए।

अरविंद उठा और खाना खाने बठा।

किसन टकटकी बाँध उसे देखता रहा। अरविंद कीर निगलते हुए  
 बोला, कुछ कहना चाहते हो?

'जी।'

'कहो डरो नहीं जो कहना चाहते हो नि सफोष कहो।' अरविंद  
 न एक पल के लिए उस पर अपनी जलती हुई दृष्टि डाली और भोजन  
 करने में निमग्न हो गया।

किसन ने दकते दकते कहा, आप ब्याह करेंगे?"

'क्या कहा?" यह चौंक पडा।

'मेरे ध्यान में एक बहुत ही अच्छी लडकी है।'

'यह काम कब स करने लग। आदमी को इतना अलील नहीं होना  
 चाहिए। अरविंद का स्वर कठोर हो गया। श्रोत्र से चेहरा साल।

वह मेरी बहन है। किसन बड़ी मुश्किल से बोल पाया।

'तो वह तम्हारी बहन है? अरविंद ने सम्भे स्वर में कहा।

‘हाँ ! वह कुछ स्वस्थ होता हुआ बोला ‘आपका अपहृत महिलाओं के प्रति भावना सुन कर मेरी यह हिम्मत हुई ।’

अरविंद गभीर हो गया ।

‘वह अपहृत है ?’

‘जो ।’ अपराधी की तरह उसकी आँखें सज्जा से भक गईं ।

‘‘तुम्हारी सगी बहन है ?’

‘नहीं तो ।

‘फिर कौन है ?’

‘लाला सतराम की बटी है ।’

‘सतराम ?’

‘वे कहते हैं कि मैं अपनी सारी सम्पत्ति अपनी सड़की के शोहर को दे दूँगा ।’

सारी सम्पत्ति ?

‘हाँ उनका पास चालीस-पचास हजार रुपए हैं ।

‘उसकी सड़की पड़ी लिखी है ?’ उसने बात बदलते हुए कहा ।

‘हाँ चार या छह जमात पड़ी है ।’

एक काम कर सकते हो ?

‘हाँ ।’

उस सड़की से मिला सकते हो ।

‘क्यों नहीं । उसने उत्साह से कहा ।

‘पर उसके पिता को इस बात का पता नहीं चलना चाहिए ।’

‘नहीं चलेगा । यह विश्वास क साथ बोला ।

‘फिर कब लागू ?’

‘मैं अभी भी उसे अपने साथ लाया हूँ ।

साथ लाए हो ? अरविंद एकदम गभीर हो गया ।

जड़ और अचल ।

किसन कातर स्वर में बोला वह बड़ा दुखी है । आपका भावना

सुन कर आपकी देवना स्वरूप समझन लगी है। कहती है मैं उनकी वासी बन कर ही रह जाऊँगी। उन्हें बड़ा सुख दूँगी।

‘अकेली को भेज दो।’

किसन चला गया।

अरविन्द कमरे में छह कदमी करने लगा।

उसके उठते हुए बोझिल कदम शोता को गन्धित कर रहे थे।

गुलाब की मद्धली-सी चंचल आँखें कमरे में घुसते ही झुक गई। शरीर में एक अजीब स्थिरता आने लगी। वह चुपचाप खड़ी हो गई।

‘बठिए।’

वह बठ गई।

अरविन्द कुछ देर मौन रहा। इधर-उधर देखा और धाब में बोला,  
‘आप का नाम?’

गुलाब।

मैं पूछूँगा वह आप सच-सच कहेंगी?’

‘...।’

आप अपने पिता जी को बहुत चाहती हैं।’

जी।

‘और वे?’

‘वे भी बहुत। तभी सारा रुपया देन को तयार हैं।’

देखिए ‘उसने एक बकील की तरह कहा अभी विवाह करने का मेरा विचार कतई नहीं है पर आपका लिए और एक दुष्को बाप के लिए मैं सब कुछ करने को तयार हूँ। मैं कबल भापण ही नहीं देता हूँ बल्कि मेरे सिद्धान्त जीवन में भी उतरते हैं। अब मैं कुछ बातें आप से स्पष्ट कर देना चाहता हूँ। अक्सर स्थिरियाँ मूल गैर और गर्वोली होता है। वे अपने पति के मनोभावों को बिना समझे ही उनसे सघप गुरु कर देती हैं। उनके व्यक्तिगत मामलों में हस्तक्षेप करती हैं जिनसे उनके पतिपण का जीवन नीरस और स्वभाव चिड़चिड़ा हो जाता है। मैं

राजनीति का ध्येय है समाधारण के बाले मुझे नता कहते हैं । मैं पत्नी की उपेक्षा नहीं करूँगा । लेकिन मैं उसे भरपूर पारिवारिक सुख भी नहीं दे सकूँगा ।

‘मैं आपकी दासी बन कर रहूँगी ।’ उसने दृढ़ता से कहा ।

‘रहना तो पड़ेगा पत्नी बन कर ही । क्योंकि पारिवारिक प्रेम ही सबभ्रष्ट एवं सर्वोपरि होता है । और उस प्रेम से मैं बर्धित रहना नहीं चाहता । कम से कम इतना तो अभाग्य मैं नहीं बनना चाहता । आसिर में इंसान है जीवन सासना और उसके सुनहरे पक्षों के प्रति मेरा भी सम्मोह है ।

लेकिन । वह कुछ-कुछ कहती कहती रुक गई ।

अर्थात् इस पर स्वच्छन्द हसी हस कर बोला ‘आप समझती हैं कि विवाह और आप की सम्पत्ति हड़प करन के बाद मैं आपको चरित्र हीन या दुश्चरित्रा कह कर सताऊँगा । आप ऐसा क्या ही मन में मत लाइए । हर नारी घम स्पर्श से अपवित्र नहीं होती उसके पापाचारों एवं अनतिक घर्बाओं की भिन्न भिन्न कल्पनाओं में एक विषय ज्योति जलती है । यह विषय ज्योति ही सम्मान विधाती है । उसकी पावनता को अलखड रखती है । मैं आप में तथा अन्य अपहृत महिलाओं में उसी पावनता का ध्यान करता हूँ । तत्कालीन विवशता से भी मैं अपरिचित नहीं हूँ । फिर आप रोने लगीं ? रोना अच्छा नहीं । हस कर दुख को भुला देना ही जिन्दगी है ।

‘ फिर आप का फसला ?

‘आप अपने पिता जी को कहिए हमारा विवाह १५ अगस्त ’४८ को होगा । वहेज में कसई नहीं लूँगा । लेकिन मैं एक बात आपको बताना अति शुभ समझता हूँ वह यह कि दुबल चरित्र वाले प्राणी अपने भ्रष्ट जीवन को उपभोग करन के लिए बार-बार सासायित हो उठते हैं । उन्हें केवल अनुकूल परिस्थिति की आवश्यकता रहती है ।’

गुलाब ने बस इतना ही कहा "मैं इतनी सहिष्णु और शांति-रूढ़िगी जितनी एक सवगहिष्णु रह सकती ह।"

'फिर आप जा सकती हैं।

गुलाब धली गई।

अरविंद सोचता रहा, 'आर्थिक संकट से युक्त मैं राजनीति के अज्ञात रूप अपनी महत्वाकांक्षा को निभय हिरण की भांति छलाने भरने के लिए स्वच्छंद कर दूंगा।'

इस घटना ने राजनीति क्षेत्र सामाजिक क्षेत्र एवं प्रगतिशील तत्वों में भारी हलचल फला दी। यह पहला अवसर था जब कि एक विंगिट व्यक्ति अपहृत महिला से विवाह कर रहा था। कांग्रेस के कायकर्ता मिनिस्टर यहाँ तक कि मुख्यमंत्री तक ने उसके इस क्रान्तिकारी कदम की सराहना की। उन्होंने अपने सबेरे में लिखा—“यह कदम हमारी हजारों मां बहनों का उद्धार करेगा। मैं श्री अरविंद जी की धर्म्यवाद बता हूँ और देश के युवकों से अपील करता हूँ कि वे भी रुढ़िप्रस्त समाज के पुराने बंधन तोड़ने में समय हों।'

कम्युनिस्ट पार्टी से लेकर समाजवादी गताओं तक ने उसकी भूरि भूरि प्रशंसा की साथ में उसके द्वारा बार-बार हिन्दू और हिन्दूत्व धिल्लाने के विचार को सखीय एवं विद्रव के लिए घातक कहा।

अरविंद ने विवाह के चार दिन पहले एक प्रस वार्न्सेस का आयोजन किया। इस प्रस वार्न्सेस में उसने घोषणा की, 'मैं जानता हूँ कि यदि व्यक्ति समाज की रुढ़ियों को दूर करना चाहे तो यह आसानी से दूर कर सकता है। सहस्रों अपहृत महिलाएँ देश में हैं और वेग में लार् जायेंगी। अब हमें अपनी उदारता और विनाल हृदय का परिचय देना पड़ेगा। सोचिए—पाँच पाण्डवों की द्रौपदी एक थी। पाँचों की पत्नी हो कर भी हूँ पवित्र थी। इस प्रसंग से यह सिद्ध होता है कि नारी महान है। उस घोषणा में उसने अपने भाई चाँद का भी सदेग सुनाया 'तुम एक अपहृत युवती से विवाह कर रहे हो मैं बहुत ही प्रसन्न हूँ।

नारी मांगल्य की भूति होती है। मैं तुम्हारी यशु को आशीर्वाद देन अवश्य आऊंगा।'

अन्त में उसने दृढ़ता से कहा, मैं अपनी मगतर के पिता जी से स्पष्ट शब्दों में कहलवा दिया है कि विवाह बिल्कुल सादगी से होगा। दहेज में मैं एक तिनका भी नहीं लूंगा।'

प्रस वान्क्रेम की समाप्ति के बाद उसने प्रतिष्ठ पत्रकारों को व्यक्ति गन रूप में निमंत्रित किया और उन्होंने अपने प्रचार प्रसार का महा प्रसाद पाया।

दूसरे दिन प्रायः सभी समाचार पत्रों में अरविंद के चित्र छपे और नीचे उसकी घोषणा।

अरविंद सारे पत्रों को सम्मुख रख कर गध से फून रहा था। सोच रहा था कि मेरा देग कितना सरल और भोला है।

\*

\*

\*

२०

१५ अगस्त १९४८।

बड़ी सादगी के साथ अरविंद का विवाह सम्पन्न हो गया। विवाह में शहर के सभी गण्यमान्य व्यक्ति और समाज-सुधारक उपस्थित थे।

उसका भाई चाँद और उसकी भाभी सोना उत्त रोज विगप उस्ता हित बीख रहे थे। अरविंद सोना को बल-बल कर खूब ही प्रसन्न हो रहा था। नमक की तरह सारी और फट बोल की तरह अग्रिय स्वर में बोलन वाली यह नारी कितनी सरल और मोठी हो गई थी।

अपनी सीमन्त रेखा से जिसकते हुए आँचल को सम्भालती हुई सोना बोली 'बहू हजारों में स एक साण हो, देवर जी गुलाब सचमुच गुलाब है।'

'तुम्हें पसन्द है ?

‘बहुत, और निम्न तो पल भर के लिए भी अपनी छाती को छोड़ने को तयार नहीं है।’

‘भाभी सच-सच कहना गची से अच्छी है या ।

बीच में ही भाभी लाँछना भरे स्वर में बोली, ‘सोन की पीतल से तुलना नहीं हो सकती। मुझे बहू चाहिए तितली नहीं।’

पर म जान अरविद की आँखें क्यों तरल हो गई ? उस तंगलता में एक व्यथा था दब था। एक अव्यक्त वेदना थी।

सप्ताह बीत गए।

अनुमाली की प्रथम किरण पवत की गगन चुम्बी अरणी का मधुर प्रालिगन से कर धरती पर अवतरित हुई। द्यितराई हुई रश्मियों का हृदय अत्यन्त मनोरम लग रहा था। कुछ मादान किरणें खिड़की की राह रात की मधुर स्मृति में मग्न अरविद के कपोलों पर नश्य करन लगी थीं। अचानक उनका मरुत रुक गया और उसे ऊप्या का अनुभव हुआ जिस से उसने अपने नेत्र खोल दिए।

सम्पुल सद्य यौवना मुस्कराती खड़ी थी। उसकी मुस्कान में वशी करण था। निश्चलता थी। पवित्रता थी।

अति स्नह से बोली ‘भमस्ते जा।’

अरविद ने उसको पकड़ कर अपने समीप बिठा लिया और उस की ठोड़ी को अपनी उंगलियों से पकड़ कर बोला ‘गुलाब ! अपनी पल्लुबियों में मुझे समेट लो।’

गुलाब ने फिर मुस्करा दिया।

अरविद ने उसके भीन आँखल में अपना मुँह छिपा कर कहा ‘यह आँखल कितना प्यारा है ? जो चाहता है कि इसमें समा जाऊँ ?’

तभी निम्नू आ गई।

गुलाब सज्जा के मारे हठात उठ खड़ी हुई। निम्नू खवसता से बोली, ‘घाघाजी, घाघी के । कह कर वह वापस मुड़ गई।

‘घत् पगली। गुलाब ने उसे पकड़ कर अपने सीन से लगा कर



कहा 'बच्ची बिटिया एसी बातें नहीं करती। बस कर अपन चाचाजी का मन बहला में चाय ले कर आती हूँ।'

सुनो तो। अरबिद न जाती हुई गुलाब को पुकारा। गुलाब न मुखान भरी दृष्टि अरबिद पर फेंकी। अरबिद न बटाल किया। निम्नू गुम्बारा फताने में मग्न थी, कटाक्ष वह देख नहीं पाई।

'गुलाब! भाभी और भया को भी यहाँ बुला लाना।'

गुलाब चली गई।

फटाक।

गुम्बारा फट गया।

अरबिद चौंक पड़ा।

उसको घूमते हुए बोला 'बड़ी नटपट है।'

आप से भी ?

क्या कहा ?

आप भी तो चाची के आँधल।

चाची को देख कर निम्नू चुप हो गई। फट हुए गुम्बारे को देखने लगी।

'निम्नू क्या गिजायत कर रही थी मेरी ?

कुछ नहीं। कह रही थी कि गुम्बारा फट गया। चाचाजी ने कल ही खरीदा था पूरे एक आने में।

मैंह क्यों उत्तार रही है ?' चाय बनाते हुए गुलाब न कहा फट गया है तो नया दिलवा दूँगी।'

अरबिद इतनी बेर हँसी मैंह में छिपाए हुए था। अब हँस ही पड़ा।

'आप क्यों हँसे ?

इसलिए कि एक बच्ची तुम्हें किस तरह बनाती है ?'

चाय का प्याला अरबिद के सामने बढ़ा कर गुलाब सचदरए हसर में बोली 'मुझ हर कोई बना सकता है। मैं बहुत ही भोली हूँ। एक फरेब और उपहास-परिहास को मैं घोडा भी नहीं जानती। मैं इस घर में

सब को प्रसन्न कर के पतिव्रता कहलान आई हूँ । जिन्दगी का क्लृप्त घात आई हूँ । अहिल्या का पापाण ब्रुत हूँ । ठोकर से उद्धार होन की प्रतीक्षा में हूँ । आप राम हैं । तुलसी के मृगपुरुष, मर्यादापुरुषोत्तम । मुझ विश्वास है इन्द्र के द्वारा दूली गई अहिल्या की विद्यग्ता को आप जरूर जानते होंगे ? अहिल्या को तरह मैं भी ग्रापित हूँ । शाप से मुक्त होने के लिए तपस्या की जरूरत है । यह बनना और बन कर लुप्त रहना ही मेरी तपस्या है ।” गुलाब का गला भर आया ।

भरविंद न डाइस देन की एवज में वो ही शब्द कह “गुलाब तुम्हारी यह तपस्या जरूर सफल होगी । क्षमता, धय, पति और परिवार की सेवा ही तुम्हारी सच्ची तपस्या है ।’

घाय समाप्त हो गई ।

गुलाब चली गई और उसके साथ निम्बू भी ।

भरविंद खुद नहीं उसका मन खला गया गच्ची के साथ ।

शची जिसे वह अपन जीवन का महादान देना चाहता था । बचपन से ले कर आज तक भरवों की तरह जो अपनी भरविधियों को अपने अंतर में दियाए रखते है वह भी अपनी प्रयत्न को अपन सोने में दियाए हुए था । वह अब सोच रहा था कि उसका जीवन बदल चुका है । सामाजिक परिस्थितियाँ बदल चुकी हैं । अब वह उसे कैसे प्राप्त कर सकता ? गुलाब वास्तव में पूरा नारी है लेकिन उसकी पूरता में भी मुझ पूर्ण सन्तोष क्यों नहीं मिलता ? शची ! आज शची होती तो मेरी योग्यता का सही मूल्यांकन कर के भाग-भाग हो जातो । पर शची कहीं चली गई । वह मुझ से बिल्कुल नाराज है । जीवन-चक्र भी कमा है ? विषम और विवट ।

शची न आते हुए कहा, ‘शची कहीं चली गई । घमट और क्रोध के भोंके उसे तिनके की तरह उड़ा कर ले गए ।

कोई बात नहीं । कमी न कमी भरविंद शची को जीतेगा ही । मह विवाह उसके जीवन और प्रगति के लिए अग्रस्कृत है । बिना पस आज

को नेतागिरी भी पगु है । सफल नता यही व्यक्ति बन सकता है जो या तो बिल्कुल पकड़ होता है या जिसको तिजोरियों में चाँदी के सिक्के नाचते हों ।

चाँदी के सिक्के !

गुलाब !

जीवन का महासत्र !

शची !

समय, विकट मानसिक-समय ! अरविंद न मंत्र भूँव लिए ।

\*

\*

\*

२१

‘अपन बहुत तरह के होते हैं परन्तु प्रीति का अर्थन ध्यारा ही होता है । भौरा सकड़ी को काट सकता है किन्तु वह कमल-कोय में प्रीति के कारण गलित होते हुए भी क्रुद्ध नहीं करता । गुलाब ! कहने का तात्पर्य यह है कि प्रेम ही सब शक्तिमान है मनुष्य मात्र को प्रेम में रम जाना चाहिए । प्रेम में अपन आपको आत्मसात करने के बाव प्राणी समस्त दुर्लों से मुक्त हो जाता है ।’ अरविंद सेटा हुआ सोच रहा था । उसका मुख उदास था ।

गुलाब फर्श पर बिछी बरी पर बठी-बठी चादर के बल-बूटे निकाल रही थी । तिरछी निगाह करके बोली, ‘भया और भाभी व जान के बाव तुम उदास रहने लगे हो । सारे दिन न मालूम किस बिचार में लोय रहते हो । प्रेम प्रेम प्रेम ! न जान आनकल प्रेम पर उप देन देना तुम्हें क्यों अश्या लगता है ।’

अरविंद पलंग से उठर कर उसके समीप बठ गया । उसका हाथ अपने हाथ में लेकर सहज भाव से बोला “तम ठीक कहते हो कि राज नीति जैसे नीरस और विवादास्पद विषय का सिलाड़ी प्यार को इतनी

महत्ता क्यों दे रहा है ? राजनीति की मीमांसा करने वाले विद्वान्-जन सबब यह भूल जाते हैं कि जिस राजनीतिक मता का पेट भर जाता है उसके अन्तर का प्यार भी जाग जाता है । मेरा प्यार भी जाग चुका है ।”

“तो क्या मैं आपको सतुष्ट नहीं कर सकता ?” गुलाब न उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया और बड़े प्यार से उसे सहलान लगी ।

‘तुम देवी हो सन्तोष मुझ और गाँधि, यह तीनों तुम्हारे रोम रोम में बसे हुए हैं । एक पत्नी जितनी प्रवीण और पवित्र होनी चाहिए, उतनी तुम हो । गुलाब ! पर तुम में उस मारी की तरह वह आग और तूफान नहीं है जो आदमी की पिपासा को मरन नहीं देती । एक शची थी, न मानूँ वह बेचारी आजकल कहाँ है ? अरविन्द ने देखा कि गुलाब का चेहरा मलीन हो गया है । चाँद से सलोन मुझ को राहू की दगा लग गई ह । कमलायत नयनों में गहरा विषाद घुमड़न लगा ह । अतः वह अपनी दृष्टि को विन्वामित्र और मेनका के चित्र पर जमाता हुआ बोला, मनुष्य बहुत दुबल ह और उसकी वासना अत्यन्त प्रबल । युगों की तपस्या और साधना धामना के प्रयत्न भँकि में समाप्त हो जाती हैं । वासना के सत्ताब को यदि वह रोक सकता है तो केवल पतिव्रत धर्म । और मुझे पूरा विदवास है कि तुम्हारी अलखड पति-वराधणता मुझे कभी भी नरक के लौलते कुण्ड में नहीं गिराने देगी ।

‘बाबू जी !’ मौजूर मनसुख न किवाड को ओट से पुकारा ।

‘क्या है ?’ अरविन्द सभलता हुआ बोला ।

‘ठाकुर साहब आए हैं ।’

‘उन्हें बठक में बिठाओ मैं अभी आवर ।’

जब अरविन्द बठक में पहुँचा उस समय ठाकुर नरेश मिहू दानों हाथों से अपने मिर को पकड़े हुए थे ।

‘जय माता जी की ।’

'जाइए अरविंद बाबू !' ठाकुर साहब सतक हुए। एक जम्हाई सेते हुए बोले 'धूबसिंह को फाँसी की सजा हो गई है।

"फिर खुशी मनाइए।

'खुशी क्या मनाऊ इस कांड में मैं तो सुट गया। मुझे कुछ रुपया चाहिए।

"रुपया !' वह इस तरह बोला कि ठाकुर हतप्रभ रह गया।

'मुझ वस हजार रुपए चाहियें।

"दस हजार।

'अरविंद बाबू मेरी इज्जत आपके हाथ में है। इसे घचा लीजिए।

'बिना जर और जमीन के रुपया नहीं मिल सकता।

'तो क्या हम चोर हैं ?

"चोर ! वह जोर का अट्टहास कर उठा। ठाकुर जल भुन उठा। अरविंद उसके बग्य को हिलाता हुआ बोला "ठाकुर साहब ! पूंजीवादी युग का सबसे बड़ा महामत्र घरी है कि किसी का विश्वास न करो। घन न बाप-घट में होता है। न घाप अनन घट में एक पाई छोड़ता है और न बटा अपन बाप का एक पाई के लिए लिहाज करता है। यदि वह ऐसा करता है कि तब आप समझ लीजिए कि वह पक्का ब्यापारी नहीं है।

'फिर ! ठाकुर की आँखों में प्रश्न नाच उठा।

अपना डरा बच डालिए।

डरा जानदान का रुतवा।

ठाकुर की आँखें भर गई।

"या अपनी बीबी का नेवर साइए।

और कोई उपाय ?

'अप्य में उलभना बट्टिमानों का काम नहीं। जर और जमीन ही तो रुपया बिता सकता हूँ समझ।

समझ गया। ठाकुर उठा और चला गया।

अरविंद बोला गधा कहीं का । मनसुख !

'क्या है बाबू जी ?'

"बीबी जी को कहो कि घाय यहीं ले आए ।

'बहुत अच्छा ।' वह बाहर गया और उसी पग वापस आ कर बोला एक बुढ़िया आप से इसी समय मिलना चाहती है ।

"आने दो ।

अरविंद समाचार-पत्र के पन्ने उलटन लगा । लगभग पचास पय की वृद्धा । काली-कलूटी और कठोर । चेहरे पर भयानक झुर्रियाँ और कमर झुकी हुई ।

घाते ही हाथ जोड़ कर बोली, बटा ! मुझ पर बया करो । तेरी कीर्ति मैं बहुत सुनी है । सुना है कि तुम देवता की तरह दीन हीन पर बया करते हो ?

'माँ ! आदमी देवता पल भर में बन सकता है इतना जान लो । पर तुम अपनी बात कहो, मुझे क्या कष्ट ह ?

'कष्ट ? वह क्षण भर के लिए घुप रही । जस दुख का सुलगता हुआ शोला उसके मन में भड़क रहा हो । देखते-देखते उसकी आँखों में आँसू छलक आए । धिनोत स्वर में बोली मेरा बच्चा सख्त बीमार ह । घर में एक पसा भी नहीं ह ।

'मनसुख ! अरविंद ने पुकारा ।

'जी बाबू जी ।'

बीबी जी से पच्चीस रुपए लाकर इस माँ को दे दो । और माँ जब तुम्हारा बटा अच्छा हो जाय तो उसे मेरे पास भेजना ।'

बुढ़िया भावतिरेक हो उठी । रोती रोती बोली बाकईं तुम देवता हो । भगवान मुझे चिरायु करें ।

बुढ़िया चली गई । अरविंद कुछ देर तक विचारता रहा । देश का व्यक्ति अभाव में जल रहा है । अभाव की पूरता ही गति की सफलता है लोक प्रियता का सही साधन है ।

गुलाब ने घाय लिए हुए किया "यह नतागिरी तो बहुत ही बुरा रोग है। सूरज उगने पर उसका दौरा शुरू होता है और गकतारा डूबने तक नहीं रुकता।

जनता की सेवा आसान नहीं है गुलाब। चाणक्य अपन आप की होम नहीं करते तो चन्द्रगुप्त सोना नहीं बनता। ईसा कीलों से नहीं बिघते तो ईसाई धर्म मम हीन ही रह जाता। तपागन अपनी परलो और पुत्र का मोह नहीं छोड़ते तो अहिंसा का साम्राज्य स्थापित नहीं होता, सम्राट अगोक की कूरता ही नहीं मिटती। बनान के पहले मिटाना पड़ता है। मिट कर जो बनता है वह अमिट और अजय हो जाता है। यह दुख ही हमें मुक्त की समा से विभूषित करेगा।

मैं सब्बर सुनते-सुनते लग आ गईं घाय पीजिए।

"गुलाब नाराज हो गईं। उसका स्वर दर से भर उठा "तुम्हें क्या दुख है?"

"दुख! तुम मुझ प्यार करते हो उसे मैं अत्याचार समझती हूँ। मैं इतनी नासमझ नहीं हूँ कि आपसे मन की बात ही न समझूँ। आप किसी और को चाहते हैं प्यार करते ओह! उसने अपन मुह को अपनी हयसी में छिपा लिया। मैं यह क्या कह गईं? अपने पति के बारे में मुझे ऐसा नहीं कहना चाहिए। वे देवता हाते हैं। आप मुझ माऊ कर दीजिए। मैं सीमाहीन हो गई थी।"

अरविद अविचलित रहा। हस कर बोला, बात-बात में उग्र होना अच्छा नहीं है। बनावित तुम इस बात से अपरिचित हो कि मुझ कितनी दुश्चिन्ताएँ एक साथ रखनी पड़ती हैं। तुम्हारा आरोप है कि मैं किसी और को प्यार करता हूँ। हो सकता है किन्तु इसका मतलब यह नहीं कि मैं तुम पर अत्याचार करता हूँ। गुलाब मेरे हृदय की विगा सता और पवित्रता पर सदेह परके मुझ बचत पहुँचाओ। एक दिन था कि मैं शचो को बहुत प्यार करता था। लेकिन मैंन बाद में महसूस किया कि मैं उसे प्राप्त नहीं कर सकता। जो अप्राप्य है उसका लिए

शक्ति व्यय करना हमारा काय नहीं। इस पर तुम शर्मा से रूप-गुण में कम भी नहीं हो। फिर मैं अपने को क्यों पीड़ित करूँ ?

“फिर आप कभी भी परिवार और दाम्पत्य-मुख पर चर्चा क्यों नहीं करते ? क्या जीवन के इतने बड़े वायरे में उनका कोई स्थान नहीं ?

‘ दाम्पत्य-मुख जिस व्यक्ति के समक्ष साकार खड़ा हो, उसके लिए चर्चा का क्या महत्व हो सकता ? व्यथ कल्पनाओं का वितान बुनना भी व्यर्थ नहीं । ’

“रात को आप अलग रहते हैं, उसे मैं क्या समझूँ ?

मैं रात को दस बजे के बाद अध्ययन करता हूँ। विभिन्न मतों, धर्मों, नीतियों और शास्त्रों का गम्भीर चिंतन मनन ही मुझे सफलता-शुद्ध की ओर अप्रसर कर रहा है। गुलाब यह निश्चित है कि मैं चाहता तो सुन्दर स सुन्दर और गुणी से गुणी युवती से विवाह कर सकता था, फिर तुम्हीं बताओ कि तुम जसी अपहृत महिला और अशिक्षिता से क्या-क्या करन का कारण क्या हो सकता है ? सिर्फ कर्त्तव्य की पालना। कर्त्तव्य के समक्ष सब गौण है। तुम, मैं और हमारे आचार-विचार व्यवहार बताओ।

गुलाब एकदम शांत हो गई। वह अपहृत ह, यह विचार उसके मस्तिष्क में घुर्झा बन कर उठने लगा। यह कांपने लगी। वह अपने उस पति पर खामखा ही सन्देह करती ह जो इतना महान् ह जितना ईश्वर। जो इतना उदार ह जितना कण।

वह गद्गद होकर बोली मैं औरत हूँ। एक बेटी नस-नस में बसा हुआ ह। मैं भूल जाती हूँ कि आप भता है। आपको सामन बड़ी कठिनाइयाँ हैं। आप मुझे क्षमा कर दीजिए।

‘ क्षमा ! ’ उसने गुलाब को अपने सीने से लगा कर कहा, ‘ क्षमा पति अपनी पत्नी को क्षमा नहीं कर सकता है। अधिकार समझ कर अनजान में किया अपराध अपराध नहीं होता। लेकिन जिन्दगी सुख से बसर करना चाहती हो तो घाग से ऐसे सवाल न किया करो। वे मेरे



मन को बड़ी तक्लोक पहुँचाते हैं। मुझ भवण और शोधित कर देते हैं। गुलाब ! साजन की प्यारी सजनी वही हो सकती है जो पति को परमात्मा मान कर पूजे। उसकी इच्छा को पूरा करे, चाहे वह इच्छा बुरी स बुरी क्यों न हो। हमारे प्राचीन साहित्य में एक ही महासती की कथा आती है जो अपने अपाहिज पति को कंध पर बिठा कर बेगमा क घर पहुँचान जाती थी और सवेरे वापस लाती थी। साम्प्रदायिक सती का बनावट जाना इस बात का प्रतीक है कि स्त्री के लिए श्रेष्ठतम पति को आत्मा है। मुझ विश्वास है कि भविष्य में तुम आदर्श पत्नी बनने को काशिश करोगी।

गुलाब रोने लगी थी। उसके छलकते हुए आँसुओं को पोंछता हुआ अरविन्द विगसित स्वर में बोला 'प्रायश्चित्त कर रही हो गुलाब ! तुम्हारे बहते हुए अभु तुम्हारे पाप का पश्चात्ताप हैं। पश्चात्ताप के उपरांत आदमी निमल हो जाता है—ठीक बादल छट जान के बाद आकाश की तरह शुभ्र। सुनो गुलाब रात्रमीति के अलाइ में अनेक मोड़ आएंगे। लोग मुझ घोर, उच्चरणा, डाकू व्यवहारो महान् देवता प्रभु दाता और अन्नदाता कहेंगे। लेकिन तुम्हें सिर्फ इतना ही मानना है कि उपमाएँ इन्द्रधनुष की तरह क्षणिक हैं पवा हुई हैं मिट जाएंगी। सत्य रह जाएंगे—तुम्हारा पति कबल अरविन्द !

गुलाब धरण-स्पर्श करके खली गई।

अरविन्द न सोचा 'जब तक इस पर पूरा आतक नहीं जमा लिया जाएगा तब तक गची मिल भा जाएगी तो भो अपने पास नहीं रख सकता। मैं गची को छोड़ूँगा ही। गची के बिना मैं अपूरण हूँ। अपूरणता लेकर मनुष्य सुख नहीं पा सकता।

गुलाब ! उसने पुकारा मैं तब पानी से नहाऊँगा जल्दी स पानी गम कर दे।

वह स्नानघर जान के लिए तयार होने लगी।

\*

\*

\*

३० जनवरी १९४८ ।

हरया ।”

किसकी ?

‘महात्मा गांधी की ।

‘नहीं रे ।’

“अभी-अभी रेडियो बोला है कि राष्ट्रपिता विडला भवन की सीढ़ियों से उतर रहे थे कि अचानक किसी हिंदू ने उनके सीन में सीन गोलियाँ दाग दीं । बापू का वहीं प्राणान्त हो गया ।’

अरविंद की धारों के आग अघरा छा गया । उस विश्वास नहीं हुआ कि युग पुरुष की छाती को भी छननी करन वाला गतान क्या जीवित है ? तब उसके समक्ष अतीत चित्र की भाँति धूम गया । प्रजा में जागृति और समृद्धि लाने वाले व्यक्तियों का अत इसी प्रकार बेलन को मिला है । वह कुछ देर तक धूप में डूबा रहा ।

अत में उसन इस मृत्यु का राजनीति की दृष्टि से मूल्यांकन करना शुरू किया । उसन सोचा—हिंदू महात्मा का मृत्यु दिन प्रति दिन क्षीण होता जा रहा है । हिंदुत्व की स्थापना के नाम पर इस सभा के नेता केवल प्रपना नतत्व कायम रखना चाहत है । न इनके पास कोई सही दंगन है और न कोई सिद्धान्त—भो इस स्वतंत्र देग में नयी और नए शासन की स्थापना कर सके । मैं अपनी राजनीति की पहली बलास पूरी कर ली । घम प्रपान दंग में धार्मिक नता बन कर ही चंद दिनों में लोकप्रिय बना जा सकता ह । मैं लोकप्रिय हो गया । प्रजा से सम्बन्ध स्थापित हो गया । अब मुझ यदि इस स्वतंत्र देग का शासन बनना ह तो मुझ तरन्त इस सस्या से पयक हो जाना चाहिए । कई बार प्रदंग कांपस के मन्त्री और अध्यक्ष मेरे पास आए थ । पद का प्रलोभन और भविष्य की प्राणा दोनों देन की तयार थ, पर उचित प्रव

अरविंद पल भर के लिए हका और भावनाओं में घुलता हुआ कहण स्वर में बोला "उन्होंने छोट छोटे नादान बच्चों को आर्क्षित करने के लिए विभिन्न प्रकार के खेलों का आयोजन कर के उनके सरस मस्तिष्क में जहर भरना शुरू किया। देश में फली बंधनी का पापवा उठा कर उन्होंने अपना आर्थिक पहलू हल किया। धम के नाम पर धपना असली उद्देश्य छिपा कर उन्हें प्रजातंत्र के लिखाफ किया और अंत में अपनी टिकटटरंगिण स्थापित कर के सारे विश्व को मुट्ट की विपाक भाग में भोंक दिया। उस मुट्ट की पृष्ठभूमि के भिन्न भिन्न नारे थे। जमन अपने को विशुद्ध आप कहते थे। स्वस्तिक का निगान भी राजनतिक उल्लू सीधा करन का साधन मात्र था। इसी प्रकार यह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ हिंदू धोर हिन्दुत्व के नारे के पीछे हमारी महान् आत्माओं को मष्ट कर हमारी स्वातंत्रता को खतरे में डाल सकता है।

'अन्त में मैं इतना ही कहूंगा कि सरकार ऐसी हिंसात्मक प्रवृत्तियों का दमन करे उन पर प्रतिबन्ध लगाए और उनको पूर्ण रूप से बुचबने का प्रयास करे।

भाषण समाप्त हो जान के बाद जिसाध्यस, ठाकुर मोहनसिंह एव कई अन्य वक्ताओं ने बापू को अर्द्धजितियाँ अर्पित कीं।

\*

\*

\*

२३

रात हो गई थी।

धातावरण में अजीब सभ्राटा छाया हुआ था। प्रकृति उदास धोर समाधिस्थ थी। पवन की सौंघ-सौंघ बुल का संचार कर रही थी। सड़कें गून्य और प्रजा निस्तब्ध थी।

गुलाब छाना बनान में व्यस्त थी।

अरविंद जिसन को समझा रहा था 'मुनो किसन तुम्हारा पहला

काम होगा कि जितने भी शरणार्थी हैं तुम उनमें यह खबर तुरन्त फला दो कि यह हत्या सघ द्वारा की गई है। अच्छा तो यह होगा कि तुम घर घर जाकर इस बात का प्रचार कर दो।”

किसन ने विश्वास दिलाया 'यह काम बड़ी चतुराई से पूरा हो जाएगा।

“यह तो दस रुपय।” उसने अपनी जब से दस का एक नोट निकाल कर कहा कल मे तुम्हें शुद्ध छावी पहननी होगी। अब इस तरह काम नहीं चलेगा, हर जाति और हर धर्म में अपना एक विनिष्ट व्यक्ति रखना होगा। अब हमें हमें राज्य और प्रजा के कर्तव्यों को ही केन्द्र बिन्दु मान कर भाषण देने होंगे व विज्ञप्तियां प्रसारित करनी होंगी। राज्य में शांति स्थापना, मुख्यवस्था याय, शिक्षा, स्वास्थ्य, समाज-सुधार आर्थिक समानता के नारे लगाने होंगे। अब हमें अपना दायरा बहुत ही विस्तृत करना होगा।

किसन अर्द्धालु गिप्य की तरह अरविंद की सभी बातें सुनता रहा जब बातें समाप्त हुईं तब वह चला गया। (1904-21/10/1904)

(अरविंद घटों सोचता रहा। उसके समक्ष कई पार्टियां थीं। शोपित और गरीबों का प्रतिनिधित्व करने वाली कम्युनिस्ट पार्टी। उसने कई बार अपने चिंतन और मनन में इस महान सत्य को समझा है) माक्स और एंगल्स की सबसे बड़ी ऐतिहासिक देन यह है कि उन्होंने सत्तार के सभी देनों के मजदूरों को उनके अपने कर्तव्य और उनके अपनी भूमिका बताई और उनसे कहा कि उन्हें सबसे पहले उठ कर पूंजी के खिलाफ क्रांतिकारी लड़ाई शुरू करनी चाहिए और इस लड़ाई में सभी मेहनतकों और शोपितों को अपने साथ एकत्रित करना चाहिए। अरविंद देख रहा है कि अब उन महान् समाजवादियों की भविष्यवाणी पूरी हो रही है। (हैदराबाद का सामन्तवाद विरोधी किसान आन्दोलन जिसने विशाल तैलगाणा में अपना उग्र रूप धारण कर लिया है। क्योंकि वहाँ की किसानों का प्रतिनिधित्व पूंजीपति बग एष सामन्त करते हैं) जिन्हें जनता बतर्द

नहीं चाहती। तभी यहाँ एक संघ शुरू हुआ, और हिन्दुस्तान के इतिहास में पहली बार जनता की सत्ता स्थापित हुई। (इसी भाँति अखिल भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी अपने नेतृत्व में सामन्ती राजाओं, जमींदारों, पूँजीपतियों और विदेशी साम्राज्यवादियों के खिलाफ जनता को संगठित करके उन्हें अपना सही अधिकार दिस्तान में सघपरत एव प्रयत्नगीत है।) सबहारा क उत्पीडन के मम को समझ कर 'दुनिया के मजदूर एक हो' का नारा धुसद करन वाली यह जनवादी सत्ता एक दिन घय की विपमता मिटा कर विश्व में मजदूरों एव किसानों की साथभीमिक सत्ता स्थापित करन में अवश्य सफल होगी। लेकिन अभी परिस्थिति इनके अनुकूल नहीं है। आधुनिक इस के सहस्रहते छत और सुखी जीवन जारदाही के अमानुषिक उत्पीडन की भयकर खूनी प्रतिक्रिया है लेकिन भारतवर्ष में इसके ठीक विपरीत स्थिति है। अमा तो किसान और मजदूर अपने अधिकार क्या हैं यह भी बेर से समझें और में उतनी बेर तक प्रतीक्षा नहीं कर सकता। तब ? तब मुझे अपनी महत्वाकांक्षा को पूरा करने के लिए कांप्रेस पार्टी में सम्मिलित हो जाना चाहिये। कांप्रेस के कार्यकर्ता चाहते भी हैं कि में कांप्रेस में सम्मिलित हो जाऊँ। पर साथ में मेरी एक बात यह भी रहेगी कि मैं कांप्रेस में तब सह्य सम्मिलित होऊंगा, जब वह मुझे आगामी चुनाव में अपना टिकट देगी।

तीसरे दिन प्रमुख कांप्रेस कार्यकर्ताओं की बैठक हुई जिसमें प्रान्तीय कांप्रेस कमेटी के अध्यक्ष भां प। इस बैठक में कई महत्वपूर्ण समस्याओं के साथ यह भी निश्चय किया गया कि अरविंद को कांप्रेस में सम्मिलित कर लिया जाय। क्योंकि इसके साथ एक भारी जनमत कांप्रेस में सम्मिलित हो जाएगा और कुछ विरोध उत्पन्न करने वाले जमींदार भी।

भारतवर्ष की सबसे समृद्ध इस संस्था का यह रक्षया सदा से रहा है कि प्रतिक्रियावादी तत्वों से समझौता करके जनता के सही प्रतिनिधित्व से वंचित रहना। यही मुख्य कारण है कि जनता दिन प्रतिदिन इससे दूर होती जा रही है।

काफी सोच विचार के बाद अरविंद ने खादी पहन ली। उसके साथ ठाकुर मोहनसिंह, ठाकुर नरेन्द्रसिंह और कुछ अन्य सेठ-साहूकारों ने भी अपना घोला बदल लिया।

एक पूरा का पूरा प्रतिक्रियावादी दल धपन निहित स्वयंओं को लेकर कांग्रेस में सम्मिलित हो गया।

दूसरे ही दिन सभी नये सक्रिय सदस्यों ने आम सभा में यह घोषणा की कि राष्ट्रपिता गांधी जी की हत्या के बाद साम्प्रदायिकता का कुपरिणाम हमारे सम्मुख आ गया है। अतः हम रामराय की कल्पना करने वाले, मानवता-पोषक, अहिंसा, शांति और प्रेम के इच्छुक बनकर तिरंगे भंडे के नीचे आते हैं। हम प्रतिज्ञा करते हैं कि सच्चाई, सेवा भावना और जन-कल्याण की प्रेरणा से हम कार्य करेंगे। जनता भी हमें अपना सेवक समझ कर हमें पूर्ण सहयोग देगी।

\*

\*

२४

देश में प्रजातंत्र हुआ।

प्रजातंत्र देश का प्रथम निर्वाचन।

देश को विभिन्न पार्टियों ने अपने-अपने उम्मीदवार खड़े किए थे। ज्यों-ज्यों निर्दिष्ट तारीख समीप आ रहा था त्यों-त्यों चुनाव की सरगमियाँ बढ़ती जा रही थीं। जसा कि प्रजातांत्रिक शासन में प्रजा का सही प्रतिनिधित्व करने के लिए उम्मीदवार योग्य शिक्षित सम्भोर, निर्भीक और राजनीति का अनुभवी होना चाहिए वहाँ उम्मीदवारों का निर्वाचन दलों के कार्यकर्ताओं ने धपन निहित स्वयंओं को मद्देनजर रख कर किया। चाहे वह उम्मीदवार सिद्धान्तगत रूपाणी सोभरहित, नतिक और धारित्र की सबसत्ता रखता ही न हो।

प्रत्येक पार्टी के बड़े बड़े घोषणापत्र एवं विज्ञापितियाँ नित्य प्रकाशित

की जाती थीं। उन में जनता के प्रति अपन भावी कार्यक्रमों और मौजूदा नीतियों का उल्लेख होता था। शासन-सत्ता सम्हालने के बाद जनता की सुख-समृद्धि के सुनहरे सपनों का ओजपूर्ण गन्गावहलियों में अंकन होता था।

अरविन्द कांप्रेस का टिकट ले कर लडा हुआ था। उस का एक विरोधी तो कोई ईमानदार प्रजासमाजवादी पार्टी का उम्मीदवार था और दूसरा रामराज्य परिषद का कोई जर्मोदार।

उन को पराजित करन के लिए अरविन्द यन्त्र की भांति कार्य करता था। वह समझता था कि यही विजय उसके जीवन के दूसरे मोड़ की महान विजय है।

उसने जन्हीं दिनों एक बुलेटिन का प्रकाशन प्रारम्भ कर दिया। इस बुलेटिन द्वारा वह अधिक से अधिक मतदाताओं को अपन साथ कर रहा था। उस बुलेटिन में उसने महात्मा जी के सिद्धान्तों और सम्पूर्ण रामराज्य का नक्शा खींचा था। देश की सरकारों और व्यवस्थाओं की बेगनी प्रगति और उन्नति में सहयोग देने का आह्वान किया था।

चुनाव तिथि के तीन दिन पहले गलाब को ज्वर आ गया था। उस की हानत ठीक नहीं थी पर अरविन्द अपन समय का 'धृष्ट-नता' अपने मतदाताओं के घरों के चक्कर लगा रहा था। वह सारे दिन एक-एक घर जाता और उन्हें आश्वासन देता कि मैं आप के दुख-दुखों को दूर करन में तन और मन लगा दूंगा। आप का मत सभी रंग ला सकता है जब आप उस दल का ही मत दें जिस दल का इस देश में जनमत हो। आज जनमत कांप्रेस का है इस लिए आप अपना वोट कांप्रेस को दे कर उस सबल बनाए। उस न सारी-सारी रात अपन कार्यकर्ताओं के साथ वे पोस्टर चिपकाए जिन में बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा था— देश का गति किसान और किसान की शक्ति बस और बस हमारा चुनाव चिह्न है। अतः कांप्रेस उम्मीदवार थी अरविन्द कुमार का नाम है। उम्मीद 4 एक नया पोस्टर बनाया था। उसमें उसका निम्न भाग पर 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100 101 102 103 104 105 106 107 108 109 110 111 112 113 114 115 116 117 118 119 120 121 122 123 124 125 126 127 128 129 130 131 132 133 134 135 136 137 138 139 140 141 142 143 144 145 146 147 148 149 150 151 152 153 154 155 156 157 158 159 160 161 162 163 164 165 166 167 168 169 170 171 172 173 174 175 176 177 178 179 180 181 182 183 184 185 186 187 188 189 190 191 192 193 194 195 196 197 198 199 200 201 202 203 204 205 206 207 208 209 210 211 212 213 214 215 216 217 218 219 220 221 222 223 224 225 226 227 228 229 230 231 232 233 234 235 236 237 238 239 240 241 242 243 244 245 246 247 248 249 250 251 252 253 254 255 256 257 258 259 260 261 262 263 264 265 266 267 268 269 270 271 272 273 274 275 276 277 278 279 280 281 282 283 284 285 286 287 288 289 290 291 292 293 294 295 296 297 298 299 300 301 302 303 304 305 306 307 308 309 310 311 312 313 314 315 316 317 318 319 320 321 322 323 324 325 326 327 328 329 330 331 332 333 334 335 336 337 338 339 340 341 342 343 344 345 346 347 348 349 350 351 352 353 354 355 356 357 358 359 360 361 362 363 364 365 366 367 368 369 370 371 372 373 374 375 376 377 378 379 380 381 382 383 384 385 386 387 388 389 390 391 392 393 394 395 396 397 398 399 400 401 402 403 404 405 406 407 408 409 410 411 412 413 414 415 416 417 418 419 420 421 422 423 424 425 426 427 428 429 430 431 432 433 434 435 436 437 438 439 440 441 442 443 444 445 446 447 448 449 450 451 452 453 454 455 456 457 458 459 460 461 462 463 464 465 466 467 468 469 470 471 472 473 474 475 476 477 478 479 480 481 482 483 484 485 486 487 488 489 490 491 492 493 494 495 496 497 498 499 500 501 502 503 504 505 506 507 508 509 510 511 512 513 514 515 516 517 518 519 520 521 522 523 524 525 526 527 528 529 530 531 532 533 534 535 536 537 538 539 540 541 542 543 544 545 546 547 548 549 550 551 552 553 554 555 556 557 558 559 560 561 562 563 564 565 566 567 568 569 570 571 572 573 574 575 576 577 578 579 580 581 582 583 584 585 586 587 588 589 590 591 592 593 594 595 596 597 598 599 600 601 602 603 604 605 606 607 608 609 610 611 612 613 614 615 616 617 618 619 620 621 622 623 624 625 626 627 628 629 630 631 632 633 634 635 636 637 638 639 640 641 642 643 644 645 646 647 648 649 650 651 652 653 654 655 656 657 658 659 660 661 662 663 664 665 666 667 668 669 670 671 672 673 674 675 676 677 678 679 680 681 682 683 684 685 686 687 688 689 690 691 692 693 694 695 696 697 698 699 700 701 702 703 704 705 706 707 708 709 710 711 712 713 714 715 716 717 718 719 720 721 722 723 724 725 726 727 728 729 730 731 732 733 734 735 736 737 738 739 740 741 742 743 744 745 746 747 748 749 750 751 752 753 754 755 756 757 758 759 760 761 762 763 764 765 766 767 768 769 770 771 772 773 774 775 776 777 778 779 780 781 782 783 784 785 786 787 788 789 790 791 792 793 794 795 796 797 798 799 800 801 802 803 804 805 806 807 808 809 810 811 812 813 814 815 816 817 818 819 820 821 822 823 824 825 826 827 828 829 830 831 832 833 834 835 836 837 838 839 840 841 842 843 844 845 846 847 848 849 850 851 852 853 854 855 856 857 858 859 860 861 862 863 864 865 866 867 868 869 870 871 872 873 874 875 876 877 878 879 880 881 882 883 884 885 886 887 888 889 890 891 892 893 894 895 896 897 898 899 900 901 902 903 904 905 906 907 908 909 910 911 912 913 914 915 916 917 918 919 920 921 922 923 924 925 926 927 928 929 930 931 932 933 934 935 936 937 938 939 940 941 942 943 944 945 946 947 948 949 950 951 952 953 954 955 956 957 958 959 960 961 962 963 964 965 966 967 968 969 970 971 972 973 974 975 976 977 978 979 980 981 982 983 984 985 986 987 988 989 990 991 992 993 994 995 996 997 998 999 1000

वेधतार्भा के चित्र अंकित करा कर यह नारा लिखाया था कि कांग्रेस धार्मिक स्वतंत्रता को पक्षपाती है अतः कांग्रेसी उम्मीदवार श्री अरविन्द कुमार को घोट दो ।

मतदान का समय आया ।

अरविन्द की ओर से ठाकुर मोहनसिंह एव ठाकुर नरेन्द्रसिंह मोटरे दौड़ा रहे थे । धार्मिक और अधधार्मिक जितने भी तरीके सम्भव हो सकते थे, वे प्रजातंत्र देश के प्रथम निर्वाचन में उपयोग किए गए ।

परिणाम निकला—अरविन्द भारी बहुमत से विजयी हो गया ।

इस चुनाव से कांग्रेस के सही संगठन का आका सबके सम्मुख स्पष्ट हो गया । विशेष कर स्वतंत्रता संग्राम के प्रमुख सनानी भूतपूर्व मुख्य मंत्री को नारी मता से रामराज्य के उम्मीदवार से पराजय । यह पराजय कांग्रेस के लिए असह्य थी । अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के माननीय अध्यक्ष को मुख्य मंत्री की पराजय प्रान्तीय कांग्रेस की हार मालूम हुई ।

\*

\*

\*

२५

राजनीति का चक्र घलता रहा ।

कल का धीर, गभीर और उदात्त युष्क आज विधान सभा का सदस्य बन गया । मुनत हैं कि चुनाव सङ्ग के तरीकों के लिए उसन दाहर के एक अयन्त कुशाप्रबद्धि वकील से सलाह ली थी, जिम्का परिणाम यह निकला कि छद्मिवादी जनता न जा अब भी राजतंत्र में विश्वास रखता थी जो अपने राजा को घोट बेन को दद प्रतिज्ञ था ने भी उम घोट दिव । क्योंकि एक माप ससद और विधान सभा का चुनाव हुआ था और अरविन्द का चुनाव चक्र अयन्त मुदद था ।

इस सफलता का बघाई क रूप में घरीम का पूर एक हजार दपए मिसे ।



नयी मिनिस्ट्री स्थापित हो गई । प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष न अपनी कार्यकारिणी की सलाह से उचित पत्रों का चुनाव किया और समस्त मिनिस्ट्रों की लिस्ट के-द्वीप हार्ड कमाण्ड के सम्मेलन अन्तिम निर्णय के लिए भेज दी गई ।

दायज ग्रहण करने के पश्चात् अरविन्द ने गृह मंत्री के रूप में प्रेस प्रतिनिधियों के समक्ष घोषणा की, मैं इस पद को ग्रहण करते हुए अत्यन्त प्रसन्न हूँ और साथ ही शंकाकुल भी । शंकाकुल इसलिए कि लोकहित लोक-कल्याण और प्रदेश की सर्वोत्तम उन्नति में मैं कहीं तक सफल होऊँगा यह भविष्य के गम में है । यह पद व्यक्तिगत मान प्रतिष्ठा पर चार चाँद सगान के लिए नहीं है अपितु प्रदेश के सामूहिक विकास में अपनी समस्त शक्ति होम करने को है । मैं पत्र प्रतिनिधियों के समक्ष प्रायना कहूँगा कि वे हमें कभी दुबल और पयध्रष्ट न हों । हम जब जब पद के मोह में उन्मत्त होकर गलत धारणा, गलत योजना और गलत कार्य करने को उत्तेजित हों, तब-तब वे हमें सावधान करें और सही धारणा दें । मुझ विश्वास है कि आप हमारा पय प्रदर्शन करेंगे ।

अरविन्द धोलते-धोलते भाव विह्वल हो गया था । आँसों की सजलता में आत्मा का सख्य इस प्रकार चमक उठा जैसे घनघोर घटाओं में बिजली । सब पत्रकार उससे प्रभावित हो गए । दूसरे ही दिन समस्त पत्रों ने उसके भाषण को विनिष्ट रूप से प्रकाशित किया ।

गृह मंत्री के पद पर आसीन होने के बाद अरविन्द सरकार द्वारा प्रदत्त बगले में चला गया, पर उसे पूरे दो सप्ताह गुलाब से घात करने तक का अवसर नहीं मिला । उसका जीवन इतना व्यस्त हो गया कि केवल राजनीति की अटकलबाजियों के अलावा उसे कुछ भी नहीं भाता था । अपनी प्रबुद्ध बुद्धि के सहारे वह रात दिन बड़े-बड़े नेताओं से साठ-साठ करता रहता था । क्योंकि प्रान्तीय कांग्रेस के सगठन में जो प्रति कियावाही सत्व मिल गए थे उनसे जागरूक रहना कर्तव्यनिष्ठ नताओं का काम हो गया था । सब से पहले उसने उहाँ जागरूक नेताओं में

अपनी प्रगतिशील विचारधारा का विश्वास विठाया। ताकि मध्य में जब कभी भी मिनिस्टरी में परिवर्तन हो तो उसका पद पूर्ववत् कायम रहे।

जब मुख्यमंत्री भारत के प्रधानमंत्री से भट करने चले तो अरविंद भी उनके साथ योही धमने घसा गया। लेकिन जाते समय उनमें अपनी तिकड़म-उत्पादक सुखि का परिचय दिया। अपने बगले पर जब पत्रकारों को एकत्रित कर के उसने कहा कि हम दोनों प्रधानमंत्री से प्रांत की राजनीति पर वार्तालाप करने आ रहे हैं।

दिल्ली पहुंचने पर प्रधान-मंत्री कई विनोय मामलों में इतने व्यस्त थे कि उन्होंने मुख्य मंत्री से बातचीत करने में सर्वथा असमर्थता प्रकट कर दी और कहा कि हा सके तो घाप दो सप्ताह के बाद मिलें।

मुख्य मंत्री का चेहरा उतर गया।

लेकिन अरविंद हताग नहीं हुआ। यह विकट से विकट स्थिति में भी अपने धैर्य को नहीं छोटा या। काफी देर तक विचार कर उसने बड़े ही नम्र व गिष्ट शब्दों में प्रधान मंत्री के प्राइवेट सेक्रेटरी से निवेदन किया कि आज उनका क्या प्रोग्राम है? यदि सम्भव हो सके तो आप माननीय मंत्री जी से निवेदन कीजिए कि वे मुझे सिर्फ पाँच मिनट दें। मैं परामित मुख्य मंत्री के पुनः चुनाव पर उनसे गम्भीर वार्तालाप करना चाहता हूँ। उसने बड़ी धतुराई से अंत में यह वाक्य और जोड़ दिया "यदि घाप की कृपा हो तो यह वाक्य बड़ी सफलता से हो सकता है। मैं आप का सदय कृतज्ञ रहूँगा।"

अरविंद हम बात से बिलकुल परिचित था कि मनुष्य का अहम् जब जाग जाता है तब यह बहुत बोन बन जाता है। सेक्रेटरी साहब का अहम् जाग गया। वे विनोत हो कर बोले 'सब है कि आज प्रधान मंत्री का कार्यक्रम इतना व्यस्त है कि एक क्षण क लिए भी उन्हें मिलना सम्भव नहीं है।

“क्या आप मुझ उनका कार्यक्रम के बारे में जानकारी दे सकते हैं ?  
अरविंद ने पूछा ।

‘क्यों नहीं ?’ और उन्होंने दिन भर का कार्यक्रम अरविंद को  
सुना दिए ।

कार्यक्रम सुन कर अरविंद ने कहा, क्या आप मुझ चीन के राजदूत  
को दो गई पत्रों का निमन्त्रण पत्र दिला सकते हैं ? मैं राष्ट्रपति भवन  
में उपस्थित हो जाऊंगा और उनका इंतजाम कर लूंगा ।

निमन्त्रणपत्र मिला गया ।

निमन्त्रण प्राप्त कर के अरविंद मुख्यमंत्री के निवास स्थान की  
आर गया जहाँ वे ठहरे हुए थे । सयोग से वे कांप्रेस हार्ड-ब्रान से  
गम्भीर वार्तालाप करने में व्यस्त थे । अरविंद वहीं पर बैठ गया । उसके  
हाथ में स्टीफन ज्वेग की पुस्तक जोरफ फूले थी । राजनीति का  
यह घतुर खिलाड़ी विषय से विषय परिस्थिति में कितना धीरे धीरे  
गम्भीर रह कर प्रस्तुत आपत्तियों एवं संकटों को निवारण करता था ।  
क्रूर बुद्धि रक्तहीन निस्तेज प्रभावहीन बोलने वाला यह व्यक्ति अधीर  
से अधीर होन पर भी उमावित नहीं होता था । मृत्यु-युद्धयन्त्र बनते  
बेखर भी वह अपने वाक-बौद्धि का परित्याग नहीं करता था । यही  
साधारण व्यक्ति एक दिन अपनी कुशाग्र बुद्धि असीम मनोबल, प्राचुर्य  
आत्म-बल के कारण फ्रांस का महान् राज-नना बना ।

अरविंद विचार रहा था एक सार्वजनिक कार्यक्रम अथवा मला  
को उतना ही घतुर होना चाहिए जितना कि बीबा, कि धार करने के  
लिए जानकारी के उठ हुए हाथ की देख कर उठ जाय, इतना सजग  
जितना बुद्धि जो झट्ट मिले कि जग जाय, इतना मिष्टभाषी जितनी  
कायल कि सब पर अपने सम्मोहन का जादू बाल सके ।

वह विचार ही रहा था कि इतन में मुख्यमंत्री पधार गए ।  
माते ही बोले ‘मैं कांप्रेस अध्यक्ष से वार्तालाप कर आया हूँ अभी एक

एम एल ए का जो बेहोत हुआ है उसी क्षेत्र से भूतपूर्व मुख्यमंत्री को उप चुनाव लड़ने का आदेश मिल गया है।”

“यह तो आप ने बड़ी खुशखबरी सुनाई। चलो अरुड़ा हुआ, भभ्रम मिटा कह कर अरविंद कुछ देर तक अनमना-सा खड़ा रहा देखिए मैं प्रधान मंत्री से मिलने का समय निश्चित कर लिया है। बड़ी मिन्नतों के बाद उन्होंने सिर्फ पाँच मिनट का समय दिया है। कोई आप का विंगाप सदेग हो तो सुना आऊँ।”

मुख्यमंत्री का सम्मान जसे दृष्टित हो गया। अत्यन्त बलशाली अजगर की भाँति उन्होंने एक लम्बा साँस लिया। चोट खा कर जिस तरह साँप कुडली मार कर बँठ जाता है ठीक उसी प्रकार के हित्त्र भाव मुख्यमंत्री की आँखों में चमके। उस हित्त्र भावों में एक विचित्र दोनता घोर कातरता थी। वे बोले ‘क्या आप मुझ किसी भी तरह अपने साथ नहीं ले जा सकते?’

यह सम्भव नहीं है पर पब्लिसिटी आपकी और हमारी साथ-साथ ही होगी, आप चिंता न करें।” हालाँकि अरविंद चाहता तो मुख्यमंत्री को अपने साथ ले जा सकता था लेकिन वह जानता था कि यदि मैं अपना प्रभुत्व इन सब पर स्थापित करना चाहता हू तो इन्हें सदैव इस भावना से पीड़ित करना होगा जिस से य अपने को मुझ से हीन समझें। ये यह अनुभव करें कि मैं राजनीति का प्रयोग नता हूँ भरे हाथ में बडे से बडे नताधों की कुँजी है। मेरी बात कायस क अध्याय से ले कर साधारण कायकर्ता तक मानता है।

ठीक पाँच बजे अरविंद राष्ट्रपति भवन पहुँचा।

अभी तरु प्रधानमंत्री नहीं आय था। वह इपर उधर अपनी जान-महवान का कोई व्यक्ति खूँडन लगा। अरविंद को उस उच्च अधिकारियों की उपस्थिति में अपनी वास्तविक स्थिति का ज्ञान हुआ कि एक राज्य क गहमत्री का क्या अस्तित्व है? जमे एक कुण्डिया क निर्माण में एक तिनक का होता है सागर में एक लहर का होता है। ठीक घरी

अस्तित्व गहमश्री अरविद का था । उसे हतनी उपस्थिति के बायजूद भी अवेलापन महसूस हो रहा था वह सकोध से अभिभूत हो उठा । ग्लानि के मारे उसके भाल पर स्वेदकण उभर आए । वह प्रस्तर की तरह अचल हो करे उद्यान के एक कोन में बठ गया ।

अचानक किसी न उस पुकारा, 'हल्लो मिस्टर अरविद !'

अरविद अकचका उठा । देखा अप्रती धनिक प्रभात' का विगय प्रतिनिधि मिस्टर आष्ट है । कथ पर कमरा लटकाय वह मस्तो में घूम रहा है ।

अरविद के तन ओर मन में शक्ति का सचार हो गया । वह हठात् उठा और अपनी लहर को टोपी को व्यवस्थित करता हुआ उत्साह से बोला, 'हल्लो, डियर आष्ट, हाऊ डू यू डू ?'

ओ के !" आष्टे न हाथ मिला कर छोटा-सा उत्तर दिया ।

'आप यहाँ कैसे ?' अरविद ने मुस्करा कर पूछा ।'

'संपादक जहाँ भी ड्यूटी सनात कर दे बदे को यहीं हाजिर होना पडता है । पर आप ?' जैसे आष्ट को क्याल घाया कि अरविद मित्र के भलावा एक राज्य का गहमश्री भी है और गहमश्री का यहाँ मुझे अमृतपूय स्वागत करना चाहिए । बहुत ही गिप्टता से बातचीत होनी चाहिए ।

'क्या कहें मिस्टर आष्ट, प्रधानमत्री का आदेश ठहरा । जब उन्होंने निमंत्रण-पत्र भिजवा दिया, तो फिर घाना ही पड़ा । बड़े ठसके से अरविद बोला 'तुम तो जानते ही हो कि हमारे राज्य की राजनीति बडी जलभी हुई है । सामन्त और राजा लोग रुद्रिप्रस्त जनता के अधविन्वासों को उभार कर कांप्रस जसी प्रपतिवादी सस्था को खोलला करने में सलग्न हैं । हमारे भूतपूर्व मुख्य मत्री की पराजय इस बात का प्रमाण है कि हमारे प्रात में प्रतिक्रियावादी तत्व पनप रहे हैं । मैं इही सब विषयों पर प्रधानमंत्रा एव अखिल भारतीय कांप्रेस

कमेटी के महामंत्री और अध्यक्ष से धार्तलाप करने आया हूँ।' इतना कह अरविंद ने गहरी साँस ली।

आप्टे प्रसन्न मुद्रा में बोला 'आइये आप का सब से परिचय करा दूँ।'

आप्टे साहब आप स्थायी रूप से जयपुर क्यों नहीं आ जाते नाई ? रात दिन जनता के हित के लिए बीड़ा करते हैं पर कोई उन कार्यों का उचित मूल्यांकन करने वाला भी नहीं है।'

"हम तो हैं, कह कर आप्टे हस दिया।

इसके उपरांत आप्टे ने बड़-बड़ महानुभावों से गहनमंत्री का परिचय कराया और कई चित्र उतारे।

साढ़े पाँच बजे प्रधानमंत्री पधारे।

आप्टे प्रधानमंत्री से कई बार मिल चुका था। उसने अरविंद का प्रधानमंत्री से परिचय कराया। प्रधानमंत्री न मुस्कराते हुए कहा "आप तरुण हैं आप को बहुत ही मुस्तदी और ईमानदारी से काय करना चाहिए। हुकूमत चलाने के लिए बड़े परिश्रम की जरूरत है और बड़ा परिश्रम जवानी में ही किया जा सकता है।'

अरविंद प्रधानमंत्री के प्रभावशाली व्यक्तित्व के कारण भौन रहा। फिर गम्भीरता से बोला 'हम आप के बच्चे हैं, आप का आशीर्वाद मिलता रहा तो हम देश को समुन्नत बनाने में अपने खून का आखिरी बूँदा भी लगा देंगे।

"यही उत्साह होना चाहिए।" प्रधानमंत्री ने उसके बच को बप पयाया। आप्टे ने स्नप लिया। अरविंद हस पडा।

प्रधानमंत्री न कहा मैं इधर काफी बिजी हूँ आप लोगों से फिर गीध्र ही बातचीत बहेंगा।

अरविंद तुरन्त बोला हमारे सामन काफी समस्याएँ हैं। इन समस्याओं के समाधान में हम जसे राजनीति के धार्त्रों के लिए आप

बुजुर्गों का सहयोग बांझनीय है। हम आशा करते हैं कि आप हमें शीघ्र ही दिल्ली बुलाएंगे।'

'जहर जहर!' कह कर प्रधानमंत्री वहाँ से भाग बड़ गए।

इस साधारण घातघीत को भाष्ट की मदद से अरविंद न इतना महत्वपूर्ण रूप दिया कि जब अरविंद पुनः जयपुर लौटा तो उस समय सभी मंत्रियों न उस से अलग-अलग वार्तालाप किया और उसम उत्तर में सिर्फ इतना ही कहा कि मुझ और मुख्यमंत्री को माननीय प्रधानमंत्री फिर शांति ही राजवाना बुलान वाले हैं। इधर जो उनसे घातघीत हुआ वह काफी सतापजनक रहा। मेरा विश्वास है कि कुछ दिनों के लिए कांग्रेस हाई कमान के दो चार पदाधिकारी भी यहाँ का दौरा करेंगे। कहने का तात्पर्य यह है कि अरविंद का जो फोटो विभिन्न समाचार पत्रों में प्रधानमंत्री के साथ प्रकाशित हुआ था उसन प्रांत के मंत्रियों के मस्तिष्क में गहरी प्रतिक्रिया उत्पन्न की और अरविंद के सम्मान में चार घंटे भी लगाए।

किसी किसी मंत्री न तो यह भी अनुमान लगा लिया कि उच्च सत्ता अरविंद से अत्यन्त प्रभावित है।

और महत्वाकांक्षी अरविंद प्रत्येक मंत्री की कमजोरियों का पता लगा लगा कर उनका अपन हाथ का पत्र बना रहा था। अरविंद जानता था कि राज्य का मंत्रिमंडल कभी भी पूरातपेण अस्थिरता से मुक्त नहीं हो सकता। क्योंकि इसकी खास वजह थी कि जो प्रतिक्रियावादी तत्त्व कांग्रेस में छावो पहन-पहन कर चार आन के सबस्य बन रहे हैं वे अपन स्वार्थों को कभी भी तिलांजलि नहीं दे सकते। ऐसे समय वही व्यक्ति सुयोग्य नसूख कर सकता है जिसका मान, जिसका घातक, जिसका प्रभाव अधिक से अधिक विधान सभाइयों पर और कांग्रेस की विनिष्ट मनीनरी पर होगा।

अतएव वह अपनी मधुरता में सदैव चिंतातुर रहता था।

अपनी आगामी योजनाओं को कार्यान्वित करने के लिए उसने

निश्चय किया कि उसे प्रयासी पूजापतियो से सठि गाँठ रखनी चाहिए। अतः वाणिज्यमंत्री, जो अरविंद के हाथ को कठपुतली था, के साथ उसन कलकत्ता और बम्बई का दौरा करने का कार्यक्रम बनाया।

उसन वाणिज्य मंत्री से अपने निवासस्थान पर लगभग एक घट तक घातचीत की और सयुक्त विज्ञप्ति निकालन का निश्चय किया।

\*

\*

\*

२६

“मनुष्य को अपने कृतघ्न से क्वापि विमुक्त नहीं होना चाहिए। जो होता, उस हार्दिक गति प्राप्त नहीं होती। अरविंद विस्तर पर बठा बठा इसी बात का चिन्तन कर रहा था। उसे याद आया कि एक बार गुलाब न अति बोनता से कहा था, “पति कितना ही कठोर हो, नीध हो, घृणित हो किन्तु पत्नी उसे अपने अन्तःकरण में उसी तरह बिठाती है जिस तरह धाराधक अपने धाराधक को, फूल की पलुडियाँ मधुप को, और धरती अपन बीज को। क्योंकि पृथ्वी नभ और आकाश से भी किंगल पत्नी का हृदय होता है जो पतिभक्ति में सदा, सबध, सबस्व लीन और विसर्जय है।

अरविंद अपन आपको प्रतारणा बेता है, कोसता है, दुस्कारता है। प्रभात हो गया है।

बिनकरकी नन्हों-नहों बाल किरणें प्राची के प्रांगण, में स्वच्छन्दता से फीका कर रही हैं। छोटे-छोटे मेघबड बाल किरणों की अनुपम क्रीडा में अवरोध उत्पन्न कर रहे हैं। मधुमय सर्मा है।

“मनसुख ! अरविंद न पुकारा।

‘जी, बाबू जी !’

‘आज हमारे लिए चाय नहीं बनी क्या ?’

‘बन रही है।’



बाल बल को आवाज—घरर 5 5 5

“जाओ, पूछो कि कौन है ?”

ननसुख न तुरन्त आकर कहा, सेठ प्रीतम घग्द !”

‘जाकर कह दो कि बाबू जी की तबियत खराब है आज वे दिन भर आराम करेंगे । आप बल सवेरे आएं ।’

अरविंद इतना इयित हो गया कि उसके लोचन तरन हो गए । घनीभूत पीडा मस्यु की सी उबासी पराजित पुरय की निरागा ! धिरस जोयन ! जसे आज अरविंद के भीतर दिपा ‘गुलाब का अरविंद’ सङ्प रहा है कसमसा रहा है ।

गुलाब घाय सेकर आई ।

अरविंद को विन्धास नहीं हुआ कि उसकी गुलाब, यह आगन्तुक नारी है या कोई और । स्वप्नाविष्ट व्यक्ति की भांति उसने अपनी आँखों पर हाथ फर कर अपन भ्रम का निवारण किया । कितना परिवर्तन हो गया है गुलाब में ? गुलाब की तरह हँसता हुआ चेहरा मुरझाए हुए फूल की तरह निष्प्रभ हो गया है । जिसके सलीन चेहरे पर लून टपकता था आज उसक चेहरे पर पीलापन भाँक रहा है । जिसके मुस्कान पर सध्या के डूबते हुए सूरज की अन्तिम रेल स्मरण हो उठती थी, वह मुस्कान रोग की गहरा अंधकार पूण बन्दराआ में डूब चुका है । यह भावों में लिप्त होता गया और यदि गुलाब उसे घाय के लिए न कहती तो कदाचित्त वह रो उठता ।

“आप आज भी उदास हैं । आदर कठ से गुलाब ने पूछा ।

‘ नहीं, अपने अपराध का बड भोग रहा हूँ पाप का प्रायश्चित्त कर रहा हूँ । गुलाब ! इन्सान को उतना ही मिलना चाहिए जितने की उसे अहरत है । अहरत से ज्यादा मिल जान पर आदमी आदमी की सजा से हट कर बेयत्ता टन जाता है । यह भ्रमात्मक विचार उसे पय भ्रष्ट कर देता है । तब वह इन्सान अपन आपकी सर्वाधार सवनिपन्ता, सबस मानने सगता है । यही भ्रम उसकी वास्तविक प्रगति, उन्नति

प्रवृत्ति और सघप में अभेद्य चट्टान ला छड़ी करता है। गुलाब।  
 यदि मैं मन्त्री नहीं बनता तब क्या तुम्हारी यह दगा हो जाती ?

“यह मेरी तख्तीर की घात है।”

“तख्तीर सच्ची तख्तीर पर पर्दा नहीं डाल सकती। गन जिनों में यह भूल गया था कि मेरे एक चन्ना सौ गोरी भार है जो तारों के आगमन पर समपण और मिलन का भावना लिये खकोरी-सी आकुल होकर प्रतीक्षा करती है और सूरज के उदय होने के साथ निराश हो कर गरम आहें छोड़ देती है। गुलाब !” अरविंद ने उसे खींच कर अपन पास बिठा लिया। मुझ “माफ कर दो।”

गुलाब ने अपन आपकी अरविंद के सीन में झिपा लिया। वह सिसक पड़ी। कुछ का रंका हुआ उबार बांध तोड़ कर पलक-मुसिन की राह से प्रवाहित हो उठा। अरविंद अघोर हो गया, ‘भविष्य में मुझसे ऐसी गलती नहीं होगी। जो नेता अपनी पत्नी को घन नहीं बे सकता, वह नेता क्या अपन शहर, क्या अपने राष्ट्र को घन देगा ? रो मत गुलाब अब मैं सवा अपन कर्त्तव्य के प्रति जागृक रहूंगा।’

अपनी भीगी पलकों से गुलाब ने अरविंद को देखा। वह मुस्करा पड़ी। अरविंद भी मुस्करा पड़ा। गुलाब ने विह्वल होकर अरविंद के मुँह को अपने दोनों हाथों में ले लिया और उसके कपोलों पर चुम्बनों की बौद्धार लगादी।

नारी जाग गई थी। नारीत्व उमड़ पड़ा था। नर विमूढ़-सा नारी के पवित्र स्पर्श में अतर्हित हो रहा था, ज्ञानशून्य हो रहा था, एकाकार हो रहा था।

\*

\*

\*

“अब तो घाय पिलाओ। गुलाब सखीच के मारे पानी-पानी हो गई। एकान्त का यह मधुर भदभरा उपहास गुलाब की घमनियों में निधिलता भर गया। वह निदाल-सी आराम कुर्सी पर पशती हुई बोली, ‘अब भन्ने कुछ नहीं होगा।’

क्यों ?" अवाक सा रह गया अरविन्द ।

'सूड नहीं ।'

'तो मैं मतसुख को पुकारता हूँ । अरे ओ मन ।'

गुलाब न उसक मुह पर अपना हाथ रख दिया 'इस एकान्त की कायम रखने के लिए मैं ही तुम्हें चाप बनाए बैठो हूँ ।'

अरविन्द मुस्करा पड़ा ।

\*

\*

\*

२७

प्रीतमचन्द्र चिन्तित हो कर व्यग्र स्वर में बोले 'हडताल, हडताल हडताल, यह क्या बात है मन्त्री साहब ? पुरी तनख्वाह पुरी छट्टियाँ और पुरी सहूलियत, फिर वे आदिर हम से चाहते क्या हैं ?

सेठ की गोस गोस उल्लू सी झालें अरविन्द पर जम गई । अरविन्द सूखी मुस्कान हँस कर बोला 'पूजा का विषमता मिटा कर नई समाजवादी व्यवस्था का निर्माण !

फिर ! वजनदार विचारों का तात्पर्य न समझ कर वह सेठ मूल को भाँति अनायास प्रश्न कर बठा ।

'आप घबराइय नहीं । गान्धि और मुरली को जिम्मेवारी हमारी है । मजदूरी और कर्मचारियों के उचित अधिकार आप को देन ही पड़ेंगे । मेरी समझ में नहीं आता कि आप के कारखाने में पाँच-याँच साल से काम करने वाले कर्मचारी (बलक) आखिर दैनिक वेतन पर क्यों ? इसक विपरीत आप के अफसरों के भाई भानज जो अयोग्य हैं उन्हें घाते ही स्यायी भौकरी बंदी जाता है यह क्यों ? आखिर इस प्रकार की धोंगा धोंगी आप कितन दिन और चलाएँगे । फिर आप सरकार के सम्मुख गान्धि और मुन्शी का नाम बूसाँव करते हैं । अब राष्ट्र परतम्य नहीं

गलत है। हम और आप सब अब प्रजा के सेवक हैं नीकर हैं। एसी हालत में हमें प्रजा के हितों की रक्षा करनी पडगी। ]

सेठ जो य तो , पर जीवन का गहरा अनुभव उन की नस-नस में समाया हुआ था। तनिक तीव्र स्वर में बोले "फिर आप हमें और हमारे उद्योग को सूट क्यों नहीं लेते ? इधर हमारी सम्पत्ति देग के उद्योग को पनपा रही है और उधर कुछ कम्युनिस्ट हमें लूटना-खसोटना चाहते हैं। आप चुप हैं, और उल्टा उनका पक्ष लेते हैं ऐसा क्यों ? देग का संचालन हम उद्योगपति करते हैं या य मजदूर ?"

घात बठोर थी। यह आक्षेप अरविन्द पर नहीं सारी सत्ता पर था। वह जरा अधिकारपूर्ण स्वर में बोला "सासन संचालन में किसी व्यक्ति विनाय का हाथ नहीं होता उसे सारी प्रजा चलाती है। देग का कानून नागरिकों को जीविका का पर्याप्त साधन देता है और यह भा कहता है कि आर्थिक साधनों का स्वामित्व और नियंत्रण इस प्रकार किया जाय कि उस में सब को लाभ मिले। आर्थिक व्यवस्था को मजान इस प्रकार न चले कि सम्पत्ति सारी एक जगह एकत्रित हो जाय और गण्य सभी को हानि पहुँचे। इसलिए आप को यह नहीं मानना चाहिए कि जमा आप कहेंगे बसा हो जाएगा। समस्या को सुलभान का एक ही तरीका है और यह है समझौता। आप नतुरत करन वाली संस्था क सीडरों एव यूनियन के पदाधिकारियों से मिल कर एक उचित नियम कर लें। उनका उचित हक उन्हें दे दें। ]

'आप का मतमय यह है कि हम हार मान लें। इस प्रकार उद्योग पति हार मानते रहें ता एक दिन मजदूर-वग हमारे स्वामी नहीं बन जाएंगे।

कोन कहता है कि आप हार मान लें ? व्यापार में हार-जीत का तो प्रश्न ही नहीं उठना। प्रश्न उठता है हानि-लाभ का। घत आप कुछ उनकी गतों और कुछ अपनी गतों रख कर एक मध्यम तरीका अपना लें। हम गांधीवादी समझौते में पूरा विश्वास रखते हैं। भूल को आधी

रोटी खालने से उसके अन्तर का विद्रोह दब जाता है। यह भाँत हो जाता है। दमन की नीति शोषित-यग को घोर उग्र बनाती है। इस लिय उचित यही होगा कि आप बुद्ध स्वयं ही रास्ता निकाल लीजिये।' उसने एक गहरी स्थाँत लेकर कहा 'केन्द्र में सूचना देन का मतसब है कि सेवर कमोशन बठगा और सबर कमोशन जो भी फसला बरेगा, उसे आपको मानना पड़गा। यदि उसका नियम कमचारियों के हक में नहीं होगा तो कहा नहीं जाता कि उसे भी असफल होकर लोट जाना पड़।'

सेठ का मह उतर गया।

'निराग होन की बात नहीं है सेठ जी। हमारी सरकार किसी के अहित की कामना नहीं करती। हमारा एसा कोई भी सिद्धांत नहीं है कि आपको नुकसान पहुँचे। आप मेरा कहना मानिये और डीक सा सम्झौता कर लीजिये।

सेठ बुद्ध विचार कर बोला, 'आपके फसने को मैं मान लूँगा। आप जाइये।

प्रोतमवग्व खला गया।

सूर्य का उसाप सृष्टि पर छा सका था।

गुलाब न मुस्करात हुए कमरे में प्रवेश किया।

'क्या बात है, तुम मुस्करा क्यों रही हो? अरविंद ने सलाट को मतसते हुए कहा जैसे उसके तिर में दर्ब है।

मेरा बच्चा मा गया है।'

'तबहारा? उसन विस्मित होकर पूछा।

'जी, मेरा, आधो घेटा।'

एक घाठ-दस माल का सबका। मुन्दर और भोला।

आते ही अरविंद को प्रणाम किया। गुलाब उसे अपने सीन से चिपकाता हुई बोली 'यह गरीब है। खान के ठिकाना नहीं है। काम चाहता है। कहता है कि मेरो माँ और बाप मर चुक हैं। कबल शदी है जो सूत कातती है। मैं उसे साफ उत्तर दे दिया है कि अभी मुभते

नहीं देख गए। जब रोते रोते उसने मुझे यह उलाहना दिया कि यदि मेरी माँ जिंदा होनी तो मुझ कभी उस तरह नहीं रोने देती। इस पर मैं उत्सुकना पूबक पूछ यकी कि तुमारी माँ कसी थी? वह हठात् बोला कि आप जसी? आज से यह हमारे यहाँ काम करेगा।”

“कोई बात नहीं लेकिन इस प्रकार की कथना एक मत्री की परती के लिए अच्छी नहीं है। इस खप स देश की सारी भुखमरी यहाँ घस आएगी। बात को बदलते हुए अरविंद न कहा “खाना तयार हो गया?”

‘जो।’

फिर जल्दी से ले आओ।’

खाना खाकर वह सीधा मुख्यमत्री की कोठी पर पहुँचा और वहाँ से वारिण्यमत्री के पास।

हड़तात्र क मामले को उसने इस खूबो से तय किया कि उस क्षत्र में उसकी याह याह हो गई। म सठ नाराज हुआ और न मखबूर।

अरविंद सोच रहा था कि उसकी हर सफलता के पीछ उसकी नोक गियता सन्निहित है

\*

\*

\*

२८

चाँद अरविंद के पास आया हुआ था। मनसुस और गुलाब गुलाब न धरण स्पश करके पूछा दीदी को नहीं लाए?

वह आन में अममथ है। कई दिनों स उसकी सविधत ठीक नहीं है।

‘क्यों?’ उसने आँखें फाट कर वह पूछा ‘भापन किसी छिटी में शिक तो नहीं किया। क्या आपने हमें गर ममभ रखा है? वह कुछ नाराज सी हो गई।

‘नहीं घटा, धरसों के बाद वह फिर माँ यनन वाली है। पूरे दिनों

घटी है। गुलाब प्रसन्नता के मारे एकदम गवगद् हो गई। भावातिरेक हो कर बोली "फिर मैं भी चलूंगी आपके साथ?"

अरविंद को शौन सभालेगा ?'

वे भी एक माह के लिये कलकत्ता जा रहे हैं।

तब जरूर घनना। सोना का भी मन बहल जाएगा।

घ्राप स्नानादि से फारिग होइये। मैं ताजा खाना बनाए देती हूँ।

और निम्नू कसो है ?

'मज में है। पढ़ती और खनती है।' फिर इधर-उधर की बातें होती रहीं। तत्पश्चात् चाँद गसलखान की ओर चला।

रात के लगभग दस बजे अरविंद और चाँद निचले कमरे में गम्भीर वार्तालाप कर रहे थे। हरी बस्ता का धुंधला प्रकाश कमरे में फला हुआ था। छोटा सा पल्ला धीरे धीरे खल रहा था।

चाँद न बहुत ही धीमे से कहा "पचास हजार सेठ चबूलाल न दिये हैं।

'शय एकम ? अरविंद न भारी भरकम आवाज में कहा।

सठ न कहा है कि माल पाकिस्तान पहुँचन पर मिल जाएगा।

सुम बनारसीदास को इस बात की हिदायत दे देना कि वहाँ सठ की नावानी से हम न मारे जाएँ। अपनी तो इतनी ही जिम्मेदारी होनी चाहिये कि सेठ का माल हिन्दुस्तान की सीमा से हिफाजत क राय आहर चला जाय।"

अरे अरविंद बनारसीदास बहुत चलता-पुर्जा है। मोचे से लेकर ऊपर तक उसने सभी व्यक्तियों को पसे से खरीब रखा है। जहाँ से हमारा माल गजरता है वहाँ क सभी सिपाहियों और सैनिकों को चंदूनाल से अलग से तनखाह बिता रहा है।"

अरविंद हस पड़ा भया। इस भूल के साथ ईमानदारी नहीं आ सकती। मैं घन का सोम नहीं छोड़ सकता। गरीबी के खूँखार पज में

देख चुका है। जान चुका हूँ कि पसे का अभाव जिन्दगी को नहर बना देता है।”

‘लेकिन कभी यह रहस्य !’

“असम्भव है और जब प्रकट हो जाएगा तब देखना ।”

चाँद चुप हो गया। उसके मुख पर उदासी की रेखाएँ एसी छाईं जसी कोई भूली हुई स्मृति एकाएक जाग उठी हो।

अरविद कहने लगा, ‘मैं अपने देश का सब से बड़ा बुद्धिमत् हूँ। भगवान से हादिक प्रायना करता हूँ कि अन्त में यह मुझ फांसी की सजा दे। गद्दार की जितनी घणित मृत्यु ही सकती है वही मेरी हो। पर मैं जानता हूँ कि इस देश के अन्त करोटपति केवल निजी सुख के लिए राष्ट्र का सब से बड़ा अहित कर रहे हैं। योजनाओं का पोलतापन ठके में रिश्वत का दौर और नौरिषियों में गलत मान-बदल क्या यह सब अपराध नहीं हैं ? इन्हें हम सब जानते हैं लेकिन हम चुप हैं। सभी के स्वाय सोहे की जजीर की तरह एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। जब घोर कहीं विस्फोट हो जाय और हम सभी पाप के पुतलों का अन्त आ जायते— अरविद का व्यथित स्वर चाँद के चेहरे को प्रभावहीन कर रहा था। जीवन के इतने भयकर परिणाम से उसका रोम रोम काँप उठा। वह सोच रहा था कि आदमी इतने बड़े सलाह की सम्मुख दख कर क्यों निश्चित बठा है ? जानता है कि उसका दुष्कृत्यों पर एक दिन प्रकृति कुपित हो जाएगी, दबी हुई गविन्या फ्रांस की राय-क्राति की भाति वध-यत्र गुलाटिन’ का निर्माण कर लेंगे और एक एक घोर लुटरे देश के बुद्धिमत् और गोपकों को मार गिराएगी। तब फिर आदमी अपने को सावधान क्यों नहीं करता ? क्यों यह अनता और राष्ट्र का अहित करता है ?

चाँद आगका रहित हो कर स्पष्ट स्वर में बोला तुम जानते हो कि बुरे का परिणाम बुरा ही होगा तब तुम ऐसा काय करते ही क्यों हो जो तुम्हें सदा दुश्चिन्ता की ओर धरलता रह। फिर तुम्हें अपने अधि कारों का उचित प्रयोग करना चाहिए।



अरविंद के होठों पर सुखी मुस्कान नाच उठी, 'मनुष्य के कुछ ऐसे स्वार्थ और मोह होते हैं जिन्हें यह चाहते हुए भी छोड़ नहीं सकता। पूजा का मोह और महान् बनान की महत्याकांक्षा आदमी के मन से कभी नहीं जाती। इसके विपरीत मैं भक्त रांका नहीं बन सकता। प्रभु न भक्त नामदेव के अनुरोध पर रागा की गरीबी दूर करना चाहा। इस उद्देश्य से प्रभु न रास्ते के बीच सोने की मोहरों को एक पत्नी रख दी। रांका न उसे दखा। देख कर उपहास भरी हसी हसा और फिर धूल उठा कर उस दकन लगा। तभी उनकी पत्नी आ गई। पति को किसी चीज को ढकते देख पूछ बटी क्या कर रहे हैं नाथ? रांका न कहा, सोने की धूल से ढक रहा हूँ ताकि मम में लोभ पदा न हो। पर उनकी पत्नी बांका खिरदिला कर हंस पड़ी। बोली धूल को धूल से ढकन से क्या लाभ? पत्नी का यह त्याग और निर्मोह की भावनाएँ देख कर रांका गदगद हो उठा। भया! देश के कणधारों में त्याग का यही विराट रूप होना चाहिए। त्याग का यही विराट रूप विनास विश्व का कल्याण कर सकता है।

चाँद चिन्तित हो कर आतुरता से बोला 'जीवन-मूल के महान् तत्त्व को समझते हुए तुम स्वयं क्यों पयध्रष्ट हो रहे हो और साथ में हमें भी कर रहे हो? केवल तुम्हारे लिए हमें भी पाप करना पड़ रहा है।

भया की मातमभी पर तरस खाता हुआ वह लम्बे स्वर में बोला "भया! इस घरती का मर न तो 'रांका' बन सकता और न धाज की मारी उसकी पत्नी बांका'। सभी की इच्छाएँ चौकड़ी भरते हुए मृग की भाँति छलाँगें मार रही हैं। पूजापति और नता बनने की एक डीठ लग रही है। आदमी बबहवाग हो कर भाग रहा है परिणाम से अनजान और विता रहित हो कर। मैं राम हूँ, सीता मेरे पास खड़ी है। सामन दसो सुन्दर मृग खना है। सीता कह रही है मुझे इस मग का घम चाहिए। इतना सुन्दर और प्रिय घम और कहीं मिलेगा? राम कहता है कि अचानक एते अदभुत मृग का मिल जाना, इस घन में खट्टर रहस्य

है। पर सीता कहीं मानती है? त्रिया हठ की पुनरावृत्ति होती है। मग के पीछे राम की सीता भी चली जाती है। सीता के लोप होन के बाद राम विलाप करता है। यही विलाप धाज हमारे अतर में है। बस जरा परिणाम से टकरा जान दो हमें, सब ठीक हो जाएगा। मनुष्य का विवेक फिर भटकेगा नहीं।”

चाँद निर्वाक रहा। अरविद के शब्दों की गहराइयाँ उसके पल्ले नहीं पड रही थीं।

घुप्पी !

चाँद लक्ष्मण रेखा बनाने में असमय रहा। लक्ष्मण रेखा बना कर सीता के पाँधों का अवलोकन मात्र करने वाले लक्ष्मण न नारी का मर्यादा की रक्षा की, तो क्या चाँद एक एसी रेखा का निर्माण नहीं कर सकता जो अरविद के भ्रष्टाचार को सीमित कर दे ? कर सकता था लेकिन चाँद की भी यासनाएँ अभी तक जीवित थीं। अतन्त्रि का साम्राज्य उसके चारों ओर मरुड़ी के जाल की तरह तना हुआ था। राजपि विन्वामित्र की तरह उसकी साधना और तपस्या थी। उन्होंने गरीबी के दिनों में अरविद को भाई की सचाई के प्रति गव था लेकिन धाज वह गव कहीं ? विश्वामित्र भेनका को देख कर अपनी आसक्ति पर नियन्त्रण नहीं रख सगा। इसके स्पष्ट होता कि अभाव में त्यागी बन जाना सहज है। यह जगत अभाव का पुजारी है, तपस्वी है। सम्पत्ति में विरक्ति की सम्भावना दुलभ है।

चाँद ने मौन भंग किया मेरा विचार एक सुन्दर और अष्ट्या बगला बनवाने का है।

अरविद भाई के इस प्रश्न पर हस पडा, ‘सोचे आदमियों की यही तो दुबलता है कि पसा आ जाए तो उस सभ्हाले बस ? भया ! सेठों की तरह पसों को घवाना सीखो। इन पचास हजार रुपयों का सोना खरीद लो। नोट बदल सकते हैं पर सोना कभी चाँदी और सोहा नहीं होगा।

\*

\*

\*

‘तुम्हारी एसी भयानक बातें सुन कर मेरा हृदय कांप जाता है।’ गुलाब न अरविद की अक्षियर दृष्टि से देख कर कहा मेरा विचार है कि आप अपन काम से काम रखिए। मैं लड़ी लड़ी आप की और भ्रमा की बातें सुन रही थी।

अरविद विस्तरे पर लेट कर बोला नारी जब नर के कामों में बल्लंतदाजी करन लग जाती है तब उसका बड़ा गक हो जाता है। वह तनिक देर भीन रहा, जैसे कोई नियम कर रहा हो। फिर परिस्थिति का अणलोकन कर के बोला, नारी नर की सम्पत्ति बना रहे तो कितना अच्छा हो? तुम गुलाब उपभोग की अत्यन्त सुन्दर वस्तु हो। सप्राण हो, घटकती हो महकती हो फदकती हो। प्रभु न तुम्हें उबरा धरती बनाया है। यदि तुम अपनी कोमल भावनाओं का परित्याग कर यज्ञ धाम का प्रयास करोगी तब तुम अपनी स्वाभाविकता को विस्मृत कर घठोगी। मैं तुम्हें सलाह दूंगा कि तुम उन बातों को सुनो भी नहीं जो कठोर होती हैं जिनमें परिवर्तन और विनाश का नारा होता है।’

उसकी जसती हुई आँखों में अपनी आँखें झल कर गुलाब रनहसिक्त स्वर में बोली जो कुछ भी हो पर आप का शुभ मैं हमेंगा चाहेंगी।’

“कौन कहता है कि तुम न चाहो। मैं कहता हू कि यदि तुम्हें मेरे बहने प्राण भी देन पड़ें तो दो। रात दिन यह कामना करो कि मेरा पति देवता की तरह निष्पाप और सयगतिमान बन। उसन एक वास छोड़ी, ‘लेकिन मैं सत्यवादी हरिश्चन्द्र बन कर अपन वचन के पालन हेतु अपनी घोषी बन्धे, भाई और भाभी की सरे-आम बोली नहीं सगा सकता। मैं जए मैं अया हो कर धमराज (युधिष्ठिर) की तरह द्रौपदी को दाँव पर नहीं सगा सकता। राम की भूल को मैं दोहराना नहीं चाहता। मैं कवल इतना चाहता हूँ कि मेरी परना कवल गृहस्त्री की

पतवार बने और मेरी ध्यात-वलात मनरूपी तरणी को मद-मद गति स  
मुल-सागर में ले चल । समझी ? '

बात की गम्भीरता क तूल पा जान के भय से गुलाब न उनके समीप  
जाकर कहा, ' मैं आपरो एक यहूत ही अच्छी खबर सुनाना चाहती हू ।

जरबिब बटाक्ष करके बोला, तुम्हारे पास केवल दो समाधार हो  
सकते हैं । पहला यह कि मेरे बाप न अपनी सारी जायवाद मेरे नाम  
या तुम्हारे नाम कर दी है, और दूसरी यह कि मैं बाप बनने वाला हू ।

उसने गम से गवन नीचे झुकासी और अपने दापे हाप के नापून  
को दांता से काटती हुई घीमे से घोरी, यह आपन कसे जाना ?

अपन हाप से उसकी ठोड़ी पकडते हुए वह प्यार से मुस्करा कर  
घोला ' भारतवप की जमीन बड़ी उपजाऊ है । कहीं भूले भटके भी बीज  
पड गया तो अकुरित हुए बिना नहीं रहेगा । वह सावधान होता हुआ  
बोला, ' हाँ अब एक बान का ख्याल रखना जरा हिफाजत स रहना ।  
घिस को स्वस्थ और प्रसन्न रखना । चक्रव्यूह-सी उसभो बातों में मत  
उलभना । मैं नता हूँ । देवता बनने क चक्र में कहीं दस्य बन जाऊँ तो  
फिर न करना । समझ सेना कि यह राजनीति ह जहाँ हमेगा नई धार  
एाए बनती हैं । और यह सभावना वहाँ और अधिक होती है जहाँ  
बुद्धिहीन व्यक्ति अधिक हों ।

' सेविन आज की बातों से मैं डर गई थी । '

' गुलाब ! वह तनिक झुभला उठा तुम्हारे पास रामायण है ?  
हाँ ! '

सीता में सब से बडा गुण क्या था ? "

' पति की आज्ञा का पालन करना ।

और मैं तुम में भी इसी गुण की यहूलता देखना चाहता हूँ । मैं  
चाहता हू कि तुम धारणय क गिप्य की तरह हो जाओ । इतना ही  
ध्यान रखो कि मैं तुम्हारा पति हूँ । कबल पति और इससे अधिक और कुछ  
नहीं । इस पर भी तुम पल फलाओगी तो बिबग हो मुझ काटना पडगा ।

पथ में कोई पायब बन कर आय तो उसे मैं ग्रहण करता हू लेकिन जो घटान बनन की कोशिश करता है, उसे मैं चक्काचूर कर देता हूँ।”

उसने जलती धाँसों से गुलाब की ओर देखा।

गुलाब की धाँसों से दो मोती टपक पड़े।

\*

\*

\*

३०

कतकता के कई घड़े-बड़ उद्योगपतियों से साँठ-भाँठ करके जब अरविद एक पार्टी में घोरगी से गुजर रहा था तब उसको आँसों में एक युवती समा गई। एक पल के लिए उसने वस्तु स्थिति से भ्रम होकर ड्राइवर को मोटर रोखने के लिये कहा फिर पद प्रतिष्ठा का स्वागत करके कहा घबो। साथ में बठ सठ रतनलाल न अनुनय से पूछा भी कि कोई काम हो तो गाड़ी रुकवा लीजिय।

‘भ्रम ही गया था एक जाता हुआ व्यक्ति अपना परिचित जान पड़ा, पर दरभसल वह कोई और ही था।

पार्ग में आज अरविद का मन नहीं लग रहा था। उद्विग्नता और अतृप्ति की प्रतिक्रियाएँ उसके मुख पर धा-आ रहा थीं। असे-ससे उसने भाषण समाप्त किया। आ कर वह सेठ रतनलाल के ‘रत्न हाउस’ के एक कमरे में अघरा कर क सो गया। दरवान को कहला दिया गया कि मिलन वालों को वह दिया जाय कि साहब की तबियत आज अच्छी नहीं है।

सगभग आध घट तक वह अघरे के विस्तृत बायरे में अपने विचारों को दीबाता भगता रहा पर जो अभाव आज उसके मन में धर कर गया था उसने उसको इतना बचन और पीड़ित कर दिया था कि वह बम भर के लिए भी अपने अतर के उठते हुए ब्यया के सागर को रोक नहीं सका।

उसके जगमग मन के गहरे झूने साम्राज्य में नीली साड़ी, भीला ब्लाउज और नीली सफ़िदल नाच रही थी। एक परिवर्तित तसवीर उसकी विस्मृति के गहन-गह्वर से धीरे धीरे उभर रही थी। यह तसवीर उसके भौतिक जीवन की सब से मधुरतम और विपणित प्रेरणा थी। यह उसे कितना भी व्यस्त होने पर भी नहीं भूल सका। उसकी स्मृति फूल के साथ फाट की तरह लगी हुई थी।

खट खट।

“कोन है ? उसन टूटते हुए स्वर में पूछा।

मैं हूँ रतनलाल।”

उसने द्वार खोला।

रात के बारह बज रहे हैं। सब सो चके हैं। तुम मेरे दास्त हो बचपन के साथी हो। मुझ से तुम्हारे नाज-नखरे नहीं उठाए जाएंगे, मुझ से तुम्हारा इस तरह तडपना नहीं बेला जाएगा। मैंने सब प्रबंध कर लिया है।

अरविब न अपना ललाट पर चमकते स्वेदकणों को पोंछा। बसो जलाई। आंतरिक अधीरता के कारण यह अब भी कुछ समझ नहीं रहा था कि रतनलाल के पहने का क्या तात्पर्य है ? वह अपना मस्तिष्क को दोनों हाथों से पकड़ते हुए बोला ‘तुम कहना क्या चाहते हो ?’

मैं कहना चाहता हूँ कि मन की और तन की ध्वनि को मिटाने के लिए दो पग ह्लिस्की के घड़ा लो और ,’ यह कहता-कहता धुप हो गया।

और क्या ? वह कुछ झल्ला कर बोला।

और एक औरत ।”

रतनलाल !’ वह तपाक से बोला। उसकी आकृति भयंकर हो गई। स्वर में आक्रोश धरा गया। तुम न मुझे क्या समझ रखा है ? क्या मैं वाणिज्यमयी हूँ कि अपना चरित्र दो पग पर बंध दूँ ? मैं मनुष्य जन्म हूँ पर मैंने अपनी सारी वासनाओं और सारी दुबलताओं पर कायू पा

तिमा है। कतम्य के सम्मुख सब को तुच्छ समझना हूँ अपन धाप को भी।'  
 यह खींते निपोरता हुआ धोला अरे भाई, मन्त्री बन गए हो तो  
 जरा एग भी ।

अरविंद का इतना काय आया कि रतनलाल के दानों गालों पर जो  
 भर कर चाँटे रसीद करे पर उसन बड़ी कठिनता से अपनी उग्रता  
 पर काबू पाया, 'यह उन मन्त्रियों से कहो जो मन्त्री बनने को एक चाँस  
 समझते हैं। और चाँस समझ कर वे अपन कसब पर धुरी चलाते हैं।  
 घोर डाकू की तरह जनता के पसों को सूट कर अपन घर की भरते हैं।  
 मेरा विश्वास है कि कुर्सी मुझ नहीं छोड़ सकती है, मैं कुर्सी को छोड़  
 सकता हूँ। जनता मुझ नहीं भूला सकती मैं जनता को भूला सकता हूँ।  
 जिस व्यक्ति में एसी भ्रष्टि भावना हो वह क्या अपना प्रभुत्व, कसब  
 गतव्य को इस तरह बघता रहेगा? मैं हराम समझना हूँ—इन सब  
 कार्यों की। बोलते-बोलते उसकी आँस सजल हो उठीं। अँसों से सचित  
 व्याघ्र का ज्वालामुखी फूट पड़ा। विगलित स्वर में बोला, सुमन मित्र  
 होकर मित्र की आत्मा को बहुत बघ्ट पहुँचाया है। जरूरी करत पर  
 कीचड़ उछालता है। मैं तुम्हें कभी क्षमा नहीं कर सकता। मैं अब यहाँ  
 नहीं रहूँगा। लेकिन तुम एक यात का ख्याल रखना कि इसमें मेरे और  
 तुम्हारे व्यापारिक सम्बन्ध नहीं टूटेंगे।" यह बाहर निकलते हुए बोला  
 'मैं बस ही अपन वाणिज्य मन्त्री के यहाँ घता जाऊँगा। आज रात भर  
 पाँच में टहूँगा।

रतनलाल ने बहुत विनती की पर अरविंद जानता था कि यहाँ  
 ठहरने का मतलब है कि इसने प्रार्थी मन की विजय और इस के इस गव  
 की तुष्टि कि अन्त में मैं इसे मना ही लिया। अतः यहाँ से बस ही देना  
 मेरे लिए अमत्कर है।

"जरा मैं उस औरत को देखूँ ता!" उसन जात जात पूछा।

यह औरत अपनी फँड है।

"फँड हूँ!"

प्रतीक्षा-गह में बठी हुई एक औरत !

नीली साड़ी, नीला इनाउज और नीली सण्डल ।

एक झटका अवलोकन और जड़ता !

‘अरविंद ! यह मेरी फ्रॉड है ।’ उसन अपने वाक्य को बोहराते हुए कहा, बहुत प्रगतिशील है आधुनिक विचारों की पुजारिन । जीवन और समाज दोनों के बंधन नहीं मानती । दिल लगा लेती है तो सब कुछ दे जावती है ।’

अरविंद की आंखों में आंसू आ गए ।

रुद्ध कंठ से बोला तुम यद् भाग्यगाली हो रतन, सहज में सब कुछ पा लेते हो ।

‘तुम ?’

रतनलास न अरविंद की ओर देखा । अरविंद की आंखों में अगारे बहक रहे थे । होंठ तडप रहे थ । चुप हो गया ।

‘मे फ्रॉड जा रहा हूँ यह भव सदा ही भव रहे । समझ ?’

अरविंद एक व्यथित इम्तान, कार पर जा बठा ।

रतन कह रहा था, ‘भेडम ! यह आदमी आदमी नहीं बेवता है ।

आवागमन अब भी सड़क पर चालू था ।

अरविंद की कार बीड़ रही थी ।

उसके मन में क्या-क्या विचार उठ रहे हैं इससे यह स्वयं अनजान था । उसे एसा महसूस हो रहा था कि जैसे चिमय मन धीरे धारे शून्य हो रहा है । उसके सारे ज्ञान-तनु गिनियल हो रहे हैं । नसों में खोलता हुआ खून ठंडा पड रहा है । वह नरबस हो गया । उसन मग्न भूव लिए । धीरे-धीरे बुदबुदाया सब छोड दूँ और अदला ही भाग जाऊँ, बूर, सुबूर निजः में या आज की अज्ञात अपूरणता के परिताप में अपन को जला दूँ बिकल मन थ उत्तप्त सागर में डूव कर अपन आप को मिटा लूँ आत्महत्या कर लूँ । उस अपना इतना महान जीवन यण्या धरती की तरह सधु लगा । क्या गलाब क्या चाँद, क्या सोना क्या निम्नू और क्या



मन्त्रोरथ ? श्वय केवल जीन का घहाना, केवल जिन्दगी के प्रपञ्चपूण ओइवर ।

\*

\*

\*

३१

प्रांड होटल का कमरा ।

कमरे का चिक्ना पश । नीरवता और कदमों की होती और मिटती आहट ।

श्वय मन का सताप और सताप में तप्त हृदय का जलना । श्वय प्रवाह ! मानव का उप्रतम रूप !

किवाड़ों का धीरे धीरे ललना । अनुपम-उदास आकृति का प्रवेश । श्वय का विस्फोट !

'तुम !' अरविद न होंठ घवाते हुए कहा ।

'हाँ मैं !' आकृति न कपिते हुए स्वर में उत्तर दिया ।

साय में जहर साईं हो ?'

उसकी जकरत नहीं समझी ।

इतनी नित-ज हो गई हो ?'

बन गई हूँ ।'

"श्वय । अरविद भुंभला उठा ।

आकृति धुप हो गई । निष्कल और निस्पण ।

अरविद कहता रहा गची ! मैं तुम्हें कहा था न कि एक दिन तुम अपन रूप को लेकर वासना के बाजार में जाओगी तब तुम्हें पता चलेगा कि वंजी के पुत्र तुम्हारे रूप का मूल्यांकन इस तरह करेगा जैसे तुम एक सुंदर साडी हो । स्त्री और साडी, यही इस समाज का नया मापदंड है । साडी का उपयोग करते-करते वह धिस जाएगी मसी हो जाएगी और हो जाएगी तब उसे वह समाज फेंक देगा और नए रूपों

से नई साड़ी खरीद कर ले आया। इस नियम की पुनरावृत्ति होती  
 रहेंगी और कुदक एमे भी गौकान मिलेंगे जो नित्य नई साडा के उपयोग  
 में ही अपना शान समझेंगे।" उसका बठ बिलकुल आद्र हो गया।  
 अपना मह दूसरी ओर घुमाते हुए धाला 'गची ! मैं तुम्हारा एक दिन  
 इतना ही पतनगीत रूप देखना चाहता था ताकि तुम्हें रूप के भ्रम  
 का परिज्ञान हो जाए। लेकिन आज स्थिति नितात ही विपरीत हो गई  
 है। तुम्हारे पतन की कामना करने वाला यह अरविद आज तुम्हारा  
 पतन देख कर क्षुब्ध और सप्त हो उठा है। दारण बुद्ध में जल रहा  
 है। मनुष्य भी कितना विचित्र है कि पहले जिमकी कामना करता है  
 पीछे उसी के लिए बुद्ध करता है। इस परिवर्तनगीत वचिष्य को कदा  
 चित् मानवी-बुबलता की संज्ञा देते ह। गची ! एक दिन आवेग में  
 तुमन बहा था कि मैं तुमस भीष्म माँगन नहीं आऊगी। उस दिन मेरे  
 मन की आघात लगा था। मैंत केवल यह समझा था कि मेरे और  
 तुम्हारे सम्बन्ध सबब के लिए टूट गए। लेकिन मैं उन सम्बन्धों का  
 तोडना नहीं चाहता था और तोडना भी मर लिए सहज नहीं था। मैं  
 तुम्हें बचपन से प्रेम करता आया हूँ, प्रेम ! पर अहम प्रेम से भी प्रबल  
 तम है। अहम् न मेरे प्रेम को पराजित कर दिया। धीरे धीरे मुझ  
 तुम्हारा स्वाभिमान भान लगा। गुलाब जो एक अपहृत लडकी थी,  
 उससे इयाह करके और देग की सेवा में अपना सबस्व लुटा कर मैं तुम्हें  
 सबया विस्मृत कर बठा। इस विराट जीवन में तुम अकिष्ण का ध्यान  
 ही नहीं रहा। और जब कभी तुम्हारी स्मृति मानसपट पर उभरती, उस  
 दिन मैं बहुत बेचन हो जाता था। उस दिन मुझ मेरे सारे सुख गपनाग  
 के सहस्र फनों से लगत थ। दुःखाभिभूत हो कर मैं चेतनाहीन हो जाता  
 और वे सहस्र फन मेरे जीवन में अहर घोलते जाते। गची !  
 प्रीत इसी तरह पीडा देती है। तभी भीरा दद में पागत होकर गा बठी  
 थी कि घायल की गत घायल जान और न जान कौय। तुम्हीं मेरे दद  
 को जान सकती थी पर तुम जानकारी से दूर थी। सूफी कवि सत

अरविंद कह उठा हवा का रुप उसकी ओर है । सुख का सप्ताव अविलम्ब उसकी ओर बढ़ा जा रहा है ।

\*

\*

\*

३२

रसस्ते के जीवन में अरविंद और वाणिज्यमंत्री ने कई महत्वपूर्ण काम किए । राज्य के विकास के लिए सहायता और वहाँ जाते ही परिवर्तनों के लिए सुरद मोर्चा ।

पराजित मुख्यमंत्री पुनः किसी तरह विजयी होकर विधान सभा में आ गए थे । उनमें इतना त्याग नहीं था कि वे अपना पद छोड़ दें । हार्डकमान में उनकी भ्रष्टी पहुँच थी । विधान सभा के कार्यस का बहुमत उनकी ओर था । ऐसी विपत्ति स्थिति में प्रवासी व्यापारियों की विपत्तियों को जान लेना जरूरी था । वे किसको चाहते हैं ? उसने कौ से गप्त-वार्ता की और उनके हृदय के रहस्य के जानने में पूरा सफल भी हुआ । प्रायः सेठों का मत पुराने मुख्यमंत्री की ओर ही था । अतः उसने भी अपना मत पुनः पुराने मुख्यमंत्री को सत्तापीय बनाने के पक्ष में देने का निश्चय किया । वाणिज्यमंत्री न भी उसकी बात का समर्थन किया ।

सोचन पर अरविंद ने एक साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन आरम्भ किया । उसमें उसने नई मिनिस्टरी के निर्माण के बारे में एक भी समाचार प्रकाशित नहीं किया । अरविंद की सुतीक्षण बद्धि इस प्रकार का कोई भी गलत कदम नहीं उठा सकती थी जिसके परिणाम से वह अपरिचित हो । वह सभी सदस्यों की राय जानने के लिए उनसे मिला । उनसे यह तय किया कि वे अपना मत भू० पू० मुख्यमंत्री को ही दें । इधर भू० पू० मुख्यमंत्री के समस्त समर्थक इस गम्भीर बात को तरह उगल रहे थे जिस छोट-छोट बच्चे जिनके पेट में कोई बात नहीं पचती ।

कांग्रेस-अध्यक्ष सं गभीरता पूर्वक वातचीत करने के उपरान्त उसने घोषणा की, जनता और प्रवासी व्यापारियों को आखें भू० पू० मुख्य मंत्री की ओर ! इसके बाद उसने सस्मरणात्मक गली में एक पूरा लेख लिख डाला ।

भू० पू० मुख्यमंत्री इस नए मंत्री से बड़े प्रसन्न हुए और उन्हें अब यह पता चला कि यह नया गृहमंत्री कांग्रेस के सदस्यों में अपना अत्यंत प्रभाव रखता है तब उन्होंने उसे बुला कर यह आश्वासन दिया कि तुम्हारे पद की सुरक्षा हमारे हाथ में रहेगी । तब फिर क्या था ? अपने पद की सुरक्षा देख कर अरबिंद ने ऐसा उग्र वातावरण उत्पन्न किया कि विवर्ण हो कर यत्नमान मुख्यमंत्री को अपना त्यागपत्र स्वेच्छा से देना पड़ा और भू० पू० मुख्यमंत्री फिर अपनी गद्दी पर आसीन हुए और अरबिंद गृहमंत्री ही बना रहा ।

अब वह अक्सर मुख्यमंत्री की तारीफ करता रहता था ।

उसने अपनी लोकप्रियता के लिए के कई मंत्रियों का जीर्णोद्धार कराया । गाँवों और कस्बों में घूमा और उनको यह आश्वासन दिया कि सरकार गीब्र ही आप को सबटों से मुक्त करेगी । भूदान की भी परम्परा खाली गई । प्रथम भूदान में उसने अपने मित्र ठाकुर मोहनसिंह से १०० एकड़ भूमि का दान कराया । इससे भी जब वह सतुष्ट न रहा तब उसने एक क्लेण्डर कंपनी द्वारा ऐसे चित्र का निर्माण कराया जिस में उसने अपने आप को भारतमाता के लाइलों में नहल, पटल राजद्र के बराबर बताया । इस क्लेण्डर को उसने मुफ्त इस ढंग से वितरण कराया कि एक बहुत बड़ा समूह उसका प्यारा बन गया—उससे परिचित हो गया ।

सोन में सुहागा मिलाने के लिए गची भी आ गई । गची को उसने गहर के स्कूल में अध्यापिका बना दिया और घर में आन-जाने के लिए उसे गुलाब का ट्यूटर रख दिया । उस से वह बहुत कम बोलता था । एक मर्यादा की रखा उसने अपने और उसके मध्य खींच

ली थी पर यह सत्य था कि अरविद न गची पर विजय प्राप्त कर ली और शची न अरविद को देवता मान लिया ।

सेठ प्रीतमचंद रंग हाथों पकड़ा गया ।' यह समाचार घा कर चाँद न अरविद को घबराए हुए स्वर में कहा ।

अरविद विचलित नहीं हुआ । उसका गहरी आँसों में निश्चलता पूर्ववत् थी । वह शांत स्वर में बोला पकड़ा गया बहुत घरा हुआ । वैसे कोई अपराध महान नहीं है लेकिन यदि उसन हमारा नाम से लिया तब बहुत अहित हो सकता है । विरोधी बल के पत्र तिल का ताड़ बनाएग । भीतर ही भीतर मेरी बढ़ती हुई शक्ति को कुचलन के लिए तत्पर कांपसी घातक वार करन का प्रयास करेंगे । हमें फूँक-फूँक कर बंदम उठाना चाहिए ।'

चाँद न समझाते हुए कहा विद्यसे सप्ताह वह मुझ पचास हजार रुपए और दे कर गया है

'अच्छा तम जाओ । इसका मैं अच्छी तरह प्रबन्ध करा दूँगा । क्याल रहे कि तुम्हें विल्ली हो कर जाना पड़ेगा । इम समय तुम्हारा मुझ से मिलना भी अच्छा नहीं है । और हाँ सुनो ' भाभी तिमू और नए मुन्न को प्यार । भाभी से कहना कि गलाब पाँच दस दिन में माँ बन जाएगी । फिर तुम्हें आना ही पड़ेगा ।

चाँद धला गया ।

योड़ी ही देर में अरविद न बगले पर प्रात के आई० जी० पो० घाए । अरविद से काफी सेर तक बातचीत चलती रही और अंत में एक निष्पत्ति किया गया । उनके घले जान क बाद अरविद क साप्ताहिकपत्र न सम्पादक पघारे । उनको उसन कहा कि कल प्रकाशित हो रहे अक में जो पाकिस्तान कवड़ा भजन वाला सेठ पकड़ा गया है उसके घारे में बहुत ही उग्र समाचार प्रकाशित होना चाहिए ।

चाँद के घले जान क बाद गुपार न मनसुख के हाथ अरविद को बुलाया । अरविद भँभपा उठा । उसके समीर घा कर गम स्वर में

बोला, 'तुम्हें बार-बार मेरी आवश्यकता क्यों पड़ती है ? तुम गहमत्री की बहू हो, खुद अपनी जखुरत पूरी क्यों नहीं करती ?'

गलाब सिसकने लगी। वह सोचने लगी यह व्यक्ति कितना हृदय हीन है। हर दूसरी स्त्री स प्यार और सहानुभूति स खोलता है और घर वाली से घात करन की भी इसे फूसत नहीं। क्या नया बनना परिवार के लिए अभिशाप है ? वह रफते रफते बोली मेरे पेट में दद है।

'दद है ?' वह भँभला उठा। उसन हस्पताल फोन कर के कहा सेडी डाक्टर आ रही है अभी देख लेती ह।

अरविन्द चला गया। बहो एकान और बहो विचारों का सघष ! आधी रात तक वह सो नहीं सफ। फिर उस की उनींदी आँखें हीसे होले बन्द होन लगीं।

प्रभान होने ही अस्पताल से समाचार आया कि उसके लडका हुआ है। और चाँद क यहाँ से सार आया था कि सेठ प्रीतमचन्द का हाट फल हो जान मे हवालात में मृत्यु हो गई है।

यह समाचार पढ़ कर अरविन्द के घरवा पर क्रूर मुस्कान तलवार की धार की तरह चमक उठी। वह उठा और अस्पताल गया। अस्पताल से जब वह नीट रहा था तब उस गची मिल गई। गची न उसे मुस्करा कर सलाम किया।

बगले में घुसते ही उस न आज सिवाय बहरे दरवान क सभा को छट्टी दे दी। उन्हें पाँच-पाँच रुपए दे-दे कर कहा 'जाओ आज खुगिया मनाओ तुम्हारे घर 'नया इन्सान' आया है।

एक भयकर समस्या मुसम्भान के कारण वह अपन मस्तिष्क की दाब दिए बिना नहीं रह सका। प्रीतमचन्द की मृत्यु न इस समस्या को ही समाप्त कर दिया अथवा अरविन्द जसा राजनीति निपुण व्यक्ति कलकित हो जाता !

उसक साथ ही उसक साप्ताहिक में प्रीतमचन्द के विरुद्ध उप्रतम

गद्वावली में समाचार प्रकाशित किया गया था और उस में यह भी कहा गया था कि विश्वस्त सूत्र से यह भी पता चलता है कि यह कांपस का सदस्य है । अखिल भारतीय कांपस कमेटी को चाहिए कि वह राष्ट्र के धातक, इस प्रकार के गर जिम्मेवार व्यक्तियों का कांपस में सम्मिलित करके उस को भ्रष्टाचार से परिपूण न करे ।

वह विचारों में निम्न पेट के बल सोया हुआ ही था कि दाची आई । शची गलाब की गद्दाइन थी, अतः बरवान भी उसके साथ अदब से पेश आता था । 'शची न कमरे में प्रवेश करते ही कहा आज बहुत खुश नजर आ रहे हो ?'

'जानती नहीं मैं घाप बन गया हूँ । वह हठात कह गया और इस के बाद उसने देखा कि उसके इस कथन से दाचा का चेहरा उदास हो गया है ।

'शची उसके समीप सेटते हुए बोली 'कदाचित् मैं उस समय सम्हल जाती तो यह हक मुझ प्राप्त होता ।'

निस्तन्धेह यह हक तुम्हारा ही था, पर उस समय जीवन श्रम्य हो कर तुम्हारी नस-नस में समाया हुआ था । परतो को ओर देखता भी नहीं था ।

शची बिल्कुल चुप रही ।

'शचा !' अरविन्द ने अपनी उंगलियों को दाची के घासा में उलझात हुए कहा 'जब तुम पास में रहती हो तभी मैं राजनीति के दुषय सबूट से मुक्त हो पाता हूँ । अपन आप को नसा की ससा से भल कर प्रम का पूण मानव समभन लगता हू । अन्यथा मुझ कभी-कभी एसा लगता है कि राजनीति क दाँव-येध के खोभ से मैं इतना दख जाऊँगा कि फिर घापम नहीं उठ सकूँगा ।'

दाची ने उसके सिर पर अपना मुँह रख कर कहा, मेरी एक सलाह मानो तो इस राजनीति से अद्य सग्यास ले लो ।

वह सक्पका उठा यह क्या कहता हो ?

यह मुस्करा उठी, "तुम न सब कुछ पा लिये ।। घाँटी से हाथी बन गए हो फिर चाहते क्या हो ?"

"इस प्रश्न का उत्तर मेरे लिए सनिक कठिन है । मनुष्य की सालसा और वासना का पेट देखा है ? कभी उसके पेट की गहराइयों का अवाज लगाया है ? नहीं लगाया तभी कहती हो कि सन्तोष धारण कर लो सन्यास ले ला जयथा ऐसा नहीं कहती । यह पेट अगम्य है सीमाहीन ह । जितना लभ करना चाहोगी, उतना ही विराट होता जाएगा । इस लिए जहाँ तक हो सकता ह, इसके विराट की चाह पान की घेष्टा करनी चाहिए । मैं एमा मनुष्य हू कि गदन नीची करके जी नहीं सकता । और जब तरु ऊंची रहेगी, जोता गूगा ।

"तुम्हें जातना असम्भव है ।' उसन उसके हाथ की छूते हुए कहा 'अरविन्द । वास्तव में तुम न मुझे पा लिया तुम सच्चे साधक हो । तुम्हारे शब्दों में इतना प्रभाव है कि तुम जिसे चाहो अपनी ओर कर सकते हो ।

'देखो शची भूठी प्रशसा अश्ली नहीं सगती । मैंने तुम्हें कई बार कहा न कि मुझ लू चाहिए तेरा शरीर नहीं । अब प्रश्न खडा होता है तुम्हारी उदारता का । शची ! हर विमता की विजय में नारी का सम्मोह दिया रहता है ।"

शची अघल सी उसको एन टक देखती रही ।

अरविन्द नेत्र मूंद कर पड गया ।

\*

\*

\*

३३

चाँद न अरविन्द को एक पत्र लिखा कि हम तुम से दो अश्वत्थर को शहर की नई पाठशाला का उद्घाटन कराना चाहते हैं । यह पाठशाला महात्मा गांधी के सखप्रिय प्यारे बंधु हरिजनों के लिए होगी । जातीय



भदभाष से रहित यह पाठगाला यहाँ के लिए धष्ट आवग है । यदि तुम उदघाटन करन की हाँ भर लो तो हमारु यह उत्साध ध्रत्यन्त सफल हो सक्तु है । क्योंकि यहाँ जितन गांधीवादी हैं वे सद्दर और टोपी तक ही सीमित हैं और उन का गांधीवाद वक्तृत्य कला तक ही प्रचारित प्रसारित हुमा है । जब तुम धा जाओग तब इनकी प्रसक्तियत्त प्रकट हो जाएगी ।

अरविंद न अपनी स्वीकृति दे बी ।

दो अक्तूबर को धरविंद परती और पुत्र को से अपनी जन्मभूमि पहुँचा । उस धरती पर कदम रलत हो उसकी आत्मा प्रसन्नता से विभोर हो गई । पुलित्त-दल और अपार कांप्रती घड़ी-बड़ी मालाएँ लिए लड़ हुए थ । वह उतरा तो दमड़ी प्रसाद दिनग' न तपाक से हाथ मिलाया और दो स्तव लिए । आजकल दमड़ी प्रसाद दिनग' क सम्पादकत्व में प्रकाशित होन वाला मासिक पत्र दिनग' 'साप्ताहिक दिनग' हो गया था । अध्मस, मन्दा, प्रघार मन्त्री और जितन भी तयाकथित मना थ आज स्टगन पर उपस्थित थे ।

कांग्रेस क अध्मस इतनी उपस्थिति दल कर हैरान थे क्योंकि जब कभी भी कांग्रेस का ओर से काँ सावजनिक सभा होती तब इन में से एक-दोमाई भी नता दृष्टिगोचर नहीं होत थ । तत्काल एसा मालूम होता था कि य सभी नता बीरे पर गय हुए हैं ।

अरविंद न उत्साह त कहा ' वर्यो के बाद मैंन उस मिट्टी का स्पर्ण किया है जित्त मिट्टी में धरा वचपन विविध अनुभूतिमाँ लिए हुए निहित है । और इस उपस्थिति में सभी मेरे आवरणीय हैं पूज्य हैं, सामी हैं । मैं सभी त प्रापना करुगा कि वे गांधीजी के सिद्धान्तों पर चल कर अपना पय प्रगस्त करें ।' और तब अरविंद ने जोर ने महात्मा गांधी की जय जयकार की । इस के बाद जनता-जनार्दन गांधीजी की जय-जय करती-करती धरविन्द का जयकार करने लगी ।

मोटर में अरविंद गमाव और जिलाध्मस थठ ।

उसकी अगली सीट पर ट्राइवर क साथ दो पत्रकार । क्योंकि अरविंद आज के यग में पत्रकारों क महत्त्व की जानता था ।

सध्या के छह बज उद्घाटन समारोह था अत अरविंद ने एक बजे से लेकर तीन बज तक सबसे छट्टी माग ली । उसन इस बात की भी मानन से इकार कर दिया कि यह सेठ सम्पत्तिसाल के बगले में ठहरेगा । उसने गम्भीर होकर निवेदन किया, गांधी जी हरिजन बस्ती में ठहरते थ और मैं भी वहीं ठहरना चाहता हू लेकिन यहाँ मेरा अपना घर है अत मैं वहीं ठहरूंगा ।

चार बज प्रवेश और जिला कांग्रेस कमेटियों क कायकर्त्ताओं की गुप्त समा रक्षी गई था ।

अरविंद न घर में प्रवेश किया ।

घाद न घर की अच्छी तरह से मरम्मत कराली थी । ऊपर के कमरे में चाँद रहता था और नाचे क कमरे में अनराधा भाभी । खाना साथ ही पकता था । सुन्दर परिवार था ।

गुलाब सोना क बच्चे की गोद में लेकर घमे ही जा रही थी और सोना गुलाब क बच्चे को लेकर हाथों स झूला रही थी । निम्नू से यह सय नहीं सहा गया । वह रोने के स्वर में बडक कर बोली, 'घाचा के मुन्न की मुझ दो ।

घाचा के मुन्न की गोद में लेकर निम्नू नाच उठी । नाचती-नाचती बोली 'माँ ! मुन्ना विलकुल अरविंद घाचा जसा है ?'

सोना मुँह विचका कर बोली 'मैं कहती हूँ कि नहीं है ।

यह रक कर बोनी 'जरा नाक देखकर यह तेरे चाचे की है या चाची की ।'

नाक ? नाक घाची की है ।'

गुलाब आ गई थी । निम्नू क गाल का चम्बन सेती हुई बोली, 'तेरो भी नाक भया जसी है ।'

मैं तो सारी की सारी भया जसी हू । यह तेज स्वर में बोली ।

साना न रहा, जान भी खोजिए निमला जी पहले आप भोजन कर लीजिए। रोटियों आपकी प्रतीक्षा कर रही हैं।'

सभी चले। धीरे-धीरे के बच्चे भी आए।

अनुराधा और अरविंद बच्चों के भविष्य पर बातें करते-करते शची पर आ गए। अनुराधा कह रही थी कि 'अरविंद भैया! अपने देश में शिक्षिकाओं का स्तर बड़ा निम्न है। नतिकता और सम्पन्नता दोनों दृष्टि से वे हेय समझी जाती हैं। मैं कहती हूँ कि यदि वह तितली स मारी बन गई है तब उसे कोई अच्छी पोस्ट विला कर गृहस्थित क्यों नहीं बनवा देते?'

मैं भी यही सोच रहा हूँ। अगले साल मैं उसे प्रोफसर बना रहा हूँ। शिक्षामन्त्री को मैं कह दिया है। एक बात से अड़चन उत्पन्न हो रही है कि वह एम. ए. नहीं है। इस साल वह एम. ए. की परीक्षा दे रही है। उत्तीर्ण होते ही वह प्रोफसर बना दी जाएगी और उसका ब्याह भी मैं एक ऐसे सुयोग्य बकार व्यक्ति से करूँगा जो उसे जीवन में काफी सतों दे सकेगा।'

बकार से? अनुराधा न चौंक कर पूछा।

'उस में इसी गर्त पर प्रोफसरी बूगा कि वह शचा से विवाह करे।'

'इससे उनका पारिवारिक जीवन सुखी नहीं हो सकता।'

क्यों नहीं हो सकता? मैं उस व्यक्ति को यह महसूस ही नहीं होना हूँगा। आजकल वह इतना तगी में है कि रोटियों के लाले पड़ रहे हैं। मैं अपने यहाँ उसे बुलाऊँगा शची से परिचय कराऊँगा, दोनों में आकर्षण बढ़ेगा शची उसे गची को प्राप्त करने के लिये उत्कृष्ट और बचन करेगी और गची एक सुन्दर घर पा जाएगी। तब मैं उस नौकरी विलसाऊँगा।

अनुराधा हस पड़ी।

अरविंद गम्भीर हो गया।

सप्या को चार बज कायकर्त्ताओं की जो गुप्त घटक हुई उसमें कई

कार्यक्रम रखे गये जिन्हें अरविंद की सुतीक्षण अवसरवादी बुद्धि न बहुत  
 अच्छे तरीकों से सम्पन्न किया। अंत में कायरकर्त्ताओं के आपसी बमनस्य  
 और फूट पर आकर विबाध बहुत ही गम्भीर हो गया। क्योंकि यहाँ के  
 प्रायः सभी कायरकर्त्ता घतमान मुख्यमंत्री के विरुद्ध थे। अरविंद उनके  
 विरोध का उग्र रूप देखकर सन्निकित हो गया और मुख्यमंत्री के समयन  
 में जो वह कहना चाहता था, उसे अपने मन में ही रख लिया। क्योंकि  
 वह जानता था कि प्रजातंत्र प्रजा की शक्ति पर जावित है। और यदि  
 उसे प्रजातंत्र में सदैव शक्तिशाली बन रहना है तब उसे प्रजा के स्वयं के  
 अनुसार अपन आपको डालना पड़ेगा। पथ-परिवर्तित करत समय अपनी  
 बुद्धि की उस विलक्षणता का परिचय देना पड़ेगा जो उस सदा समयक  
 दल का ही हितपी समझे। जब विबाध गमागम होकर ठडा हुआ तब  
 उसने इतना ही कहा कि हमें प्रत्येक कदम धधानिक रूप से उठाना चाहिए।  
 असतोष को इस तरह उगल देने का तात्पर्य यह है कि हम अपन जोग  
 को बम कर रहे हैं, हम अपन आन्तरिक विद्रोह को बाक्य सघय द्वारा  
 शांत कर रहे हैं। हमें जनतंत्र प्रणाली ने यह शक्ति प्रदान की है कि हम  
 सरकार बना और मिटा सकते हैं। जब हमारे पास शतनी महान शक्ति  
 है फिर हमें कदापि सत्य से किनारा नहीं करना चाहिए। अनगल सवाद  
 और निराधार चर्चाएँ में हमारे सगठन पर आघात करती हैं। अतः यदि  
 आपको किसी प्रकार के बोध मौजूदा मनीनरी में नखर घाते हैं तो आप  
 को प्रांतीय कांग्रेस सभा के अध्यक्ष को लिखित निकामत पत्र देना चाहिए।  
 क्योंकि इस प्रकार के मौखिक भ्रमात्मक प्रचार से आप किसी का कुछ  
 भी नहीं बिगाड सकते। हर सही बात के लिए युत्तिसंगत साधन भी  
 होना चाहिए। यदि आप जनतंत्र के नागरिक होकर जागरूक नहीं हैं  
 तो आप देश का बहुत बडा अहित कर सकते हैं।

अरविन्द ने तयानयित नेताओं को सम्बोधित करके कहा 'मैं न  
 मुना है कि यहा घन स्वार्थी व्यक्ति सहर को काय-साधक रूप में अपनाते  
 हैं यह बहुत बुरी बात है। मैं उन से प्रायना कहेगा कि वे यदि कांग्रेसी

बतते हैं तो गांधी-बाबी सिद्धांतों का पूरा रूप से पालन करें।

सभ्या की सभा में उस न महामानव गांधी के प्रति अद्भुतजति अपित करते हुए कहा, 'जिस युग पुरुष न भारत जैसे बलिष्ठ पांडित्य वश में राजनतिक सामाजिक आध्यात्मिक क्रान्ति का सूत्रपात किया जिस अद्वितीय पुरुष न जन-जन में समता एफता और प्रेम का सदेश फूँका, उस विश्ववन्द्य बापू को हम नमस्कार करते हैं और उस मनीषी के निर्धारित ग्रहिसा के भाग पर चलन की गण्य लेते हैं।'

उस दिन सभा में गहर के प्रतिष्ठित गण्यमाय्य व्यक्तियों क घलावा वे भी व्यक्ति थ, जो नीकरशाही के रोगी क नाम से पुकारे जा सकते हैं। य रोगी खट्टर और गांधी के नाम स चिढ़ते हैं। बांप्रस क साम उन की जो प्रभुता बिलासिता धीर प्रगतिस्त खती गई है उस स य मन ही मन बड शुभ है। लेकिन आज य राष्ट्रीय पागाक में बगुला भत्तों का तरह प्रायना कर रहे थ। अरविन्द उनक मनोभावो की ताड़ रहा थ। उसे इन निरीह प्राणियों पर क्या था रही थी जो राष्ट्रीयता से अपनी बयत्तिक बिलासिता को अधिक महत्व प्रदान करते हैं।

वे दिन तक अरविन्द का प्रोग्राम काफी व्यस्त रहा। यहाँ भी उस न अपनी लोकप्रियता की धाक जमा हो बी। उसे यह अखड़ी तरह मालूम था कि यहाँ के निवासी अधिकतर ब्राह्मण हैं और य ब्राह्मण अत्यन्त सकीए मनावत्ति, धार्मिक निष्ठावान् मूर्तिपूजक एव कट्टर स्वधर्माव सम्धी हैं। अत यहाँ उसने बडी घतुरता से धम निरेपक्षता की नीति अपनाई। किसी धम की उरान कट आलोचना नहीं की, बल्कि उनके प्रति अपनी सवाग्यता ही प्रकट की।

\*

\*

\*

३४

अपनी विजय-यात्रा से अरविन्द उस समय प्रांतीय राजधानी में पहुँचा जब वहाँ की राजनीति एक विषम समस्या में विध गई थी।

इस बार वह अकेला या अतः वह निर्विरोध हो कर बिपी हुई राजनीति को पुनः स्वतंत्र कराने के लिए कटिबद्ध हो गया। जिस मुख्य मंत्री को बार-बार पराजित होने के उपरान्त भी प्रति की बागडोर सम्हाल कर उसके मान को प्रतिस्थापित किया गया था। यही मुख्यमंत्री जब अपने अधिकारों का बुरा उपयोग करने लगा सब सभी सदस्य सावधान हुए। मुख्यमंत्री की प्रतिस्पर्धा की जलन दिन प्रतिदिन चरम सीमा की ओर पहुँचने लगी। दलते-दलते उसकी स्पर्धा घणा का रूप धारण करने लगी। मंत्रियों में उसके विरुद्ध एक सगठन बनने लगा। वे कांप्रेस अध्यक्ष को बार-बार कहने लग कि मुख्यमंत्री सामन्तों से गुप्त सन्धि करके राज्य के लोकतंत्र को भ्रष्ट करके राष्ट्रियों के हार्थों सौंप देंगे। वे सभी गान्धि सुरक्षा व्यवस्था और कानून को समाप्ति का नारा बलद करन लग। अरविद अभी तक चुप था और जब उसने देखा कि यह नारा असतोत की पुनरावृत्ति और विप्लवपूर्ण नहीं बल्कि विद्रोह की सच्ची आग है तब वह भी एकदम मुख्यमंत्री के विरुद्ध हो गया। जसा वह सदस्य करता आया था और उसने एक-एक सदस्य के घर जा कर इस बात की मन्त्रणा की कि हम सभी इस मुख्यमंत्री के विरुद्ध अविश्वास का प्रस्ताव पास करके इसके मन्त्रि-मण्डल को भंग करा दें।

उसने तुरन्त अपनी भाषण कला का जादू जर्मोवारों पर चलाया और उन्हें आश्वासन दिया कि वह उनके हितों की पूरी तरह रक्षा करेगा, यदि वे उस मुख्य मंत्री बनाने में अपना सहयोग प्रदान कर सकें तो? साँठ-गाँठ सफल हो गई। कल का महान प्रतिक्रियावादी युवक आज प्रात की बागडोर सम्हालने के लिए तत्पर हो गया। गत दिनों से वह प्रत्येक सदस्य के घर जाता है और उन्हें भी आश्वासन भरी गन्धबली में यह विश्वास दिलाता कि वह आप के सकल की सदस्य प्रतीक्षा करेगा। अतः मैं उसने अपनी विजय का अन्तिम अस्त्र फका। उसने प्रत्येक सदस्य को कहा कि मुख्यमंत्री मैं बनूँगा और राज्य-संचालन आप करेंगे। साधारण सदस्य को और क्या चाहिए? कबल मनाधिकार

के घबरे में मुख्यमंत्री को नकेल धाती है तो क्या कम है ? यह सीवा हानि का नहीं था ।

और एक दिन सत्ता के घमण्ड में मदाय मुख्यमंत्री का त्यागपत्र देने के लिए कांपस कायकारिणी विवग कर देता है । राजनीति उस राजनता का साथ छोड़ देती है । प्रजा सोचन लगती है कि अब इस मुख्यमंत्री का पतन उसे किस दंग में पुनर्जीवित करेगा ?

राजप्रमुख अरविन्द को मन्त्रिमण्डल निर्माण का निमन्त्रण देता है ।

अरविन्द मुख्यमंत्री बन जाता है । २५. ११. १९५१

प्रधानमंत्री तथा अलिप्त भारतीय कांपस कमेटी के अध्यक्ष के पास जब वह पुन मन्त्रिमण्डल निर्माण की सूची ले कर जाता है तब उस तदण को देख कर प्रधानमंत्री अत्यंत प्रभावित एवं प्रसन्न होते हैं । अरविन्द महसूस करने लगता है कि उन में एक महद्वय शक्ति है, एक स्थिर विकासांगीत प्रवृत्ति है ।

मुख्यमंत्री के पद पर अरविन्द विद्यमान से आमीन हा गया ।

सब से पहले उसने समस्त राज्य का दौरा किया । इस दौरे में उसने प्रत्येक नगर में अपन पस के तीन चार ऐसे व्यक्ति नियुक्त किए जो उसने बारे में संतोषजनक यातावरण तयार करें और बनाए रखें तथा उसके छोटे से छोटे काय की जानकारी सयमाधारण में करा दें । उसने धरटाधार को रोखन के लिए एक अलग महकमा बनाया और स्कूलों पाठशासत्रों के की मार्गों पर ध्यान रखते हुए उनमें उनकी फीस भी कम कर दी । एक बार शची के पुद्गन पर अरविन्द ने हस कर कहा ' मैं कोई भी ऐसा काम नहीं करता जिसका परिणाम मुझे शांत न हो । जब तुम्हारी गावा । अब तुम सोचोगी कि इस घघन में मुझे अरविन्द बांध कर सदा के लिए प्रगति-धमदध कर देगा, पर मैं जानता हू कि इसने तुम्हारी मुझ पर की गई उदारता रिक्ती नि गह और स्वतन्त्र हो जाएगी । यह घघन ही तुम्हें सदा के लिए बंधनहीन कर देगा । '

गधी न ध्यगपूण हसी हस कर कहा, अब मैं तम्हें आसानी से गिरगट कह सकती हूँ न ?

"नहीं, गिरगट नहीं इन्द्रधनुष, और इससे भा सही उपमा है भरे लिए समझवार महत्वाकांक्षी !"

"अब तुम क्या वनना चाहते हो ?" गधी न हठात प्रश्न किया ।

अरविद हठात सम्हत गया । गधी की हयती को मलता हुआ गम्भीर स्वर में बोला 'राष्ट्र को सधा !' गधी एक बात बताऊ ।

"हां !"

“तुम न प्रमथन्द की कहानी पच परमेश्वर' पढ़ी है ? उस कहानी में पद क सत्य का रूप चित्रित है । बताया गया है कि मानव हृदय म्याय का सराजू से पर इसाफ का गला नहीं घोंट सकता । मैं भी अपने हृदय में उसी सत्य को अष्ट अनुभूति के रक्ष्य का ज्ञान पा रहा हूँ । मेरे अन्तस्तल का सत्य मुझे कह रहा है कि तू चिन्तनशील है और न्याय तेरी चेतना की कसौटी है । मैं अब प्रजातंत्र शासन व्यवस्था की इस कसौटी में बिनकुल खरा उतरना चाहता हूँ ताकि आने वाली पीढ़ी मेरी स्वच्छा धारिता की चर्चा न कर के मेरी कृत्य परायणता और देवत्व की सराहना करे ।”

॥ आत्मिक मूल्य

गधी का अस्थिर चित्त इस गूढ़ बात का अय स्पष्ट रूप से नहीं समझ सका । वह धोली, 'यदि कभी भी किसी भी प्रजा के किसी भी व्यक्ति का हमारे सम्बन्ध के बारे में पता लग गया तो ?'

अरविद के होठों पर क्रूरता भरी मुस्कान नाच उठी । वह स्थिर और निश्चल हो कर बोला 'यदि किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति को मेरे और तुम्हारे सम्बन्ध के बारे में तनिक भी सदेह हो जाएगा तब मैं तुम्हें अपनी इस चारदीवारी में प्रवेश नहीं करन दूंगा । मैं प्रजातंत्र देण क एक प्रवेश का मुख्यमंत्री हूँ । हमारे मुक्क में एक पत्नीप्रण ही आदरणीय है । नयो लियन की तरह अधिकार के अह्कार में डूब कर विभिन्न सुन्दरियों का उपभोग करना हमारे यहाँ पाप समझा जाता है । जो पाप है उसे मैं



फलक के रूप में अपने अग से नहीं सपेट सकता । गची क मत्स्यीन और तप्त मुख पर अपनी दृष्टि जमा कर यह गीत स्वर में पुन कहन लगा 'मैं जानता हूँ कि मेरे स्पष्ट विचारों से तुम्हारे कोमल मन पर आघात लगगा । तुम्हारे विचार भ्रम की तरह फरकार कर के यह भी कह उठें कि मैं दुराचारी हूँ पर मैंन कभी भी दुराचार को प्रथम नहीं दिया । मैं यह चाहते हुए भी नहीं कर सकूंगा कि गुलाब मन ही मन में यह सदेह से कर जलती रहे कि तुम उसकी सौत हो उसक मुख में आग लगान आई हो और मैं तुम्हारे यहाँ आन पर प्रतिबंध न लगाऊँ ? यदि ऐसा गढ़ हो गया तो मैं तुम्हारे आगमन पर तरन्त प्रतिबंध लगा दूंगा ।'

अरविंद काफी देर तक मौन रहा । शची को आँसू सजल हो उठीं । उसकी सिसकी मुन कर अरविंद बोला 'महान व्यक्तियों क चरित्रों क बारे में प्रजा क कान बड़ सतक रहते हैं । उन्हें केवल प्रतिध्वनि सुनाई पड़नी चाहिए वास्तविक ध्वनि की ये अनुमान से स्वत ही पकड़ लेते हैं । यदि यह तथ्य सिध्या होता तो महान पुरुषों क उदात्त चरित्रों के क्लृप्त पृष्ठ सदा प्रबद्धन रह जाते ।

अरविंद दूमरे कमरे में चला गया ।

गची न कुछ ग्लानि और धुणा से तडप कर कहा 'धूल कहीं का ।

\* \* \*

३५

अरविंद अथ राजनाति और प्रभुता में उन्मत्त नहीं हुआ । राज्य का सम्पूर्ण सत्ता के उन्माद में उसकी आकांक्षाएं अनुचित तरीक से आगन नहीं हुई । वह पूण स्थिर और धीर गम्भीर रहता था । उसन इतनी संलग्नता धीर सत्यरता से राज्य की काय प्रणाली में परिवर्तन करना गढ़ किया कि गन मन्त्रिमंडल क सत्वावधान में सचिवालय व अन्य कार्यालयों जो निष्क्रियता से गई थी उसका अंत हो गया । उसन सभी छोट

श्रीट कमचारियों में कार्य करने की क्षमता का आह्वान किया और किसी के प्रति अनुदारता का भाव न दिखला कर समन्वय नीति से काम से कर एक समझौते की सुमधुर भावना का परिचय दिया।

पञ्चवर्षीय योजनाओं के अन्तर्गत संचालित योजनाएँ परियोजनाएँ परिवर्तनाएँ एवं सामुदायिक विकासों की जानकारी उसने छोटे से छोटे गाँव में पहुँचाने की ध्येयस्था की।

राज्य के पत्रकारों का जो राष्ट्र के प्रति ईमानदार और स्वस्थ जनमत के हिमायती थे उन्हें उसने आर्थिक सहायता देने प्रारम्भ की, जब कि वह अपने कुचक्र के दमन से हानि पहुँचाने का रास्ता ढूँढ़ने लगा।

वह छुड़ अपने कमचारियों पर कठोर परिश्रम करने की महत्ता का प्रभाव डालने के लिए सभी उपलब्ध मुख्य-सुविधाओं का त्याग कर निरन्तर धम किया करता था। काय करने की इस क्षमता और दक्षता का मोघा प्रभाव यह पड़ा कि जो निष्क्रिय एवं कामचोर व्यक्ति थे वे सतक हो कर काय करने लगे। उन्हें भय होने लगा कि जब यह शानवी मुख्यमंत्री स्वयं काय का निरीक्षण करने आ जाय ?

भूस्वामी आन्दोलन ने एक बार अरविंद की धम सफट में डाल दिया। यगों से घरती के खेटों का जोक की तरह लून चूसने वाली रक्त-पिपासु जाति ने मुख्यमंत्री की उदारता का अनुचित लाभ उठाने को चेष्टा की।

भूतपूव मुख्यमंत्री के प्रति अविश्वास का प्रस्ताव पास करके अरविंद की इस पव पर आसीन कराने का ध्येय इन प्रतिक्रियाशील नेताओं को भी काफी था। उन्हें वे दिन अभी भी कल से जान पड़ते हैं जब अरविंद बटन बानी गाय की तरह दयनीय होकर उनके पास आया था गिड गिडाया था और अपने पद में अपना मत देने के लिए उनसे अनन्य विनय की थी। अरविंद ने तत्काल प्रतिज्ञा भी की थी कि वह उन हितों और मुख्य साधनों का रक्षा रखेगा।

और आज जैसे य जागीरदार और जमींदार अपने उस उपकार का प्रत्युपकार के रूप में वापसी चाहते हैं ।

चंद्र नवाजों ने मुख्यमंत्री से भेंट की और मुख्यमंत्री ने बड़ी स्पष्टता से उन्हें कहा, मैं देश की प्रगति में अवरोध उत्पन्न नहीं कर सकता । देश के सर्वांगीण विकास में नई क्रुतिसत परम्परा डाल कर मैं साधारण प्रजा का अधिकार मगरमच्छ की भाँति नहीं हथप सकता । मुझ आप से व्यक्तिगत सहानुभूति है और आपके हितों के प्रति सजगता भी है । लेकिन जिस बात से काग्रस के नाम पर घटा लगता है वह वाय मेरे अधिकार में ही नहीं है ।

ठाकुर मोहनसिंह से लेकर अग्र जागीरदार-जमींदार निर्याक रह गए । यदि मुख्यमंत्री के सनक्ष गिष्टता का प्रश्न नहीं होता तो ये कदाचित्त उसे यह सुनान में बेर नहीं करते कि वह बिन भूल गए हो जब तुम एक भिक्षारी की तरह हमारे पास अपने उत्पान की भोल मगिन आए थे । उन सभी शिष्टमंडल के सदस्या को हैरत तो इस बात की थी कि अरविंद यह सब कहते तनिक सकोच भी नहीं करता तनिक अधीर नहीं होता ।

वे नाराज हो गए ।

राज्य की राजधानी के लिए सभी भूस्वामियों का आन्दोलन को व्यापक रूप देने के लिए आह्वान किया जाता है । रक्त पिपासुओं की हिंस्र जिह्वा एक बार फिर लपलपाती है । मानवता के औचित्य पथ के स्वस्थ और सौरभमय वातावरण में विरोधी तत्व फिर घुटनगील और विपाक वाय की सजना करते हैं ।

उस दिन अरविंद रामबाग में शर की भाँति बहाडा । उसने इतिहास का विन्तेषण करते हुए कहा वस प्रात काल हुआ था । हम न बेला विपन्न जनार्ण माग में राष्ट्र को कराहते हुए । यगों से जनता पर सोमहपक अत्याचार करन वाले सिंहासन के पतनोपरांत सूखी भूखी पर मुस्कान लिए प्रजा को । उस प्रजा को जिसे मुल्ल विसास नहीं चाहिए,

जिस सत्ता और शासन नहीं चाहिए, जिसे चाहिए बस एक अधिकार—  
 जीन का अधिकार जीन के लिए काम करने का अधिकार और जितना  
 वह उत्पन्न कर सकता है उसे पाने का अधिकार। आज यह  
 भूस्वामियों का प्रतिक्रियावादी और राष्ट्र के लिए घातक तथाकथित  
 जो आन्दोलन चल रहा है वह भाषारण भूस्वामियों के विकास का रोक  
 देगा, उनकी उन्नति और प्रगति को मिटा देगा। सिफ चंद निहित स्वार्थ  
 राज्य में अगाति और विकासगत राजपूत जाति को गमराह कर रहे  
 हैं। राजपूत इन समाकथित नताओं को असंख्यत पहचाने और अपनी  
 स्थिति का भवलोचन करते हुए अपनी शक्ति का अपव्यय न करें। क्योंकि  
 यह अमित सत्य है कि इतिहास पीछे नहीं जाएगा वह आगे ही बढ़ेगा।'

लेकिन चंद विनों के लिए भरखिब का सोना खाना और पीना इन  
 भूस्वामियों में हराम कर लिया। लेकिन फिर धीरे धीरे यह आधारहीन  
 आन्दोलन गाय हो गया।

भरखिब आन्दोलन के गाय होते ही सभी विधान सभा के कांग्रेसी  
 सदस्यों से मिलता और अखिल में उत्पन्न विकट स्थिति से उन्हें अवगत  
 कराया। उसने उन तमाम सदस्यों को सावधान किया कि अब भूतपूर्व  
 मुख्यमंत्री इन प्रतिक्रियावादी तत्वों की अगाति का लाभ उठाने की  
 असफल चेष्टा करेंगे। वे यह भी भरपूर प्रयत्न करेंगे कि मेरे प्रति  
 अविश्वास का प्रस्ताव रखा जाए, लेकिन मुझे आप सबका पूरा विश्वास  
 है कि उनकी बूढ़नीति यहाँ नहीं चल सकती।

आन्दोलन की असफलता के बाद उससे ठाकुर मोहनसिंह ठाकुर  
 नरेन्द्रसिंह और कई विरोधी दल के नेता भी मिले और उन्होंने उमे  
 अपने प्रति किय गये विश्वासघात को लेकर दो-चार बड़वी बातें भी  
 सुनाईं लेकिन वह नाराज नहीं हुआ। उसने आत्म विश्वास की भावना  
 से जाग्रत होकर कहा, कोई भी जनतांत्रिक शासन अपनी गौरवमयी  
 परम्परा का परिद्वान नहीं कर सकता। जिस वस्तु का अन्वयान  
 असम्भव है उसका प्रति चेष्टा करना सवधा गलती है।

जब वे अपना अनगल प्रनाप बन्द कर देते तब वह पुन विद्वान हो कर घोसता, मैं आपका शुभचिंतक और सच्चा हितपी हू पर मुख्यमंत्री जनमत के विरुद्ध नहीं चल सकता और यदि जनन को छेड़ा करेगा तब उसका निश्चित रूप से पतन हो जाएगा ।'

अरविंद का निर्धारित लक्ष्य पूरा हो गया । कांग्रेस स लेकर दिल्ली के केन्द्रीय शासन तक न उसके इस रक्त हीन दमन की सराहना की । इस अवसर का लाभ उठाने के लिये वह एक बार फिर दिल्ली के लिए उभा । इस बार उसने प्रधानमंत्री से लगभग एक घंटा बात की । कांग्रेस कमेटी के महामंत्री से लगभग दो घंटे वार्तालाप किया और उस सार हीन वार्तालाप को उसने महत्वपूर्ण करार लेकर गुप्त रखा । इस प्रचंड प्रक्रिया में उसकी अतिमानवीय प्रगल्भता निहित थी और उसने प्रभाव का प्रकीर्ण पट्ट स्निग्ध हो उठा ।

कांग्रेस के साधारण सदस्य से लेकर विधान सभा एवं राज्य के सभ सदस्य तक उसकी शक्ति के मूल्यांकन को लेकर आतंकित हो गए । इसमें एक और रहस्यपूर्ण बात थी कि इन मंत्रों को समाचारपत्रों न अल्पन्त तूल लेकर प्रकाशित किया था ।

\*

\*

\*

३६

मुख्यमंत्री अरविंद का एक व्यक्तिगत पत्र घोष में ही उड़ा लिया गया और जिसकी सूचना भी उसी क्षण अरविंद के पहुंच गई । उस पत्राधिकारी को उसने उसी क्षण अल्प काल के लिये पदच्युत कर दिया और उसे साधारण श्रमक बना कर राज्य के उस भाग में भेज दिया जहाँ उसके जीवन के सरक्षण का कोई ठिकाना नहीं था । जहाँ उताव जीवन का क्रम बहए की धान से घनता हुआ अंत में विनष्ट हो जाएगा । यहाँ भी अरविंद ने बड़ी धतुराई का परिचय दिया । वह

जानता था कि उस पदाधिकारी को सद्व्यवस्था के लिये पदच्युत करने का साहस यह है कि उसके विरोधी बल के व्यक्तियों का कुछ कहने को अवसर देना। अतः उसने धीरे से इस मामले को सुलभता लिया और इस उदाहरण से उसने एक शिक्षा पाई कि अपने को शत्रुओं से हमेशा दूर रखो।

उस चाणक्य जी की बुद्धि की कहानी याद हो उठी। महामंत्री चाणक्य नद बग का नाश कर मगध पर चन्द्रगुप्त मौर्य द्वारा गणित राजतंत्र की स्थापना कर चुका था। इस विजय के उत्साह में उस का अहम् तनिक अधिक विस्तार छा गया था। एक रोज महामंत्री बन की राह कहीं जा रहा था कि एकाएक एक बुद्धिवादी अपना नाम लेते सुन वह निरुत्साह की भ्रंश से पास गया। उसने सुना कि एक बड़ा बण्ड स्वर ममता से परिपूर्ण हो कर कह रहा है, कि बड़ा सू तो रोटी बीच-बीच से खा कर कुछ महामंत्री को गलत राजनीति की याद दिला रहा है। बड़ा पूछता है कि क्यों माँ महान कूटनीतिज्ञ के बारे में तुम्हारे यह शब्द अशोभनता प्रकट करते हैं इतना जाहिर करते हैं। बड़ा अट्टहास कर उठी। सम्य स्वर में बोली कि जा रे जा जानती हूँ मैं तुम्हारे महामंत्री की। यही उस की कूटनीति है कि मगध को अधीन करके निश्चित हो गया। सोचता ही नहीं कि चारों ओर शत्रु आँसू लगाए बैठे हैं कि क्या अवसर मिले और कब मगध के राज्य को चूरा बिचूरा कर दें।

कहते हैं कि उसी दिन स कौटिल्य ने विनाल समय संगठन कर के मगध की सीमाओं के राज्यों पर आक्रमण बोल दिया।

मगध के अन्तर्गत सोच रहा था कि जब तक वह अपने आप को अपने शत्रुओं से एकदम मुक्त नहीं करेगा तब तक उस का सत्ता की मीठी मुहब्बत नहीं हो सकती। उसने धीरे धीरे विरोधी बल के समस्त पदाधिकारियों को घालू मन्त्री से अलग कर दिया। शत्रु का ब्याह करके उस भी एक कालेज की प्रतिपत्ति बना कर अपने से दूर कर दिया और उस के पति को भी उसी शहर में एक अशुभ पदाधिकारी बना कर भेज दिया

हालांकि उसकी इस नीति से गवों के हृदय की आघात जट्टर लगा। उस न मन ही मन यह भी सोचा कि वह नींव के निष्प्रयोजन दिल्के की तरह उस निघोड कर फेंको जा रही है पर फिर भी वह चुप रही। उसे यह अन्धाय मुस्कराते हुए सहना पड़ा। विरोध की भावना उठन पर भी वह चुप रही। अरविन्द के इस दुष्कृत्य के पीछे छिपी विरक्ति से परिचित हो कर भी वह शांत रही—क्योंकि वह इस बट सत्य से अच्छी तरह भिन्न थी कि अब वक्त उसका साथ दिन प्रतिदिन छोड़ रहा है। इस जीवन यात्रा के सौ-दयहीन होते हुए भी यात्री के लिए एक एने पाथय की जरूरत है जो निस्वाय भावना से घम समझ कर उसका मत्य पयन्त साथ वे।

अरविन्द अपन छोटे मोटे सभी गत्रुओं से मुक्त हो कर सता के मद्द में झूतने लगा। समय उसे कह रहा था कि तुम अरमोत्वय पर पहुच चुके हो अब तुम्हारा पतन अवश्यमेव होगा पर यह राजनीति का अतुर खिलाडी पतन के परिणाम से परिचित हो कर आकुल नहीं होता बल्कि कभी-कभी अपने मन में उत्पन्न होने वाली प्रसविग्ध अवस्था पर वह यड़ी प्रवीणता से आधिपत्य कर लेता।

विरोधी बल के व्यक्ति उस से असन्तुष्ट रहत ही स। और भू पू० मुख्यमंत्री पुन देग की हाई-कमान की अपनी भूतपूव देग-सवाओं की बुहाई द्वारा इस बात के लिए बाध्य कर रहा था कि उस एक धार और अवसर निसे। अविश्वास का प्रस्ताव जो उसक विरुद्ध बहुमन से पास हुआ था वह सिफ वतमान मुख्यमंत्री की घालबाजी से।

इस बीच जब अरविन्द के विरुद्ध एक जनमन और विधान सभा में बहुमत बनाया जा रहा था तभी एक बड़ी गलती अरविन्द कर बठा। शिक्षामंत्री से उसका झगड़ा हो गया था, क्योंकि शिक्षा विभाग का जो डाइरेक्टर था वह अरविन्द का समयक नहीं था जिसने अरविन्द को कभी-कभी बड़ा परेगान होना पड़ता था। अत उसन शिक्षामंत्री को उसे पद से अलग करन को कहा। शिक्षामंत्री का वह विगय कृपापात्र

था। कहते हैं कि उसकी नियुक्ति के लिए, सिफारिशों के लिए गहर की कई कुलीन सुंदरियाँ आई थीं। शिक्षामंत्री न अरविंद के समक्ष वर्तमान टाइम्स-पत्र को न हटाने की गिफ्टता के साथ विवशता प्रकट कर दी। दोनों में तनावही हा गई। अरविंद ने क्रोध में उससे इस्तीफा माँग लिया। शिक्षामंत्री ने इस्तीफा देने से इन्कार कर दिया। इस किर क्या था दोनों में सघष उत्पन्न हो गया।

भूतपूर्व मुख्यमंत्री को इस अवसर का लाभ उठाना ही चाहिये था और उसने उठाया। इस नाजुक परिस्थिति में भी अरविंद ने अपनी घृष्टता को नहीं छोड़ा। वह एक बार फिर अपना कुचक्र घनाना चाहता था पर इस बार वह सबया असफल रह गया।

धीरे धीरे स्थिति विगड़ती गई पर अभी विरोधी दल के अगुआ शिक्षा मंत्री को इतना बहुमत प्राप्त नहीं हुआ था कि वह अरविंद को त्यागपत्र देने के लिए विवश कर दे।

अरविंद इस सघष के परिणाम से परिचित हो गया।

उसने अपने तमाम आत्मीयों को अच्छ-बुरा स्थायी पदों पर भज दिया ताकि उसके पतन के पश्चात ये सभा उसकी सहायता करें। यह उसकी बुरबगिता थी कि वह हथा के रत्न को गोध्र और ठीक-ठीक पहचान लेता था। उसने मन ही मन यह निर्णय सा कर लिया था कि इस बार की पराजय उसे अतिगोध्र पुनर्जीवित नहीं होने देगी।

वह इस सकट स्थिति में तो था ही, कि अचानक एक करोड़पति महन्त के खिलाफ जनता ने हल्का रोष प्रकट किया। यह रोष छुप रूप से प्रकट हुआ था यन उसने अपने बहुत ही निपुण और विन्वास पात्र गुप्तचरों को आदेश दिया कि गोध्र ही इस रोष के पीछे द्विपी प्रवृत्ति का पता लगाएँ।

स्वामीभक्त गुप्तचरों ने अपनी रिपोर्ट में बताया कि यह महत् धम की छाड़ में अनाचार और भ्रष्टाचार की घोर प्रथय दे रहा है। मन्दिर में अपार धनगणि है और महत् विनास के सागर में इतना डूब गया है



कि उसकी वासना की तीव्र भूधा बलवती हो कर प्रत्येक को चहू-चटी की मांग करने लगी है। महत धर्म विरुद्ध सभी धावरण करने लगा है जैसे मद्यपान और सुन्दरा भोग।

अरविन्द इस मामले पर कई दिन तक गम्भीरता पूर्वक विचारता रहा। उसके विरुद्ध धन रहे विपाक वातावरण को आवाज दिन प्रतिदिन समीप आ रही थी। यह उस आवाज के परिणाम का भा यहचानता था। उसकी सुतीक्षण धीरे धीरे सुन्दर साधन निकालने में सिद्धहस्त था। वह किसी उद्घाटन के सिलसिले में उस गहर में जा पहुँचा।

महंत न उसे निमंत्रण दिया। अरविन्द न निर्विकार भाव से उस का निमंत्रण स्वीकार किया। भोजन के पूर्व यह महंत के बान में अपने गुप्तचरों द्वारा यह बात डालने में सफल हो गया कि आप के विरुद्ध कई गिंथायनें पहुँच गई हैं और गीम ही माप धी सम्पत्ति ध्यानिक रूप से हस्तागत कर ली जाएगी।

भोजनोपरात महंत न उस से लगभग एक घंटा तक वार्तालाप किया। क्या वार्तालाप हुई इसमें सभी अपरिचित है। लेकिन अरविन्द मुस्कराता हुआ बाहर निकला। ऐसी प्रसन्नता उसके मुख पर सभी ही जाती थी जब वह मनोबाँधित फन पाता था।

अरविन्द को अत्र अपने पतन का जरा भी भय नहीं था। उसने सही से जाते ही एक पितृपति जारी की। उसमें उसने महंत के प्रति प्रजा के रोष को यताने हुए उन्हें अपना गहर न छोड़ने की बड़ी आशा दे दी।

शत्रुओं न इस रहस्य का पता लगा लिया।

एक दिन विराधी पत्रों ने विषयस्त सूत्र का उल्लेख दे कर यह समाचार प्रकाशित किया कि महंत से मुख्यमन्त्री न सार्वों रूपेण छा कर जनता के प्रति अभ्याय किया है। मन्त्री प्रजा के सम्मुख स्पष्टीकरण करें।

लेकिन अरविन्द न अपने साप्ताहिक में इस घटना का इतना जबरदस्त जवाब दिया कि सभी घप हो गए। अपने लिखा "कुछ समाचार

पत्र, जिनका निम्न स्तर, जिनकी कोई नीति नहीं है जिनका भारतीय स्वतंत्रता-संग्राम में कोई योग नहीं, वे पत्र सरकारी विज्ञापन को प्राप्त न कर के इस तरह के भ्रमपूर्ण और निराधार समाचार प्रकाशित करते रहते हैं। इस समाचार में सत्य का और तथ्य का सबका अभाव है। विवेक और गम्भीरताहीन इस समाचार में केवल आक्रोश और रोष झलकता है। मैं प्रजा और प्रजा के वर्णवर्गों से प्रायना करूँगा कि वे इस प्रकार के समाचारों से उत्तजित और अचिर न हों। यदि इसमें सत्य का आभासमात्र भी है तो मैं प्रत्येक व्यक्ति का ललकारता हूँ कि वे मुझ पर आरोपित किए गए लालचों को प्रमाणित करें।

पर अरबिन इतना उतावला और मूढ़ नहीं था कि अपन पीछे कोई भी चिह्न शय छोड़ देता। विरोधियों ने बहुत प्रयत्न किया पर वह बिलकुल मौन रहा। जरा भी विचलित और अस्थिर नहीं हुआ। इस बार उसकी यह जीत तो हो गई, पर उसने यह तय कर लिया कि उसे शीघ्र ही कुछ दिन के लिए राजनीति से संन्यास ले लेना चाहिए। लेकिन इधर कोई ऐसी गम्भीर चर्चा नहीं हुई थी जिससे उस घनि गीघ्र ही इस्तीफा देना पड़े। उस यह विविक्षित हो गया था कि एक ज्वालामुखी उसके विरुद्ध भड़कन को तयार है। अतः उसने यही गान से मन्त्री-पद से इस्तीफा देने का निश्चय लिया।

एक दिन वह प्रसिद्ध प्रांतीय काँग्रेस कमेटी के अध्यक्ष से मिला और उसे सविनय कहा 'मेरा विचार है कि मैं अपन पद से इस्तीफा दे दूँ।

'क्यों? ऐसी स्थिति तो नहीं आई है' उम्होंने चौंक कर कहा। उनका सनाट पर बल पड़ गया।

'आप का कहना है कि ऐसी स्थिति उत्पन्न होना पर ही मैं इस्तीफा दूँ। घात यह है कि मैं इस पद पर रहूँ या न रहूँ मुझ कोई गुल और दुःख न होगा लेकिन मैं यह नहीं चाहता कि मेरे कारण दूसरी पार्टियों वाला को काँग्रेस की आलोचना करने का अवसर प्राप्त हो।

ठीक है भाई !" उन्होंने बज्रुग की तरह गवन हिला कर कहा ।  
 तुम्हाग इस तरह इस्तोफा देना भी अच्छा प्रभाव नहीं छोड़ सकता ।  
 अचानक इतन शब्द परिवर्तन के पीछे किसी रहस्य के होने की सम्भावना  
 का अनुमान क्या नहीं लगाया जा सकता ? आप क इस्ताफ को ले कर  
 विरोधी बल वाले भाँति भाँति की झटकलयाजियाँ लगाएँ, जो आप के  
 और काग्रस के लिए सबका प्रविष्टाघातक सिद्ध होंगी ।

‘फिर आप को मेरी ईमानदारी का पूरा समयन करना पड़ेगा तथा  
 एक स्पष्टाकरण पत्र प्रकाशित करना पड़ेगा जिसमें अफवाह फैलाने वाले  
 ध्यतियों को तिरस्कृत किया जाए एवं भविष्य के लिए उन्हें सावधान  
 होन का आदेश दिया जाय ।

अभ्यस न यह करन क लिए आवातन द दिया ।

इसका बाद यह प्रत्यक्ष सदस्य के पास गया और उनसे अपने इस्तोफ का  
 जिक्र किया ? इन प्रकार अभिनय से उसे इस बात की पूरी पूरी जानकारी  
 हो गई कि कौन कौन उसका समक है और कौन-कौन नहीं ? मनो  
 बलानिक ढग से विश्लेषण किया जाय तो उस क्रिया को यही प्रतिक्रिया  
 हो सकती है कि जो ध्यक्ति स्वेच्छा से त्यागपत्र दे सकता है यह सत्ता  
 का लालची नहीं बर्इमान नहीं बभपूरा स्वेच्छाधारी नहीं । अत उसने  
 अपने इस अभिनय का फलस्वरूप प्रत्यक्ष सदस्य की आन्तरिक सहानुभूति  
 प्राप्त कर ली । तब वह इस परिणाम पर पहुँचा कि उस त्यागपत्र देन  
 की कोई जरूरत नहीं है ।

विरोधी बल का अमात्मक संगठन उग्र रूप धारण करता गया ।  
 उन्हें अपना सफलता प्राप्ति की ओर प्रमातवालीन उदय होते हुए सूर्य की  
 भाँति लगी । अत में एक दिन अविश्वास का प्रस्ताव रखा जाना तय हो  
 गया । उस दिन के ठीक एक दिन पहले अरविद न एक बार पुन अपने  
 पक्ष में मत देन वानों की कोठियों के द्वार खटखटाया, उनसे अनुनय विनय  
 की और उन्हें अपने बच्चे की कसम खाकर यह विश्वास बधाया कि उस  
 न भूतकाल में जो गलतियाँ की हैं, उन्हें वह भविष्य में नहीं दोहराएगा ।

यदि उसने अज्ञानवश कोई भ्रम कर दी है तो आप उसे बताइए, मैं स्वीकार करूँगा। गलती का सन्तोषन करूँगा।

प्रस्ताव के पक्ष विपक्ष में मतदान होने के पश्चात् विरोधी बल को मुझ की खानी पड़ी। अरविंद इस बार भी विजयी हुआ। लेकिन इस बार उसने निपुणता से अपने मन्त्रि-मंडल में से दो विरोधियों को बाहर कर दो नये मन्त्री सम्मिलित किए, जिनके पीछे कांपस सगठन का बहुमत था। अब वह निश्चिंत हो गया था, उसका मन्त्रित्व निभय हो गया। लेकिन उसके अधिकार की वासना और स्वयं के प्रति उत्कट लालसा उसे थोड़ा हृष में उन्मत्त कर रही थी।

वह पूर्ण रूप से सत्ताभोग बन बठा। धीरे धीरे उसका मानस इस सत्य को भी विस्मृत करने लगा कि वह प्रजातंत्र का निर्वाचित नामक है। इतनी उन्मत्त अवस्था में भी उसका मस्तिष्क की स्थिरता पूर्ववत् थी। उसकी जागरूकता जीवित थी और यही जागरूकता उसे अपने सहयोगियों की कृपा पात्र बनाए हुए थी।

\*

\*

\*

३७

इनके बाद जनतंत्र दिवस आया।

इस दिवस पर अरविंद ने जो भाषण दिया वह अत्यंत उल्लेखनीय था।

उसने बड़ी विनम्रता से मंच पर लड़े हाकर निवेदन करना प्रारम्भ किया, "माननीय सम्पन्न भाइयों और बहनो !

सब प्रकार के प्रभुत्व से सम्पन्न भारत के गणराज्य की आज बधगाठ है। स्वतंत्रता प्राप्त किए आज सात बय टपतीन हो चुके हैं। सन १९४७ में हमें अत्यंत त्याग और सघय के पश्चात् राजनैतिक स्वतंत्रता प्राप्त हुई और २६ जनवरी १९५० को अनेक कठिन सघयों के पश्चात् हमारा

१७७

का आवागमन सुलभ हो जाएगा। तब न सख्तमू को बलगाड़ी को निकासन के लिए भीड़िए का मह ताकना पडगा और न भीड़िय को अपने भाते क लिए अपनी घर वाली का लम्बी देर तक इन्तजार करना पडगा। क्योंकि मान लो रास्ते के बीच कोई बेगपूण बरसाती माला हो तो वह घघारी कसे आएगी ?'

प्रसन्न मुद्रा स अपार जन समूह को एक बार अरविन्द मे देला। उपस्थिति प्रसन्नता के सागर में डूबी हुई थी। उसन कहा 'इसमें हमारे पूय बिनोबा भावे क भू दान, धर्मदान, सम्पत्तिदान आदि का बड़ा हाय है। हम उनके भी कृतज्ञ हैं। सिचाई साधनों का विकास, औद्योगिक प्रगति शिक्षा विद्यत विकास खनिज सम्पदा चिकित्सा एवं जन-स्वास्थ्य समाज कल्याण काय धर्म कल्याण, अल्प आय गृह निर्माण सहायता व पुनसस्थापन स्वायत्त शासन और अकाल सहायता पर बहुत ही सतत एवं सहायुभूति पूण स्वर में प्रकाश डाला। उस ने जनता की मनोवांछ का अभ्ययन करते हुए घतुर जननायक की भांति अकाल समस्या पर विस्तृत रूप से कहा। क्योंकि वह जानता था कि यह समस्या इस राज्य में गिर के घट की भांति अचानक ही उपस्थित हो जाती है। वह बोला, आकाश में मेघ उमड रहे हैं। अमृत बरसा रहे हैं। खेतों में लोग उत्साहित हो कर बीज बो रहे हैं। उनकी गृह-सन्निर्मा एक घारी की घूनरिया ओड़ अपन खत में काम कर रही हैं। धर्म देनिया धर्म न अभिमून हो कर गुलाब क फूल की तरह खिल उठी है। क्योंकि उनका धर्म साकार रूप धारण कर धरती क गर्भ से पडा हो रहा है। देखते-देखते बालें भूमन लगती हैं और उन बालों के बीच बोला मारु और रामू-घनला क मधुर मिलन सेते हैं। स्वयं धरती पर उतर आता है।

"अचानक अमृत के अभाव में गवान बलें मुरभान लगती हैं। रामू घनला की आँखें अनत अन्तरिक्ष में तूर-तूर तक फल जाती हैं पर बादल कहाँ? जीवन क अभाव में जीवन मुरभा जाता है। देखते-देखते धर्म

बेवता का माँ साँपिन की भाँति अपने सहस्रों बच्चों को पोषों फो, डसन लगती है। जहर चढ़ता है और पोष सूखन लगते हैं। महामारी और भूख का साम्राज्य छा जाता है। रोटा के अभाव में जन-समूह चारों ओर तूफान की भाँति उमड़ पड़ता है। वंग की स्थिति और प्रगति में असंतोष उत्पन्न होने लगता है। हम भी कभी कभी परेगान से हो उठते हैं और इस परेगानी का सदा क लिए अंत करने क लिए ही जवाई, भाखरा और चम्बल की मिचाई योजनाएँ कार्यान्वित की जा रहा हैं। इनके पूरा होत ही राज्य सहलहा उठगा। गाँव भूम उठेंग।

उसने बड़ ही उत्साह से कहा।

‘हमारे राज्य में और राज्यों की तरह डाकू उपद्रव मचा ही रहे हैं। निसंबेह उनक पीछे बड़े-बड़े जमींदारों तथा ठाकुरों का हाथ है और धीरे धीरे इन हाथों का रूप रंग बदलत-बदलते अंत में नताप्रो तक पहुँच गया है।

हमारे गुप्तचर विभाग न ध्यान धीन करक यही सूचना दी है कि इन डाकूओं के साथ कोई भी वाँप्रस का नता नहीं है अपितु ये जन्मजान अपराध की भावना लिए हुए कुछ सनिक हैं जिन्हें भूतपूर्व अप्रजी सरकार न अवकाश दे दिया था। हाँ, इस बात की जरूर धुँधानो भलक प्राप्त होती है कि इनके पीछे कुछ प्रतिन्रियावादी तत्व जरूर काय कर रहे हैं लेकिन ये इतने प्रच्छन्न रूप में हैं कि हम उन पर या उनक प्रोत्साहन पर कायचाही नहीं कर सकते।

“पर इसका मतलब यह नहीं है कि हम निष्क्रिय हाकर बठ रहेंग ? नहीं बतमान सरकार इन इंसानियत के दुश्मनों क बमन के हेतु कठोर बरम उठाती आ रही है और कानून और व्यवस्था की स्थिति को संतोष जनक रखन के लिए कितन हा गिरोहों को समाप्त कर दिया है। जते हमारे सिपाहियों स डाकूओं का कई मुठभेड़ हुए जिन में सगभग छाया बजन डाकू मारे गए। सख्तों गिरफ्तार किए गए। उनस हजारों की सम्पति बरामद कर खजता की उन्नति के हेतु सगाया गया क्योंकि यह

जतता की अपनी ही सम्पत्ति है। कई गिरोहों को एकदम समाप्त कर दिया गया है। हालाँकि इस महत्वपूर्ण काम के लिए हमारी देशभक्त पुलिस के कई जयामदों को भी अपनी जान गंवानी पड़ी है। डाकुओं को पनाह देने वालों का पूरा खप से समाप्त करके उत्पात को रोकना है। हम उन विचलित जयामदों को धरती में मस्तक भुकाते हैं। जत में मैं एक बार पुन गणतंत्र दिवस का अभिनन्दन करता हूँ।

इस भाषण की प्रकाशित प्रतियाँ सम्पूर्ण प्रांत में वितरित कराई गई थीं। धतमात उपस्थिति पर उसका भाषण का अत्यंत ही गहरा प्रभाव पड़ा। क्योंकि इसमें उसके विस्तृत ज्ञान का परिचय मिल रहा था। भाषण लिखित नहीं था अपितु कुछ-कुछ मन्त्री जिन्हें अपने ही विभाग का पूरा ज्ञान नहीं था वे भी से गए जिनको अरविद भलीभाँति जान गया।

अरविद न बठ-बठ सोवा यह भाषण मेरी विजय को विर रलगा।

\*

\*

\*

३८

अचानक गवा घा गई थी।

गुलाब अपने बच्चे 'प्रमू' को महला कर बपड़ पहना रही थी। प्रमू उदल-उदल कर अपनी घसपट भाया में खोल रहा था। क्या खोल रहा था इसे गुलाब को समझ पा रही थी।

गवा को देल कर गुलाब विभोर ली हो गई। अपने घाँवल को सम्हालती हुई, उससे घरल-स्पर्ण करन के लिए मन्त्री कि शघी न उसे रोक कर आसिगत में बाँध लिया। उस गुलाब बस ! बसो हो ?

अच्छी हूँ, और घाप ?'

'मैं बहुत लुग हूँ। मुत्पमन्त्री को कृपा के अल से इतना बव गई हूँ कि घब जिन्दगी भर उच्छरल नहीं हो सकूंगी।'

‘देखा जीजी, उन्होंने जिंदगी में इतना कष्ट और दुख भना है कि अब वे स्वाभाविक ही कदए हो गए हैं। हर व्यक्ति को सहायता करना वे अपना कर्तव्य समझते हैं।’

गची उदास स्वर में बोली, ‘सम्बा अर्त्ता-सा हो रहा है उनकी दया को प्राप्त किए। गुलाब बहन, इस घर में खाँद भया के यहाँ भाभी से मिलने गई थी। मैं देखा कि सारे गहर में उसकी तस्वीरें लगा हुई हैं। लोग अरखिव को बहुत प्यार करते हैं। देवता की तरह पूजते हैं। लोगों का अनुमान है कि एक वही ऐसा मंत्री है जो अनता के दुख को अपना दुख समझता है।’

गुलाब गदगद हो गई। यद्वा के भाव जते उसने अन्त म्त्त में उमडने भग। घाली ‘मैं भी ऐसे देवता को पा कर निहाल हो गई।’

गची जमे जड हो गई।

‘जीजी।’

‘हूँ!’

‘भाब उदास क्या हो गई?’

‘नहीं तो।’

‘जीजा को माद आ गई क्या?’

सावधान होती हुई गची बोली ‘हाँ हाँ, उनकी याद आ गई सोचती हूँ, कौन उनकी देख रेल करता होगा?’

तभी हम लोगों को एक पत्र भी नहीं लिखा। जीजी इस तरह प्रम में डूबना अच्छा नहीं है।

‘क्यों? जसे वह घोक पड़ी।’

गुलाब के गाल लाल हो उठे। गम से होंगों को दबाती हुई बोली ‘दूसरा मेहमान।’ उसने मुस्कान कर अपने दोनों हाथों से अपना मुँह ढक लिया।

गची की मुक्त भावना का भावना आ-दासिन हो उठी। भावावेग में



उसने गुलाब के गान का चुम्बन ले लिया 'तुम सौभाग्यवती हो न, गुलाब ! मैं बदन कर तुम अपने परलोक को भी सुधार लींगी ।

गुलाब ने उपहास से कहा 'अभी तो भाव की दाबी हुई है जीजी, देखती जाइएगा पूरी फीज तैयार हो जाएगी ।'

'अभी न कोई उत्तर नहीं दिया । यह सूखी मुस्कान हस पड़ी ।

भाव आज उदास क्यों है ? लीजिए चाय या गर्द, चाय पी लीजिए ।'

'अभी चाय पी कर बाहर जान की उद्यन हुई । गुलाब ने कहा 'खाना कितने बज जाएगा ?

कोई निश्चिन्त टाइम नहीं है ।"

'अभी बाहर चली गई । गुलाब भी विचारमग्न हो गई । वह सोच रही थी कि अभी जीजी को क्या दुःख है ?

भारतव में यही प्रश्न मेरे उपवास के पाठकों के सम्मुख उपस्थित हुआ होगा । पाठकों ने विचार होगा अनुमान लगाया होगा । क्योंकि हमारा मस्तिष्क निष्क्रिय बठन वाला नहीं है । हमारी यौद्धिक चेतना शान्त नहीं होन वाली और हमारी तार्किक शक्ति अपना काम बन्द करन वाली नहीं है ।

पाठकों का अनुमान होगा कि अभी अरविंद से प्यार करती है ? नहीं फिर ? अभी स्वच्छन्द तितली की तरह समाज रूपी नभ में उड़ाने भरना चाहती है ? जो नहीं फिर ? अभी को एक ही बड़ा दुःख है, वह है कि उसका पति गायीशुदा है । उसके एक बौबो है अभी और एक बच्चा है चाँद सा ।

'अभी के दिमाग में एक कहानी उठती है । उसका पति एक अपराधी की भाँति उसके सामने खड़ा है । कह रहा है 'तुम मुझ से यह प्रश्न न पूछो कि मैं तुम्हें प्रेम करते-करते क्यों रुक जाता हूँ ?'

'अभी अपने पति महेंद्र के बालों को सहैया कर प्यार से उसे धय

देती है, तुम मुझे नहीं कहोगे फिर किसे कहोगे तुम विद्याम रत्नो में  
 तुम्हारी बुरी स बुरा बात सुन कर नाराज नहीं होऊँगी, मेरी जात्या  
 पर तुम्हें संदेह नहीं करना चाहिए ?

‘मे विवाहित हूँ !’

गचा क तन-मन में साँप दसन पर जो जह्न की लहर दीडती है  
 उसी तरह की पीडा का सचरण हो उठता है । तदप कर कहती है  
 ‘क्या कहते हो महेन्द्र ?’

महेन्द्र की आँखों में अथ छलछनाते हैं यह अघी है, उसके एक  
 बच्चा है । वह बच्चा बहुत ही प्यारा है । मैं उस अघी को भूल सकता  
 हूँ पर ?

‘पर अपन खून की नहीं भूल सपत ।’ वह बीच में चिहुँक-सी  
 उठती है । ‘खून की प्रतिक्रिया ही एसी होती है । मनुष्य स्वता सुल्य  
 क्यों न बन जाए सकिन अपन बच्च क साथ पाय करते हुए वह बुबल  
 हो जाता है । तुम भी कमजोर हो गए । यह स्वाभाविक भी है । कभी  
 कभी तुम यह लवण्य सोचत हाग विगय कर जब तुम्हारे मन में विगग  
 और स्नह की भावना जागती है । सब तुम यह साच बिना रह नहीं सरते  
 कि तुम्हारे एक बच्चा है तुम उसे हून्य म अथिक प्यार करते हो । जब  
 यह मुस्वराता था तब तुम पुनक्ति हो उठते थ । जब यह पापा कह कर  
 मचलता था तब तुम अभिमान से फल उठते थ । घोर दन म अनिभूत ही  
 कर मौन गजना करते थ कि इसके अनिरिक्त इस ससार में मेरा कोई  
 नहीं है । गबो की घडो-बडो माल धोखों से अथ दुल्क पडते हैं फिर  
 भी तुम अपनी प्रयन इच्छाओं को रोक नहीं सक और जीवन को साथ  
 नाग की घाग में जसन के लिए द्या दिया । तुम पुरखों की किजनी कुट्ट  
 प्रष्टति हो गई है ?

महेन्द्र अपराधी की भाँति निचल हो जाता है । न हिनता है और  
 न इतता है ।

शची यहूनी जा रही है मेरा विचार है कि तुम न जानबूझ कर अपनी बीवी को अधा किया है ?

नहीं नहीं मैं उनसे अधा नहीं किया। वह बुझ से उबल पड़ता है।

शची ऐसी स्थिति में हृदयहीन की तरह गीत स्वर में बोलती है  
जदर यह जघन्य कृत्य तुम न ही किया होगा। तुम यदि उसी तरह की दूसरी नारी के प्रति इतना बड़ा छल कर सकते हो तो क्या अपनी घासना की सुभक्षा के लिए कोमल नारी को मार नहीं सकते ? जदर यह सुन्हारा ही कृत्य है।'

महेन्द्र तीव्र स्वर में चीन उठता है चुप रहो। उसका बदन कांपन लगता है 'मैं ऐसा काम नहीं कर सकता। उसका उसकी पड़ोसिन स भगड़ा हो गया था पड़ोसिन न किसी तेज सोहे से उसकी झाल पर घाव कर दिया था। खून इतना बहा इतना बहा कि यह अधी हो गई।

'सुभ्र विश्वास नहीं होता।

'उससे खब पूछ लो।

वह है कहां ?

घागरा रहती है राजामञ्जी में विशोर कल्पनासिंह की बटो है।'

शची बिलकुल गीत हो जाती है। महेन्द्र सावधान हो जाता है। गलती कर के पछताता है 'मैंन सुम्हें पता बता कर ठीक नहीं किया। जिस रहस्य को उम्र भर छिपाने की सौगंध लाई थी उसे घाज अचानक उगल बठा।

शची फूरता से मुस्करा पड़ती है पाप में छुप कर दालि होती तो पतन की संज्ञा की जदरत ही न पड़ती।'

\*

\*

\*

गची बाग की ओर जा रही थी। वह इतनी उद्विग्न थी कि उसे किसी का ध्यान नहीं था। हृदय रो रहा था और मस्तिष्क फलप रहा था।

अप्रत्याशित किसी व्यक्ति न ऊँचे मयर में कहा मुटयमत्री जा रहे हैं।

गची न देता अरविंद के साथ कोई जहरधारा सज्जन बठ हैं अगला सौट पर कोई युवती—सुंदर और मनोहर !

भलक सगाय और प्रीय !

गाड़ी आँखों से धोभन हो गई।

शधा सोच रही थी कि यह घबती कौन हो सकता है ? वह इसी प्रश्न के उत्तर में घिन्तित हो उठी। लेकिन जैसे उत्तर उसके समक्ष घुघते से घबला हो रहा था। एक सौतिया डाह से वह जल उठी।

घर आकर उसन गुलाब क माय तुरंत खाना खाया और ऊपर क कमरे में घावर सो गई।

अरविंद न लगभग बारह बज उसक कमरे में प्रवेग किया। गची सो गई थी। अरविंद कुद्य क्षण क लिए उम एषटक देखता रहा और चपके से उसकी अकें स्पग कर उस घूम लिया। वह साच रहा था 'परिस्थिति बलवान से बलवान को भी पराजित कर देता है।

तब वह मदहोश ना हा उठा। वासना क किस उग से विघ्नित होकर उस न गची के बिखरे हुए बालों में घपना मह दिया लिया। गची जाग उठी। बटन कर घोसी 'जानते हो मैं विवाहित हूँ।

घोह ! एक साधवी ।

अरविंद, ! मर्यादा ?'

मर्यादा को स्वच्छंद करन क लिए ही तो ब्याह का नाटक खसा गया था।

जाज तुमन द्वाराय पी रणी है ?

'हररोज पीता हू लेकिन रात को घर आन क बाद कवल अपनी पत्नी के सामन । वस मैं गाय माता की कसम खाकर इस बात का ऐनान किया था कि मैं गराव कभी नहीं पीता । लेकिन यह मन भी कितना उच्छ्वल और परवण है । साधन सुतभ होते ही बिलास और बिनोद क रास्ते दीडन लगता है ।

'तुम बठ नीच हो !

शाची ! यह मत भूलो कि तुम एक मुत्पमत्री से बात कर रही हो । उस मुत्पमत्री स जो सम्मान-सूवर गग्ग मुनते-मुनते स्वाभिमान का पुतला हो चका है । अपनाद लब उसके लिए तमाचे के समान है ।

शाची न देला कि अरविंद की मुत्पमुत्रा अत्यन्त कठोर हो गई । अहिंसा के पुजारी के रोम रोम में हिंसा की सपटें निकल रही हैं । दानवी प्रवर्तियाँ उसके मुख पर उमड़ घुमड़ रही हैं । वह हरसाती हुई बोली तुम इतन दुष्ट हा ?

'तुम्हारी नजर में लेकिन जनता मुझे बेधता मानती है । और एक माह के भीतर स्वामी श्री भजनानंद जो महाराज मेरे देवत्य की सय जगह स्थापना कर देंगे । मैं उन्हें पत्तों से खरीद लिया है । उनका धम त्याग सपस्या और सत्य—सबको मैं पत्तों से खरीद लिया है । ताकि धमभीरू प्रजा को वे मेरे देवत्य के प्रकाश से चकाचींध करके मुझे यग-युग तक जीवित बनाए रखें ।

शाची का अन्तर इतना व्यथ हो उठा कि उसन चाहा कि वह जोर स बिल्ला पड़ और ससार को बता दे कि यह हमारा खरदवाह और सूटेरा डाकू अत्याचारी है । पर उसन अपनी व्यग्रता रो कर मिटा ली । उसक आंतुओं का धपन रुमास स पोद्यता हुआ अरविंद अविचनित स्वर में धासा गया । मैं गराव पीकर यत नहीं बन जाता हूँ । मैं तुम्हारे दब को समझना हूँ । तुम मुझ बहुत चाहती हो न ?

नहीं ।'

प्रीति बोलो ।’

‘मैं तुम्हें चाहती थी पर अब मैं नहीं चाहती । तुमन वास्तव में मेरा जाना हराम कर दिया । महेश्वर शाबीगुदा है । उसके एक बच्चा भी है ।

क्या कहा ?’

वह पति और बाप दोनों है ।’

मैं उसको जान ले मरवा दूंगा ।

यह काम भी कर सकते हो ? वह हठात व्यग से बोली ।

देवता क्या नहीं कर सकता । मारना जितना तो उसी के ही हाथ में है ।’

‘‘लकिन मैं विधवा होना नहीं चाहती । मैं अपनी सौत को लेन जा रही हूँ । मनुष्यता का तमाजा है । भारतीय नारी जब आत्मा में जागती है तब आत्मा सभी छिछली भूठी घातों एवं भावकता को छोड़ देती है ।

‘‘क्या कहती है ?

अरविन्द ! बहुत घड़ी बुनिया देख चुकी हूँ । प्यार के फलन से लेकर समपूर्ण तब रूप देवन के बाद मैं यही तब कर पाई हूँ कि प्राणी एक बार आत्मि युग में पहुँच कर ही चिंताओं एवं दुःखों से मुक्त हो सकता है ।’ वह रो पड़ी, ‘यह जीवन की कितनी पीडाजनक दृजडी है कि मैं पूण वेण्या धनन के बजाए परती बन गई । पत्नी बन जान के बाद भी मैं सुखी नहीं हो सकी । क्यों ? कबल इस लिये कि तुम अपन अयमान का बदला लेना चाहते हो । मैं उस प्रतिगोष की भावना से परिचित होन के उपरांत भी तुम्हारा शिक्कार बनती गई । यह भाँ क्यों हो रहा था गायद दबी प्ररणा से ही ? गवाँ न उसक पाव पकड लिए, एक प्राथना करती हूँ ।

करो ।

क्या तुम यह सवा के लिए नहीं समझ सकते कि मैं तम्हारी कथ नहीं हूँ । मैं अब थक चुकी हूँ हार चुकी हूँ ।’

समझ सरता हूँ गवाँ ! देवता जत्र नारी के रूप पर मोहित

होता है तब सभी सम्बन्धों को भूल जाता है। और मैं भी आजकल अपने नए शिक्षामन्त्री को सुपुत्रा सत्मा पर मानूँ हूँ। क्या मुग्ध हूँ, इसमें भी राजनतिक कारण है। शिक्षामन्त्री सुन्दर मेरा सदा से विरोधी रहा है उसे पुनः पद देकर मैंने अपनी निष्पक्ष नीति का परिचय दिया और उसकी बढी को अपने प्रेम-जाल में फसा कर आत्मा को सदा के लिए परास्त कर दिया। अब मैं तुम्हें आसानी से भूल सकता हूँ। कभी-कभी प्रसंगवश याद जरूर करूँगा। यदि अपनी स्मृति को भी मेरे हृदय में रक्षना नहीं चाहती हो तब एक काम करो। उसकी मुद्रा बिलकुल दृढ़ हो गई।

अरविद न जलती हुई आँखों से शची को देखा। शची निर्जोष सी बठी थी। अरविद निश्चित स्वर में बोला, 'वह काम यह है कि अपनी भाभी और भतीजों को भी अपने साथ रख लो। उनकी परवरिश के लिए मैं दस हजार रुपये तुम्हें देने को तयार हूँ।

शची समझ गई कि अरविद हम सब से बिलकुल किनारा करना चाहता है। उसने भी स्वीकृति दे दी।

अरविद न जात-जात एक चैतावनी और बो 'ये सारी बातें पेट में हضم करके रखना।

अरविद चला गया।

शची का मन अशांत हो गया। यह नेत्र मूँद कर कराह उठी 'यह आदमी कितना बुद्धि है? धर्म और प्रेम की बलिबेदी पर त्याग के बजाय पूँजी सटाना है और देवत्व की प्राप्ति करता है। यह किस गुण्ड से कम है? मैं समझती हूँ कि गुण्डा भी इससे अधिक समवेदनशील होगा। गुण्डा अपराधी है और अपने अपराय को मगा कर समाज और कानून के समक्ष रख देता है। कानून उसे दंड देता है। वह दंड पाकर उन क्षणों में जाता है जिसके दरवाजे पर धड़-धड़ अक्षरों में लिखा होता है कि जल अपराधियों को दंड देने के लिये नहीं बल्कि सुधारन के लिये होता है। पर यहाँ की अर्थव्यवस्था के कारण वह सुधार नहीं पाता पर उसका मन

अपराध से दंड से परिचित हो जाता है। और यह देग का अपराधी महान अपराध करके भी अपने दंड से दयालु है। इस घरती का इन्सान कितना कमजोर और निष्क्रिय है कि उस का बूब पीकर साँप पलता है। गची क चेहरे की कोमलता भयानकता में बदल गई।

\*

\*

\*

४०

'तुम्हारे बच्चा होन वाला है ?  
जी।'

इतना जल्दी ?

में क्या कर !

बड़े सकट की बात है !

संकट ? मैं कहती हू कि तुम्हारी और मेरी गान मिट्टी में मिल जाएगा। जीवन फलंकित और बरबाद हो जाएगा।

यह बचन हो उठा 'चलो अपना एक मित्र है जिसे मैं वी० एम० ओ० बना दिया है, उससे एमॉरगन करा लिया जाए।'

लेकिन बच्चा चार माह का हो गया है। मैं सज्जा क मारे पट्टे यह नहीं सकी। पुवती को आँसू फर पड़।

तुम्हारी सज्जा को आग लग और घब जय ?"

अरविद ! सीमा स बाहर जान का प्रयास न करो। तुम मुख्यमंत्री हो और एक मुख्यमंत्री के लिए एक कलक हा बहुत है। यह कलक तुम्हें पूति पुसरित कर देगा। उसन दड़ता रो कहा। उसको भाँला में गोले रह रहे थ।

अरविद डीला पड़ गया। सत्या का हाथ पकड़ते हुए बोला, जिदगी हम वानों की पराव होगा।

१६१



देखो मैं बस करके अपना अधिकार प्राप्त कर लूंगी। भसा इसी में है कि चुपचाप मुझ इस बला से बचालो।'

'जरा सोचन तो दो।' अरविंद अपना सिर पकड़ कर बठ गया। उसके सामन अघकार ही अघकार छा गया। उस अघकार में उसकी वासना विपाक कोड़ मकौड़ों की भांति जिलबिलाती दीर पड़ी। यह सोचन लगा इसमें विद्रोह की लपटें हैं यह मेरी प्रत्येक नीति की असफल कर देगी और यदि इसका वाप सुन्दर का पता चल गया तो यह जमीन-आसमास एक कर देगा। मुख्यमंत्री से अपराधी ब्रना देगा। तब ? तब मुझे इसका प्रबन्ध करना ही पड़ेगा। मैं इतना प्रधीर क्यों हो रहा हूँ ? मय जिसका मय ? मैं छपन दोन्त को बहकर इसका बचवा निरुत्तवा दूंगा। यह घोड़ी देर कठोर मुद्रा में रहा और फिर विचारन लगा नहीं बच्चे को जावित रख कर इसका सब्रा क लिए अपना बना लेना चाहिए। बच्चा, विजय घिरन्तन। वह मस्करा पडा।

'तम मस्करा रहे हो ?

हूँ सत्या मैं दुष में सदा मस्करान की चेष्टा करता हूँ। ताषन की दहकती प्राग में लपट बन कर उठना ही मेरा काम है।

'तब ? सत्या न अरविंद का गोद में अपना सिर रख दिया।

'किसी चित्र में एसी ही परिस्थिति की एक नारी बेली थी। एक गुड न उस से बलात्कार किया और वह नारी गभवता हो गई। उसके भाई न उसे पहाड़ी स्टगन पर भज दिया। बच्चा हो गया। पर उसके सेलक पडित मुखराम शर्मा न अन्त में उस नारी द्वारा घातमहत्या कराके नारी की भावना को दुबल कर दिया। और मैं उस नारी को जीन का अधिकार देना चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ कि नारी नर के पापों को लेकर पलायन न करे बल्कि यह उस दृढ दे ताकि नर प्राच्यन रूप से नारी के जीवन से खलना बंद कर दे।

'पर मैं बच्चा नहीं चाहती।

‘तब मैं तुम्हें एक छुरा ला देता हूँ। जब यह बच्चा पदा हो जाय तब उसको कत्ल करके किसी गंदे भाले में या तालाब में फेंक आना।’

‘यह मुझ से नहीं हा सकता।’ वह काँप उठी। उसने अपन दोनों हाथ इस तरह हिलाए कि आतक और भय से उसका रोम रोम दहल उठा हो।

तब बच्चे का पदा होन दो’ उसन नाटकीय ढंग से कहा।

पर यह कितना मुश्किल है। पग-पग पर घटनाम हो जान का भय है ?”

लेकिन मैं अपन बच्चे का नाम नहीं देख सकता। मैं पाप किया है तुम न पाप किया है इस पेट के बच्चे ने तो नहीं ? भला फिर इने क्यों सजा मिने ? सत्या ! मैं हरे मुश्किल को आसान करने की दवा जानता हूँ। तुम एक काम करो। अभी से खासना गुरु कर दो। डाक्टर से मैं तुम्हारे फफड़े खराब हो जाने की बात सुन्दर जी को कहलवा दूँगा। स्याल रहे कि तुम्हें डाक्टर को यह नहीं कहना है कि तुम भी बनने वाली हो। चाणक्य न कहा कि भस्तिष्क की बात जिह्वा को भी न मालूम हो। सिर्फ उसे इस बात का बताना कर के बनाना है कि तुम्हें विदेश जाना है।

विदेश ! उस पर बचपात हो गया।

‘गौर कहाँ ? शिमला मसूरी, दार्जिलिंग ननीनाल तो तुम्हारे पिताजी हर समय उड़ कर आ सकते हैं।

लेकिन इतना रुपया ?’

हाँ यह समस्या है।’ उसन अपन अघरों के बीच अपना तजनी रख कर सोचा बल सठ जीवन्तल पचास हजार रुपए देगा। उम बड सस्ते में एक ठका दिसा दिया है। वह प्रकृत हो घोला “रुपयों का बन्दो बस्त में कर दूँगा।’

सत्या न अथ भर कर कहा ‘तुम ने सदा के लिए मुझ अपना पात्र

ईश्वर से सदा प्रायना करेगा कि यह आदमी को इतना शक्तिशाली कभी न बनाए कि वह मृत्यु को जीत ले ।

अरविन्द भाई के बंद को मामिरता का समझ रहा था । अपने आँसुओं को पीता हुआ वह सोचने लगा, आदमी यहाँ आते-रिक्तता दुबल हो जाता है । उसको समस्त गतियाँ पग हो जाती हैं ।”

अरविन्द !’ थूक को निगलता हुआ बोला सोना निम्नू और रत्नश का सम्बल तुम हा । मैं चाहता हूँ कि तुम उन्हें अपनी तरह का देवता मत बनाना । अरविन्द न एकति का सकेत दिया । सब चले गए ।

। अरविन्द की गदन नाम से भ्रूज गई ।

‘भाज तुम्हारी निपुणता की वजह से सारा प्रांत तुम्हें देवता की तरह पूजता है । घर-घर में तुम्हारे चित्र टंग हैं । तुम्हारी याचिका-उदा-रता तुम्हारे मन के और तन के सभी कुकर्मों को छिपाए हुए है । लेकिन एक दिन घटाओं से आ-दग्न यह आकाश स्व-द्व होगा । नीला-नीला आसमान होगा चाँद निकलेगा और उस चाँद के शीतल और उज्ज्वल प्रकाश में तुम्हारे पाप प्रच्छन्न नहीं रह सकते ? तब तुम पश्चात्ताप की आग में सुनग कर अपना विनाश करोगे । यह प्रभता का महत्व तुम्हें उ-माद-सा लगगा । यह विनाश तुम्हें सताप से अधिक पीडामय लगगा ।’

अरविन्द प्रस्तर प्रतिमा की तरह मौन रहा ।

वह तक द्वारा अपने चाँद को कष्ट पहचाना नहीं चाहता था भ्रत वह चुप रहा । चाँद की सत्य बातें एव तार से चुभते हुए गब्द उसकी गति को विचलित नहीं कर सक । अन्त में चाँद ने इतना ही कहा, ‘ यदि अपने शम्सी देवत्व को चिर रहना चाहते हो तो समय की गति का पहचानन की गति ताद करो ।

रात भर अरविन्द निम्नू और रत्नश को छाती से विपणाय पड़ा रहा । लगभग रात के दो बजे दद बढ़ा । चाँद ने डूब हुए स्वर में पुकारा ‘सोना !

तब मैं तुम्हें एक छूरा सा देता हूँ। जब वह बच्चा पदा हो जाय तब उसको करल करक किसी गबे नाले में या तालाब में फेंक आना।

'यह मुझ से नहीं हो सकती। वह कांप उठी। उसने अपन दोनो हाथ इस तरह हिलाए कि आतक और भय मे उसका रोम रोम बहल उठा हो।

तब बच्चे को पदा होन दो उसने नाटकीय ढंग से कहा।

पर यह कितना मुश्किल है। पग-पग पर बदनाम हो जान का भय है ?'

लेकिन मैं अपन बच्चे का नाम नहीं बेच सकता। मैं पाप किया है, तुम न पाप किया है इस पेट के बच्चे न तो नहीं ? भला फिर इस क्या सच्चा मिले ? सत्या ! मैं हर मुश्किल को आसान करने की दवा जानता हूँ। तुम एक काम करो। अभी से खासना शुरू कर दो। डाक्टर ने मैं तुम्हारे फफूट सराब हा जान की बात सुदर जी को कहलवा दूंगा। स्यास रहे कि तुम्हें डाक्टर को यह नहीं कहना है कि तुम माँ बनने वाली हो। चाणक्य ने कहा कि मस्तिष्क की बात जिह्वा को भी न मालूम हो। सिर्फ उसे इस बात का बहाना कर के बताना है कि तुम्हें विदेग जाना है।'

विदेग !' उस पर घट्टपात हो गया।

'धीरे कहाँ ? शिमला मसुरी राजलिंग नमोनाम तो तुम्हारे पिताजी हर समय उड़ कर आ सकते हैं।

'लेकिन इतना खपया ?

हाँ यह समस्या है। उसने अपन अधरों के बीच अपनी तजनी रख कर सोचा, बल सठ जीवनलाल पचाम हजार रुपए देगा। उस बड़े सस्ते में एक ठका दिला दिया है। वह प्रकट हो घोला "खपयों का बंदो बस्त में कर दूंगा।

सत्या ने धम्र भर कर कहा 'तुम न सदा के लिए मुझ अपना पातलू

पशु घना लिया । मैं कितनी भोली थी कि तुम्हारी प्यारी बातों में और प्रलोभन में आ गई ।

अरविंद हँस कर बोला 'भाग्य का लिखा अमिट है । यदि यह अमिट नहीं होता तो साता को बनवास में पुत्र जमाने नहीं जाना पड़ता ।

\*

\*

\*

४१

भाग्य का लिखा अमिट है । प्रत्येक भ्रांस्तिक इस निर्विवाद धड़ा पुरुष स्वीकार करता है । सत्या गुलाब, आनन्द गची, सोना और भी कितने ही पर अरविंद सिर्फ दूसरों के लिए ही ऐसे वाक्यों का प्रयोग किया करता था । भगवान और परमर में क्या अन्तर है इसे वह एक अष्ट अज्ञानिक की भाँत सम तरह से विलेपण कर के जान घका था । यह जानता था कि आत्मा और परमात्मा इहलोक और परलोक को कबल दक्षीसला मात्र समझन वाला व्यक्ति धार्मिक भी श्रद्धि की पदवी से विभूषित किया गया है । यह व्यवधानपूर्ण मूल्यांकन क्या सत्य की कसौटी नहीं ?

अरविंद इन्हीं विचारों में तमय हो कर गन गन मुस्करा देता था और तब उसे प्रत्येक सिद्धांत और धर्म उन्नति और अवनति के साधन मान्य लगते थे । तब वह मन ही मन यह भी कह उठता था कि आज के बाद धर्म का परिष्कृत रूप नहीं ?

अरविंद घतुर था । आत्मकत राजनीति की सरगमों गाँत थी । गची से सम्बन्ध सदा के लिए खत्म हो गया । गुलाब अपने में नए गीत का पोषण कर रही थी । सत्या दूर बहुत दूर स्विटजरलैंड की मनोरम हरियायतियों में झूने झूत रही थी ।

"सत्या ! अरविंद का मानस अनिबधनीय सुप्रानुभूति से पुलकित

हो उठा। राजनीति के दलदल में फसे उसके जीवन का कमल सत्या थी, जिसकी सौरभ उसके मन और तन की अतृप्ति को परितोष के आवृत में परिवेष्टित कर उसको चिरन्तन गमन दे रही थी।

‘अरविद घाबू !’

‘क्या है ?’

‘तार।’

जिसन ने बड़े अवय से तार को अरविद के सामने किया। अरविद ने तार खोल कर पढ़ा। चेहरा स्याह हो गया। आँखों में सजसता दीप्त हो उठी। भया भीमार हैं। यह वाक्य उसके मन के एक-एक तार में गूँज गया। उसने अपने मक़ेटरी को फोन किया और हवाई अड्डान का प्रवण्य करन के लिए कहा।

दोपहर के लगभग दो बजे से और तीन बजे तक अरविद भया के पास पहुँच गया। भया की हाजत वास्तव में चिंताजनक थी। छानी में पीड़ा थी। वह तड़प रहा था। घड़े-घड़े डाक्टर उपस्थित थे। उपचार चालू था। अन्त में एक घट के बाद चाँद में बोलन की शक्ति धाई। उसने अपनी गीली पलके उठा कर धारे धीरे कहा, बटा! जीवन का आविरी दाँव कभी यकाम सिद्ध नहीं होता। आदमी यहीं आकर एक जाता है। एक दिन मैंने तुम्हें अपने सोन से विपका कर माँ को गानि से मरन दिया था और आज... चाँद की आँखों में मोतियों से अमूल्य धाँसू ढलक पड़। अरविद का गना भर आया।

भया आप घबराइय नहीं। मैं आपको, मरन नहीं बगा। देखो, बिल्लन घट-घट डाक्टर लड़ है।

पगल! मनुष्य मृत्यु पर विजय पा सता तो प्रभु और प्रकृति दोनों को मूल जाता। धरती पर अराजकता और अनिश्चिता का बाजार सग जाता। खून-खून को काटता और भाँस भाँस की हत्या करता। मे

हृदय से सदा प्रार्थना करेगा कि वह आदमी की जितना गतिगामी बर्णन  
न बनाए कि वह मृत्यु को जीत ले ।

अरविन्द चाँद के दृष्ट की भाविता का समझ रहा था । अपने  
असुखों को पीता हुआ वह सोचने लगा 'आत्मी यहाँ आते कितना  
दुबल हो जाता है । उसको समस्त गतिगामी बर्णन हो जाती हैं ।

अरविन्द । एक को निगलता हुआ बोला 'सारा निम्न और  
रत्न का सम्बन्ध तुम हो । मैं चाहता हूँ कि तुम उन्हें अपनी तरह का  
देवता बन बनाना । अरविन्द न एकैत का सक्त किया । सब धले गए ।

। अरविन्द का गदन क्षम से भङ्ग गई ।

प्रायः तुम्हारी निपुणता की वजह से सारा प्रांत तुम्हें देवता की  
तरह पूजता है पर धर में तुम्हारे चित्र दृश्य हैं । तुम्हारी वाक्पि-उत्प  
रता तुम्हारे मन के धीरे तन के सभी कुकर्मों को छिपाए हुए है । लेकिन  
एक दिन घटाओं से आवृत्तन यह आकाश स्वच्छ होगा । नीला-नीला  
आसमान होगा चाँद निकलेगा और उस चाँद के पीतल और उज्ज्वल  
प्रकाश में तुम्हारे पाप प्रच्छन्न नहीं रह सकते ? सब तुम पञ्चाताप की  
दाग में सुलग कर अपना विनाश करोगे । यह प्रभता का महत्त्व तुम्हें  
जम्माद-सा लगता । यह विलाप तुम्हें सताप से अधिक पीड़ाभव लगता ।'

अरविन्द प्रस्तर प्रतिभा की तरह मौन रहा ।

यह तक द्वारा अपने चाँद को कष्ट पहुँचाना नहीं चाहता था अतः  
वह चुप रहा । चाँद की सत्य बातें एक तीर से सुभते हुए गन्द उसकी  
गति को विचलित नहीं कर सक । अन्त में चाँद ने इनना ही कहा,  
यदि अपने शक्तिमी देवत्व को चिर रखना चाहते हो तो समय की गति  
को पहचानने की गति लीज करो ।

रात भर अरविन्द निम्न और रत्न को छानो से चिपकाय पड़ा  
रहा । लगभग रात के दो बजे दृष्ट बना । चाँद ने झूठ हुए स्वर में  
पुकारा 'सोना !'

सोना न अपने रोगन पर होंठों को बधात हुए काबू पाया । बड़ी कठिनता से बोली, जी ।”

‘तुम यहीं हो, मैं तुम्हें बहुत कष्ट दिय है, मुझ क्षमा करना ।

सोना ने सिसकते हुए चाँद के पाँव पकड़ लिए ।

गुलाब !’

गुलाब न उनका हाथ अपन हाथ में ले लिया ।

‘बेटा ! मेरे घाप व प्रभाव में सोना बेचारे जरबिद को बड़ तानें सुनाया करती थी लेकिन तुम मेरे अभाव में मेरे बच्चों को ।

‘भया ! वह इस तरह चीखी जैसे उसका कलेजा फट पड़ा हो ।

‘सध करता हू गुलाब ! मृत्यु क विकराल पजों में आने पर भी मैं उन तानों को नहीं भूल पाया हू । आदमी किना विचित्र है ?

मैं इन्हें अपन हृदय से कम नहीं समझूगी भया !

और चाँद न याचना भरी बुद्धि सब पर डाली । क्षमा गील और स्नह भरी उन आँखों में अभागि जिंदगी की अंतिम कदम थी । उस कदम में निश्चलता थी, पवित्रता थी ओज था ।

अरबिद ! एक अस्फट स्वर क साथ चाँद सदा क लिए टूट गया, मर गया ।

एक हृदयवेपक हाहाकार गूँज गया । कदम क विभिन्न स्वर पत्थर को पानी की तरह पिघला रहे थे । अरबिद की आँखों में अश्रु जकड़ घ पर उसका रोदन भौन था । बड़-बड़ अधिकारी सठ, सजन उनको घम बधा रहे थे ।

भयों निकली ।

अरबिद न अर्थों के जलूम में कोई शोर-शरर नहीं रखी । हजारों की सख्या में जमे लोग भूल से गय थे कि यह अर्थों मुख्यमन्त्री के भाई की है या देग और समाज क महान नेता की । अरबिद न अपनी अंतिम चेष्टा की कि लोग उसने भाई को देगमक्त बहें अत जब चिता में आग लगाई जाने वाली थी सब वह अति त्रिनम्र होना हुआ बोला आग में



जनता के समक्ष एक रहस्य का उद्घाटन कर रहा हूँ कि इस गहर की उन्नति में और गाँवों का उन्नति में सबसे बड़ा हाथ चाँद भया का ही था। उन्होंने हथारों का घदा गप्त रूप से एकत्रित किया था। वे मौन साधक और सबसे बेगभक्त थे। प्रचार और प्रसार से सदा दूर रहत थे। यही बबह है कि जत्र अपन शहर में मडिकल-कालेज न खोलन का निचय सरकार न कर लिया या तब वे ही दिल्ली की बीड़ घूप करत रहे और अत में उहोन कालेज खोलन की स्वीकृति लेकर ही छोडी। यह था उनका मातभूमि प्रम। मैं चाहता हूँ इस बेग क मौन साधक और प्रगतिगीत मानव की स्मृति में एक स्मारक प्रजा की आर स बनवाया जाए। अत में उसन जोगीले शब्दों में कहा मैं आप स अपील करता हूँ कि आप उस मौन साधक क प्रति कृतव्य पूरा करें।

इधर चिंता की शल टण्डी नहीं होन पाई थी और उधर अरबिद के गिण्ड सेठ साहूराओं से स्मारक निधि का घदा भरवा रहे थ। घद ही कारणों में चाँद बेगभक्त बन गया। महा अरबिद की सुतीरुण मुडि की विलक्षणता थी।

\*

\*

\*

४२

स्मारक बन कर तयार हा गया।

उम दिन दो तीन मन्त्रोगण और कन्द्रीय सरकार के घद सधि जारी भी उपस्थित थ। अनावरण केन्द्रीय सरकार क गिहामश्री से कराया गया। अनावरण करके उहोन एव बेगभक्त के प्रति जो सुहानु भूति भरे गब्द प्रकट करन आवश्यक थ उहोन किए। वे छोसे 'मन्त्रुप्य को अपन बेग और समाज के लिए सबसब अपना कर दना चाहिए। स्वर्गोय चाँद न मौन साधक की भाँति राष्ट्र की जो सवा की है यह सराहनीय है।' -

अरविंद न इतना ही कहा 'भया ! अहिंसा गांति और प्रेम के अवतार थे । महात्मा गांधी से एक घाट से सेवाग्राम में मिले थे । तब थापू न उनकी मौन रचनात्मक साधना की सराहना की थी ।

बदायित चाँद न महात्मा गांधी की प्रत्यक्ष देखा भी न हो तो कोई बड़ी बात नहीं । न अब महात्मा रहे और न चाँद । दोनों अभी स्वर्ग में शांति का सदेव मुनाने में सलग्न होंगे । इस समय अरविंद न अपन मन ही मन में कहा चाँद ! मैं तुम्हारी बात की अक्षर-पावन करना चाहता हूँ पर तुम्हें क्या पता कि यहाँ कि समस्त मंगीनरी खराब है । आवना ईमानदार बन कर रह ही नहीं सकता । कभी कोणिस भी करें कि ईमानदार बन जाण, तो सभी साथी चौंक पड़ते हैं । बनने ही नहीं देते और यह क्षण भर के लिए ब्रवित ही उठा ।

इसके बाद के एक बरसा ने बमाल ही कर दिया । वह भा सरकार का उच्च अधिकारी था । उसका भाषण सुन कर अग्रजी और हिंदी दोनों भाषाओं को आत्माएँ कराह उठी होंगी । न भाषा पर अधिकार और न भाषों पर । बस धोलता ही जा रहा था । श्रोतागण ऊब उठ थे और अंत में अरविंद को उसे रोचना ही पड़ा ।

स्मारक का प्रनावरण हो गया । चाँद सदा के लिए देगभक्त बन गया । प्रश्न उठता है कि क्या यह देगभक्त-निर्माण योजना सदा चलती रहेगी ? प्रजा इसका विन्लेपण करे ?

\*

\*

\*

४३

गिळामन्त्री थी सुन्दर जी अरविंद के भ्रष्टाचार से बहुत अन्धा तरह परिचित थे लेकिन वे किसी प्रमाण के अभाव में गात बठ हुए थे । सत्या की विदेग भजन के रहस्य को लेकर वे चिन्तित हो उठे थे । रह रह उनका मस्तिष्क में जलता हुआ प्रश्न उठता था कि जरूर सत्या की विदेग भजन में अरविंद का हाथ है ।

इसी समय एक घटना और घटित हुई। इस घटना को लेकर सुन्दर और अरविंद के घान्तरिक सघष न छुता उग्र रूप धारण कर लिया। अरविंद गिखा विभाग का दपतर अपन गहर ले जाना चाहता था और सुन्दर जो अपन गहर में। यह परम्परा प्रारम्भ स घली आ रही थी। जब कभी कोइ नया मन्त्री बनता वह पूरणरूप से कोगिंग करता कि वह अपने जिले को समद्ध एव सम्पन्न करे ताकि नय निर्वाचन में वह पुन विजयी हो कर विधान सभा में आए।

अरविंद का विरोध सुन्दर जो न एक साप्ताहिक में किया। उन्होंने कहा 'हालाकि गिखा विभाग का मौजूदा दपतर इसलिए अम्यवस्थित है कि वहां पर्याप्त स्थान उपलब्ध नहीं हैं। मुख्यमन्त्री जी के मगर में भवन निर्माण करना पड़गा जिससे राज्य का ध्यय ही लालों रुपया लग जाएगा। और हमारे यही भू० पू० नरेशों के विगास भवन प्राप्त पड है। मैं प्रजा से अपील करूंगा कि वे एक जुट हो कर आवाज बुलन्द करे कि गिखा विभाग हमारे यहाँ हो। इस पर यदि हमारी योजना को न सुना जाए तो सरय अहिंसा क सहारे मादोलन प्रारम्भ करें।

अरविंद यह समाचार पढ़ कर सन्न रह गया। यह दृष्ट हो कर बड़बड़ाया यह सुन्दर साँप का बषचा है। दब चुका है न घोट कभी न कभी जरूर करेगा।

उसन फोन उठाया।

सुन्दर जो उतने बगले पधारे। नमस्कार होन के पश्चात अरविंद न अधिकार पूरण स्वर में कहा 'सुन्दर जी! इस विरोध का नतीजा अद्दा नहीं निकलेगा।'

यह मैं जानता हूँ। पर मुझ यह मानूम नहीं था कि आप मुझ यह पद बेकर मेरे विचारों को खरीदना चाहते हैं। विचार खरीदे नहीं जाते। मैं इस प्रश्न को खर सन्न विरोध करूंगा आपन अधिक विवग किया तो पदत्याग भी कर दूंगा।

अरविंद के होंठों पर भदभरी मुस्कान नाच उठी। वह पनी नजर

से घूरता हुआ बोला सुन्दर जी ! आप आपनी बटी को कितना प्यार करते हैं ?'

सुन्दर जी चौंक पड़। उनके कान खड़ हो गये। हठात् बोले, इस प्रश्न से आप का क्या मतलब है ?

मतलब ! बहुत अधिक है।'

'प्यार करता हूँ। उसके सुख और सतोष के लिए मैं चासमान का नारे भी ला सकता हूँ।'

अरविन्द बठोर स्वर में बोला मेरा बिचार है कि आप इस आदो लन से किनारा कर लीजिये।

"क्यों ?

'मेरी आजा है।'

आप की आजा प्रभु की वाणी नहीं, सुन्दर जी आवेग में बोले।

'हे पड़िए।' उसन एक चिट्ठी को मोड़ कर उन्हें उसकी खब पत्थिया पढ़ा दी। लिखा था पेट का बच्चा बढ़ रहा है। आजकल मेरी सहत अच्छी नहीं रहती। जो भी खाती हू उल्टी क द्वारा निकल जाता है। यदि तुम दोस्त से मेरा उपचार नहीं करते और यहाँ नहीं भेजते तो मैं ग्लानि की पीडा से मर जाती।

'यह क्या है ? सुन्दर जी घील पड़।

"गांत रहिए, बीमारों के भी कान होते हैं।

'मुझ छत पूरा पढ़वा दीजिए।

'नहीं आपका बटी की सास हिवायत है। उसन मझ बहा था कि यह पाप है। यदि इस पाप का पिताजी क समझ प्रकटीकरण हो जाएगा तब मैं आत्महत्या कर लूंगी। इसलिए आप से मेरी प्रार्थना है कि आप बिनाबुल सामोण हो जाइए। आपन जरा भा इस बात को इधर-उधर करने का प्रयास किया तो आपको अपनी बटी से हाथ धोना पड़गा।

"मुझ तुमन पराजित कर ।

‘तुमन नहीं, आपने, मैं मुख्य मंत्री हूँ।’

‘हाँ आपन मुझ पराजित कर दिया।

‘अब मैं यह मान कर चलूँ कि आप इस आन्दोलन को लेकर सामोरा रहेंगे।’

रहना पड़ेगा।

अब आप जा सकते हैं।

सुन्दर जो गठिया पीड़ित रोगी की तरह कदमों को रगड़ते हुए बगले से बाहर निकले।

उनके बाहर जाने ही अरविन्द ने चाय का प्याला मगवाया। चाय पीकर वह सत्या का पत्र पढ़ने लगा—

‘अरविन्द !

पत्र तुम्हारा प्राप्त हुआ। पढ़ कर प्रसन्नता हुई। राय कुछ भी। कुछ इसलिए कि तुम हर बार यह क्यों लिखते हो कि तुम्हारा बच्चा तुम्हारे पेट में पल रहा है। क्या वह तुम्हारा बच्चा नहीं ?

उमन सत पढ़ना बन्द कर दिया। सोचन लगा तो आप मुझ से लिखवा कर प्रमाण चाहती हैं। इतना सीधा होता तब बन गया मंत्री !

वह आग बड़न लगा तुम्हारे पत्र से मालूम पड़ रहा है कि तुम दिन प्रतिदिन मेरे प्रति उबासीन होते जा रहे हो। कह नहीं सकती कि तुम अब मुझ एकदम भूल जाओ। पिपासा और प्रवीणता इन दोनों बातों को तुममें प्रचरता है। अतः तुम जल्दी से पराजित नहीं हो सकते, लेकिन मैं तुमसे प्रार्थना करती हूँ कि तुम अपनी छल-नीति से मेरे जीवन को धरबाद न कर देना। यह बच्चा जो मेरे पेट में पल रहा है, तुम्हारा ही है। उबारता स मैं तुम्हारा पीवण कर रहा हूँ फिर यह गप्प क्यों और किस लिए ?

यदि इस धार स प्रकार का पत्र आया तब मैं अपने जीवन को तुमसे सारा ब लिए अलग समझ लूँगी।

अरविन्द हसन लगा। हसते-हँसते उसने उस पत्र को जला कर साक

कर दिया। उसकी राख को हथेली में लेकर घीरे घारे पूँक से उड़ान लगा 'इस तरह इस राख का अस्तित्व भी समाप्त हो जाता है।' वह वाग्निक की भाँति बोला।

एक माह गुजर गया।

बल सुन्दर जी के पास भ्रवानक तार आया। तार में सत्या ने लिखा था, यहाँ मैं एक अप्रज से सिविल मरिज कर लिया है। मैं शीघ्र ही हिन्दुस्तान आऊँगी।

सुन्दर जी तार पढ़ कर एक बार क्रोध से उबन पड़े। उन्हें ऐसा महसूस हुआ कि जैसे उनके तमाम शरीर की नसें फट जाएँगी। वे भल्ला पड़ 'इन भाज की छोपरियों को हो क्या गया है?' लेकिन फिर वे चुप हो गए। वह माँ बनन वाली थी माँ। भ्रच्छा ही किया उसने कि अपन को किसी का पालतू बना लिया। भ्रज में मुख्यमंत्री को देख लूँगा। सघष होगा, बदनामी नहीं।

अरविंद विल्ली गया हुआ था।

भ्रानामी चुनाव आ रहे थे। काँग्रेस के टिपट के लिए सभी क्रियाशील थे। क्या सेठ साहूकार और क्या राज महाराज? उनका दबाव के समक्ष सच्चे कार्यकर्ता भ्रूज रहे थे। उनकी गरीबी का अनुचित लाभ उठा कर पूँजीपति उन्हें भाँति भाँति के प्रलोभन दे रहे थे। अरविंद इन्हीं सभी मसलों पर घातचीत करने के लिए विल्ली गया हुआ था। जैसे भी वहाँ सत्या का बसा ह तार मिला। वह तार पढ़ कर हक्का-ज्वरा रह गया। तार के दूसरे दिन जैसे सत्या का एक पत्र भी मिला जो जयपुर से रि-इन्डरेक्ट हो कर आया था। उसने पत्र खोल कर पढ़ना प्रारम्भ किया। कोई विषय घात उसने अरविंद के बारे में नहीं लिखी थी। जो कुछ महत्वपूर्ण था वह इस प्रकार का था 'तुमने समझा हाँगा कि तुम इतने प्रवीण सिलाड़ी हो कि हमें सत्ता सत्ता सबकी मात दोग, सो घात नहीं है। जिन्दगी की शतरंज पर जय विचारों के प्यादे चलते हैं

सब क्या पाया हीन चाल चूक जाए और मात खाए जा। तमन मुझे पालतू बनाना चाहता मेरे पिता के सबके एव सधयमय जीवन को सबके लिए सामोना करना चाहता क्योंकि तमन उनकी आत्मा अर्थात् बटी पर विजय प्राप्त कर ली थी। जानते ही अराजक विचारों की महान् पराजय सदीपन की सूझ थी। श्री कृष्ण के गुरु सदीपन ने नतिक अराजकता के फलते सिद्धान्त—ताओ पीआ मौज करा—की अमानवीय पद्धति को रोखन के लिए उन्होंने अपना शिष्य श्री कृष्ण को कहा कि आत्माओं पर विजय प्राप्त करो। और यही वजह है कि श्री कृष्ण ने हजारों गावियाँ करके समस्त राजाओं एव जगली जातियों के नेताओं के मस्तक नत कर दिये। यदि नतिक अराजकता के सिद्धान्त के मानने वाले दूसरे के धन को छीन कर विलास के सागर में नहीं डूबते तो मेरी समझ में कम इतनी अराजकता नहीं फलाना।

‘यही बात तुम ने मेरे पिताजी के प्रति की। सब, उन्होंने जो मुझे खत भजा है उसको पढ़ते तो तुम्हारी आत्मा कराह उठती कभी कभी आदमी इतना दीन हो जाता है कि सिवाय हम उस पर बर्मा के और कुछ कर ही नहीं सकते। उन्होंने मुझे साबना दी कि मैं तुम्हें इतना प्यार करता हूँ कि तुम्हारे सुख के लिए मैं राज-राज सब छोड़ सकता हूँ। उनकी यह महान् त्याग की प्रवृत्ति उनके कोमलतम हृदय की सूचक है और बटी के प्रति असाम स्नह की द्योतक। पर इन शब्दों में उनका आंतरिक अर्थ नहीं भ्रमकता। मैं जानती हूँ कि इन शब्दों को लिखते समय उनका काय उनका धरा और उनकी अतप्त इच्छाएँ उन्हें खाए जा रही होंगी। उनके हृदय में व्यथा का तूफान घुमड़ रहा होगा और उनकी धनी-धनी पलकों के पुलोन मोतियों जैसे अधुओं से भोग गए होंगे। वे बहुत भावुक हैं। वे मेरे सुख के लिए अपना चरम पतन भी देख सकते हैं। लेकिन भाग्य के खत भी रितन विचित्र हैं? उन्होंने अपना चरम पतन नहीं, मेरा चरम पतन देख लिया। फिर भी उनकी उदारता देखो। लिखते हैं, सत्या! इस पतन में ही तुम्हारी सुख निधि

निहित है तो मैं तुम्हें रोकता नहीं। मैं चाहता हूँ यदि तुम्हें चिरन्तन सुख सबस्व विसर्जन के उपरांत मिले तब भी मैं प्रसन्न होऊँगा क्योंकि हर धाप अपनी सन्तान की सुख-समृद्धि के लिए सतन प्रयत्न करता है। और मैं वसा धाप हूँ जो अपनी सन्तान की सुख-समृद्धि के लिए अपना सम्मान और इज्जत तक बेना चाहता है। सत्या ! मैं तुम्हें हार्दिक प्यार करता हूँ, चाहता हूँ तुम प्रसन्न रहो लेकिन अब मैं देख रहा हूँ—एक विना धाप के बट को ले कर तुम कभी भी गतिमय जीवन धापन नहीं कर सकोगे। प्रनाइना और दुस्कारों तुम्हें कभी भी घन नहीं देन देंगे। समाज और सुगिक्षित व्यक्तियों के मस्तिष्क की बट्टु भ्रातियाँ व बोलियाँ अपनी प्रगतिशील विचारधारा का खोसला आवरण उतार कर जानवर की भाँति नगी नजर आएँगी। हाँ एक वान तो है कि नगा जानवर विधि के निर्माण कौशल के कारण आँखों को प्रिय तो लगता है। पर प्रियता पीड़ामय हाता है और समाज की बट्टुचितया इतनी पनी होती हैं जितनी बसाई की बटार, जो निरीह बफरे पर चल पड़ता है। तब तुम्हारा जीवन दुसाध्य हो जाएगा। तुम अपने ही आत्मदाह में दग्ध होन लगोगे। इसलिये बटा, तुम से प्रायना करता हूँ कि कलकित जीवन ले कर तुम दयताओं के देन में जीवित नहीं रह सकती।

अरविद ! क्या इन शब्दों में एक स्नहातर पिता का हृदय प्रति बिम्बित नहीं हो रहा है ! जहर हो रहा है और तुम्हें भी यहा महसूस होता होगा। मैं अपने पिता के लिए या तुम्हारे धन से बचन के लिए सत्ता के लिए एक भले और साथ स्वभाव वाले व्यक्ति से विवाह कर लिया है। मुझ भरोसा है कि वह व्यक्ति तुम्हारे धून को भी उतना ही प्यार करेगा जितना अपने धून को। इस विवाह से एक और प्रतिक्रिया होगी कि तुम में जो विलासपूर्ण उदासता घा रही है उसका भी खोप हो जाएगा। अब मेरा धाप सत्य के लिए सधय करेगा, सङ्गा और तुम्हारे दग्ध में जो दानवता है उमका पर्दाफाग करेगा।

मेरे धप्रज पनि न तुम्हारे समाम विप्र एव कनेण्डर फाड डाले हैं।



वह इसलिए नहीं कि 'इलियट तुम से घृणा करता है, बल्कि इसलिए कि उसका कहना है कि जो इंसान अपन बच्चे और अपनी पत्नी को अपनी नहीं कहता वह जानवर होता है। जानवर भी अपने नए बच्चा का बड़ा प्यार करते हैं बाद में भले ही भूल जाएँ, लेकिन तुम्हारा यह अरविंद कसा आदमी है? भारतमाता और भगवान् श्री कृष्ण के साथ तुम्हारा जो चित्र था उसको फाड़ने हुए वह जोर का अट्टहास कर उठा था। अट्टहास कर घुसने के बाद उसने धीरे से कहा—गॉड आफ कलियुग।

अब मैं पूरा सुखी हू। इलियट साधारण अप्रज है। वह हिन्दुस्तान रहना चाहता है। कहता है वह दानिश्नों की भूमि है। वहाँ सच्ची इंसानियत अभी भी जिंदा है। वहाँ आदमी का प्यार अब भी निर्दोष है। सब वह बहुत ही प्यारा इंसान है। भूटन को महाप्रसाद समझ कर ग्रहण करता है।

पत्र समाप्त करता हू। यह मेरा अंतिम पत्र है। युगदेवता से अंतिम प्रार्थना है कि वह भविष्य में किसी नारी के अरमानों से न लसे। लेतेगा तो मैं एक ही चित्र से उसका जिंदगी सवाह कर दूंगी।

—सत्या

अरविंद पत्र पढ़ने के बाद चिंतित हो उठा। उसे लगा जैसे वह सड़कते हुए पर्यटन की भाँति दक-दक कर सड़क रहा है। प्रात का मुख्यमत्री धीरे धीरे गिरता हुआ पतन के गहन गह्वर तक पहुँच जाता है। वहाँ उसकी आत्मा को घूमने वाली आकांक्षाएँ चिघाडती हैं। बुभुक्षित वास नाए उसको इतनी मार्मिक धोड़ा देती हैं कि जैसे उसको सहस्र घोंटियाँ बाट रही हों। वह अवाग हो उठता है। उसका जी चाहता है कि वह एक बार जोर से चीख पड़े पर वह चीख नहीं सका।

ठीक समय उसकी जवान ने घोला दे दिया। उसने अपने दोनों हाथों से गला दबा दिया। आकुसता क्रोध भय और घृणा के मारे उसका तमाम बदन पसीना-पसीना हो गया। उससे नीकर तन को नहीं पुकारा गया। वह गिड़ाल हो कर पड़ गया।

उसने उसी समय निश्चय किया कि बल यह कि सभी बातें समाप्त करने जयपुर घला जाएगा। यह धपीर होकर घहलकदमी करने लगा।

\*

\*

\*

४४

गुलाब अपने दोनों बच्चों को चाकलेट दे रही थी। बच्चे मखल मचल कर अधिक लन का हूठ कर रहे थे। तभी रत्न भागा भागा आ गया। गुलाब ने उसे भी चाकलेट दी। यह किलक कर नाच उठा।

घाँद की मृत्यु के बाद गुलाब सोना के पास ही रह रही थी। यहीं उसके दूसरा बच्चा उमंग हुआ था। कई बार अरविंद ने लिखा भी था कि अथ तम आ जाओ, तुम्हारे बिना मुझ घन नहीं पडता। तब उत्तर में गुलाब न मजारु करते हुए लिखा था, मरे बिना आप को बल नहीं पडना यह सब कहन की बातें हैं। मुफ्यमत्री आप आप हैं और हम हम हैं। आप पूयसुरत दिलफर और बड बातूनी हैं किर भला । घाद में उसने गम्भीर हो कर लिखा था कि घाँद भैया की मृत्यु के पन्घानु सोना यहन बड़ी उवास और घिन्तित रहती हैं। न डग से प्यती हैं और न डग से पहनती हैं। एसा मालूम होना है कि दोमक लगी लकड़ी की तरह वह खोबली होती जा रही हैं। और एक दिन बिना किसी से कुछ बहे पुरान लडहर की तरह गिर पड़ेंगी। अन में उहीं के पास रहूंगी। उनकी भी बड़ी इच्छा है कि मैं उनके पास रहूँ।

पास-पड़ोस की औरता के तिल की सोना और गुलाब का प्रम देख कर बड़ी ठेस लगी। क्योंकि सोना मारवाडिन थी और गुलाब पन्घाविन। प्रांतायता का फलता हुआ जहर।

उन सभी न सोचा था कि सोना और गुलाब कभी भी एक साथ नहीं रह सकतीं। दोनों में कुत्त और बिल्ली वाला मगश घलेगा और वे हस हँस कर समागा देखेंगी। लेकिन सोना और गुलाब का प्यार

क्योंकि उसकी माँ घगालियों को म्लेच्छ समझती थी। बात-बात पर भगड पड़ती थी। अगाँति के उन्माद में उसने अपनी पत्नी को मार डाला और माँ को घायल कर दिया। माँ इस तरह घायल हो गई कि अब वह बच नहीं सकेगी। पुलिस न जब उस घबक का बयान लिया तब उसने एक विक्षिप्त दिमाग वाले की भाँति निगाह हो कर कहा, मैं इनके भगड म तग आ गया था। मेरा सोना और खाना हराम हो गया था। धीरे धीरे मैं उनकी हाथ हाथ मुन कर विद्विष्ट हो गया और एक दिन मैं किसी भावना से प्रेरित हो कर सोचा कि क्यों नहीं इन दोनों को मार कर देखा जाए कि उनके खून में कितना अन्तर है। जो उन दोनों का आपस में मिलन नहीं देता? सोना घिसलित स्वर में बोली—

और एक गुलाब तुम हो जो मुझ अपनी माँ से अधिक प्यार करता हो चाहती हो सम्मान करती हो। मैं बहुत तबदीर वाली हूँ।

मुझ गमिदा न करो जीजी। हमें यह सभी स्वर्ग को मरक घना दन वाले विदाँतों को समाप्त करना पड़ेगा। अर्धदा यह तो बताइए। वह बात को बबलती हुई बोली आप महिमा समाज में काम क्यों नहीं कर लेंगी। सवा की सवा हाँ जाएगी और मन का मन बहल जाएगा।

एमा हो कहेंगी।

तभी निम्न न जावाज हो छावी।

क्या है?

मर रत्न मेरी छुटिया खींचता है।

गुलाब जैसे ही मोचे आइ बस ही चौकन्नी रह गई रत्न घोर मुझे न निम्न को दोनों कोटियों को पकड़ रखा है घोर उन्हें घोड़ की लगाम की भाँति खींच रहे हैं।

गुलाब को देखने ही भट म पुस्तक हाथ में लेकर रटम तग सा ए-टी रट मायन बिल्ली।

गुलाब क होठों पर स्निग्ध मुस्कान नाच उठी।

\*

\*

\*

अपनी बातें समाप्त करके अरविंद विंगित होकर खड़ा। उसके दो अत्यंत मित्रों को कांग्रेस का टिकट नहीं मिला था। जिले के पंच वेक्षक ने उन व्यक्तियों के प्रति मद्र भारोप लगाया था कि वह जातीयता का विपक्षमन करते हैं। कांग्रेस के भावों व सिद्धान्तों की हत्या करके अपना व्यक्तिस्व कायम रख हुए हैं। वास्तव में इनसे जनता एकदम रुष्ट है। पंचवेक्षक न प्रान्त के प्राय सभी कांग्रेसी व्यक्तियों के प्रति यह सिफारिश की कि वे एक दूसरे के प्रति सद्भावना के भावों से प्रकट करते हैं। पंचवेक्षक न कहा कि जब मैं वहाँ पहुँचा तब वे मेरी ओर इस तरह लपक असे मैं उन की खुराक हूँ। लेकिन उनको इस तरह राग होना पड़ा जिस तरह पक हुए अप्राप्य अगूरों के लिए सोमड़ी। पंचवेक्षक न खद के साथ इस बात पर भी प्रकाश डाला कि प्रत्येक म्मीदवार एक दूसरे पर रिश्ततखोरी भ्रष्टाचार सिफारिश, घातक रिश्तहीनता और झेक मेलिंग का आरोप लगाने हैं। यह उनकी सकीएँ ओछी मनोवृत्ति का ज्वलत प्रमाण है।

कुछ भी हो अरविंद व दो साथियों को कांग्रेस का टिकट नहीं। यह उनसे लिए पराजय का घात था। उसके विरोधी दल वाले न अपने-अपने पत्रों में क्या क्या लिखेंगे यह सोच-सोच कर चक्र में डूबा जा रहा था।

अभी-अभी उसका मन अधानक सोच बठना था कि क्या अय उसका रु नहीं हो गया? नहीं अभी पतन कस्ता? उसका आत्म विश्वास टूटा था। उसी उपद्रव-बुन में वह हवाई अड्डे पर जा बठा।

जहाँ उड़ा। काफी जो चुप्पी लेन व साथ ही उसका विभाग की निर्वाचन का नक्का ग्विच उठा। वह एक बार फिर सिद्धले तरह घर घर जाएगा, उनसे थोट की भील माँगगा और सभी म्मीदवारों से अधिक मत प्राप्त करके अपनी साक्षप्रियता को प्रांत में जमा देगा। उसका देवत्व धिरस्यायी हो जाएगा।

एकाएक आकाश में तूफान उठता मखर आया ।

चालक घबरा गया और उसने सबको सावधान रहन का आदेश दे दिया । जहाज में अरविंद और उसका संकटरी ही था । दोनों घबरापन देखते-देखते नीला घासमान काला-पीला हो गया । जहाज कंट्रोल के बाहर होन लगा । अरविंद और उसके संकटरी के चेहरे पील पड़ गए । अरविंद विल्ला रहा था महाजनी जहाज उतारो, जहाज को उतारो कहते कहते उसका गला ही सूख गया ।

मृत्यु स्थितियों भयानक होती है इसकी कल्पना करने के पहले ही जहाज एक पेड़ से टकराया । अरविंद बूढ़ पड़ा और उसका सिर एक चट्टान से टकराकर फट गया ।

जहाज जल कर राख हो गया । हाँ आग बुझ जाने के बाद नर कगल जकर दोल पड़ ।

दूसरे दिन समाचारपत्रों ने मुख्यमंत्री के मरण के समाचार प्रकाश कर दिए । समाचार का मुख्य अंग इस प्रकार का था कि गाँव के सूचना पाते ही अधिकारी घटनास्थल पर पहुँचे और वेहोग को अस्पताल में लाए जहाँ आक्सीजन देने के पहले ही हो गया । मरने के समय उनका पास कोई नहीं था । साग जन्मभूमि को पहुँचाई गई जहाँ आज शाम को हिन्दू ९। उनका दाह संस्कार किया जाएगा ।

अर्थी के जलूस में प्रायः सभी नेता मंत्री एवं दो-तीन मंत्री थे । लगभग सारा शहर अपन देखा रहा था क्योंकि उसने शहर को स्वर्ण-सा बना री भ्रष्टाचार स्थितियों और घरेलूहीनता के क हृषा था । लोगों एवं नेताओं ने सबसे अच्छे शह भेंट की और सभी ने एक स्वर में कहा 'प्रातः दानित-पीड़ित समस्त जनता की सेवा करत क हा यह पग देवता घता गया ।

